

NOT FOR SALE

जून 2009

शुक्र पूर्णिमा विशेषांक

मूल्य : 24/-

सत्ततं तत्-स्याद्

विज्ञान

श्रीवरण, श्रीव और मनोकामना
जगतारा, महावारा सिद्धि
बाल बन्धन कंभंड
बन्ध गुण के साधने

तांत्रोज्ज्ञ गणपति साधना

जय जय जय निखिलं
निझरि प्रेम सदगुरु का





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

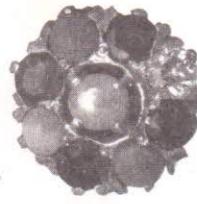
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त

नवरात्रि सिद्ध सूक्त

नवरात्रि सुद्धिरात्रि



- ➡ क्या आपके जीवन में निरन्तर बाधाएं आ रही हैं?
- ➡ क्या आपको मान-हानि, बीमारी का भय हर समय रहता है?
- ➡ क्या आपको किसी ग्रह की विपरीत दशा चल रही है?
- ➡ क्या आपको शानि की साढ़े साती चल रही है?

ये सब ग्रह बाधा के लक्षण हैं और अनिष्टकारक ग्रहों को शांत करना और शुभ ग्रहों का उत्थान आवश्यक है। इस हेतु एक ही उपाय है - नवरात्रि मुद्रिका

वर्तमान जीवन में क्यों समस्याएं इतनी अधिक बढ़ रही हैं? आपस में स्नेह की कमी, धोखा-धड़ी, रोगों में वृद्धि, मानसिक अशांति इत्यादि घटनाएं तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अंग ही बन गई हैं, इसका क्या कारण है? ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि है लेकिन समस्याएं सुलझने के बजाय उलझती ही जाती हैं।

इन सबका मूल कारण ग्रहों की उपेक्षा ही है। हमने उस आधार भूत तथ्य को ही छोड़ दिया है, जो कि जीवन की गति को निर्धारित करता है, पल-पल जिन ग्रहों का प्रभाव उसके जीवन की घटनाओं, उसके मन, उसके विचारों पर पड़ता है, वातावरण जिस प्रकार से ग्रहों से प्रभावित होता है, उसे ही छोड़ दिया है।

प्रत्येक ग्रह के दो स्वरूप होते हैं, प्रथम स्वरूप ग्रह जो दिखाई देता है, और दूसरा उस ग्रह के देवता का स्वरूप, ये दोनों किसी भी रूप में अलग-अलग नहीं हैं। यदि प्रति रूप में उस ग्रह-देवता के सम्बंध में पूजा-पाठ, जप-साधना सम्पन्न की जाए और इस भाव से की जाए कि अमुक ग्रह मुझ पर पूर्ण रूप से प्रसन्न हो कर मुझे आशीर्वाद प्रदान करे, तो निश्चित रूप से उसका विपरीत प्रभाव शान्त हो जाता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे पूरे शास्त्रों में यह उक्ति 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' प्रसिद्ध है, अर्थात् जो कुछ पिण्ड अर्थात् शरीर में है, वही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है वही शरीर में भी है, इससे अधिक ग्रहों तथा शरीर का परस्पर विवेचन क्या हो सकता है?

प्रत्येक राशि का स्वामी कोई न कोई ग्रह होता है। जब कोई ग्रह विपरीत प्रभाव उत्पन्न करता है, तब मानव को कष्ट, पीड़ा और दुःख भोगना पड़ता है। जीवन के सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि इन्हीं ग्रहों पर आधारित होते हैं।

नवग्रहों के प्रभाव के फलस्वरूप रावण को पूरे कुटुम्ब सहित समाप्त होना पड़ा, कंस का वध हुआ, राम को वन-वन भटकने के लिए मजबूर होना

आनो प्रदाः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उत्तरि, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

शिव प्रकाश

॥ॐ एहम् त्रिवाय नाथयथाय शुभ्र्यो वद्मः॥



शिव पादे अगूब



सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

स्तम्भ

शिष्य धर्म

गुरुवाणी

मैं समय हूँ

नक्षत्रों की वाणी

वराहमिहिर

इस मास जोधपुर में

एक दृष्टि में

वर्ष 29	अंक 06
दि 2009	पृष्ठ 88



साधना

श्रावण के चार सोमवार

साधनाएं 32

तांत्रोक्त तारा साधना 40

अमृतत्व साधना 48

चन्द्र ग्रहण की

विशिष्ट साधनाएं 59

महागणपति पूजन

- साधना विधान 65

अद्भुत गणपति

साधनाएं 70

काल बन्धन साधना 73

Dakshinavarti Shankh

Sadhana 82

Kaamdev Rati

Sadhana 83



कवच

शिव अमोघ कवच

77



विशेष

जिनके पास बैठने से ही

पवित्रता का बोध... 23

अध्यात्मक और

सकारात्मक सोच 26

आदिदेव महादेव 27

शांभवी तांत्रिक विद्या 30

भगवती तारा 37

तीव्र तांत्रोक्त देवी 37

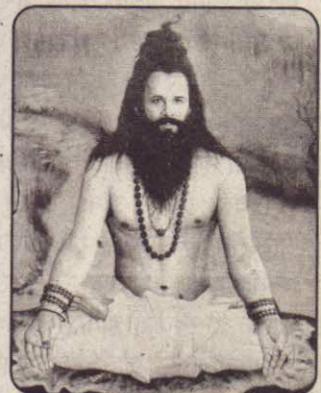
यह शिष्य पूर्णिमा है 46

साधना के विघ्न और

निराकरण 50

चन्द्र ग्रहण 55

तांत्रिक मंत्र 75



प्रकाशक एवं स्वामित्व

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

द्वारा

सुदर्शन प्रिन्टस

487/505, पीरागढ़ी,

रोहतक रोड, नई दिल्ली-87

से मुद्रित तथा

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट

कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 24/-

वार्षिक: 258/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुर्तक करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धुमकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, परं फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, परं यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता—असफलता, हानि—लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

★ प्रार्थना ★

शास्त्रीयाणां दयानां मुदित गुणवतां मूर्तिमन्तस्वरूपः,
कै वल्येनाभिपीतः धृतिमतियुतः वेदवेदान्त वेदः ।
दैयासिक्यं कलौथं परमिदमदः कै तुमके नात्यगर्भः,
काम्यः कल्पदमोऽयं निखिल गुरुवरः देवदूताग्रणयः ॥

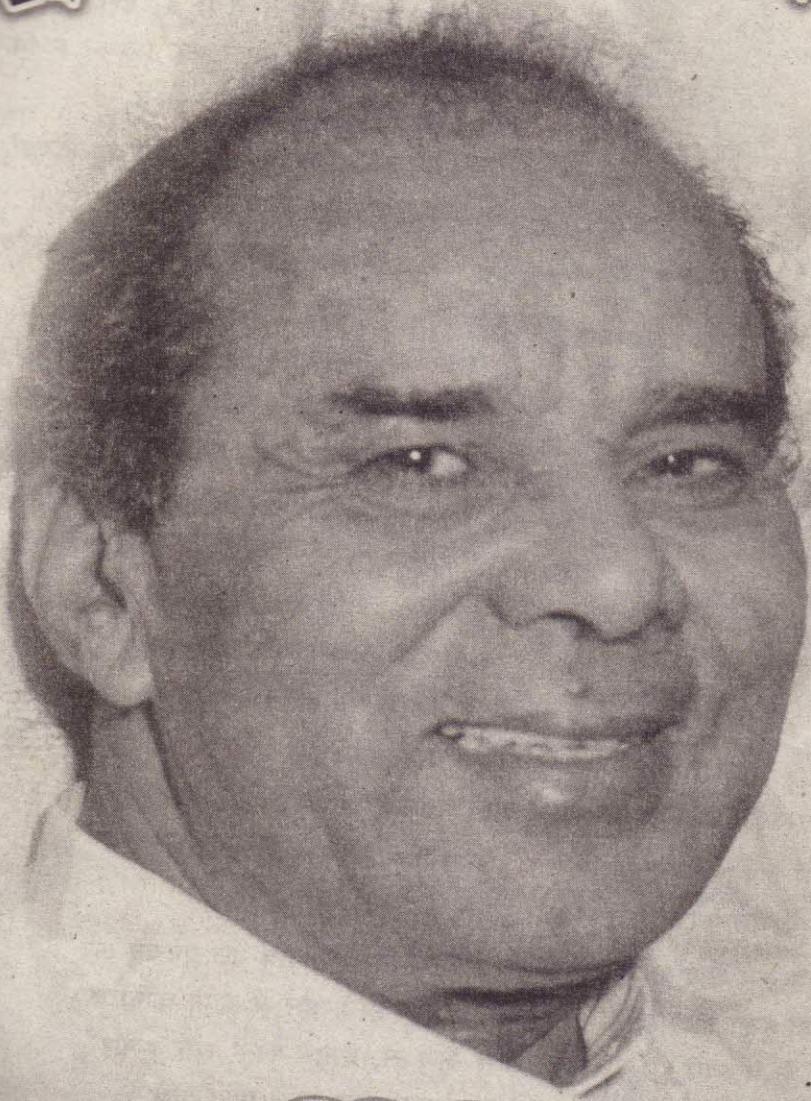
दया, दक्षिण्यादि शास्त्रीय गुणों के मूर्तिमन्त स्वरूप, वेद तथा उपनिषदों द्वारा प्रतिपाद्य कैवल्य मूर्ति, पुराणों में वर्णित अनन्त दिव्य कलाओं को अपने भीतर समाहित किये हुए, साक्षात् देवदूत गुरुदेव निखिल, शिष्यों के लिए सदैव कल्पवृक्ष के सदृश काम्य एवं कामनीय हैं।

☆ जो जैसा होता है उसे वैसा ही दिखाई देता है ☆

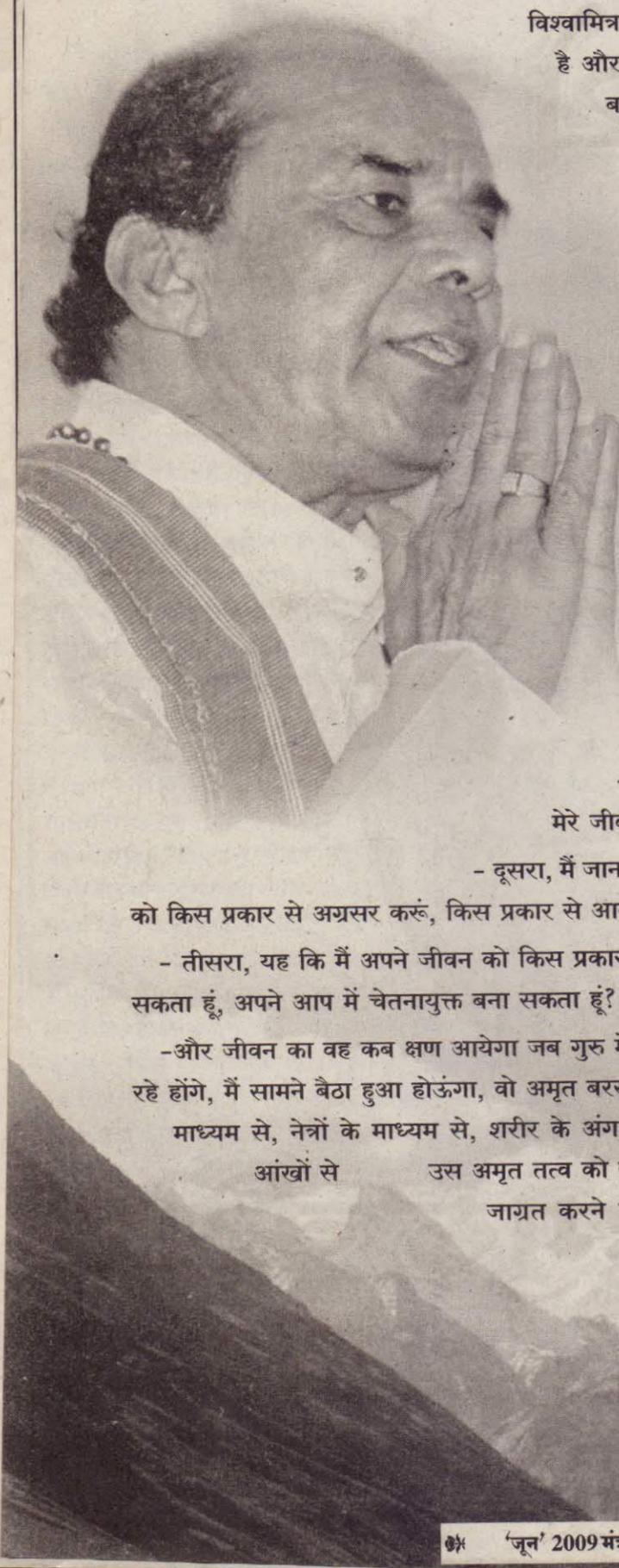
एक बार गौतम बुद्ध से एक भक्त ने प्रश्न किया कई दिनों से मेरे मन में प्रश्न उठ रहा है कि चन्द्रमा सुंदर होते हुए भी उसमें कलंक क्यों रहता है? उसी प्रकार सबको आलोकित करने वाले दीपक के नीचे अंधेरा क्यों रहता है? बुद्धदेव ने मुस्कराते हुए कहा - तुम्हारे मन में ये प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि चन्द्रमा और दीपक गुणवान् होते हुए भी उनमें ऐसा विरोधाभास क्यों है? परन्तु एक बात तुम्हारे ध्यान में नहीं आई।

उनकी पूरी बात सुनने से पहले ही शिष्य ने पूछा - कौन-सी बात नहीं आई? तथागत बोले - क्या तुमने कभी यह सोचा है कि लोग चन्द्रमा के गुणों का बखान करते हैं, सर्वदा उसकी शीतलता और सौन्दर्य की प्रशंसा करते हैं, परन्तु तुम्हारे मन में उसकी प्रशंसा की जगह उसके दोषों का ही ख्याल क्यों आता है? इसी तरह जहाँ दुनियाभर के लोग दीपक के प्रकाश से लाभान्वित होने के कारण उसकी प्रशंसा करते हैं, वहाँ तुम्हें उसके नीचे का अंधेरा ही क्यों दिखाई देता है? इसका कारण मैं बताता हूँ - इस प्रकार बुद्धदेव ने अपना कथन जारी रखा - ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जो जैसा होता है, उसे वैसा ही दिखाई देता है। हमारे मन में जैसी भावनाएं पनपाती हैं, हम उन्हीं के वशीभूत हो जाते हैं। इसीलिए कोई व्यक्ति कैसा है, इसे जानने के लिए हमें अपने मन को दर्पण बनाना चाहिए। उसे दर्पण की भाँति स्वच्छ करने पर ही हमें वास्तविकता ज्ञात होगी। हमारे विचारों की छाया चित्त को शुद्ध नहीं होने देती। ज्यों ही मन के विचार शांत हो जाते हैं और चित्त शून्य हो जाता है, हमारी दुर्भावना सद्भावना में बदल जाती है और हमें वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है। किसी भी व्यक्ति में हमें जो दिखाई देता है वह वही होता है जो हम देखना चाहते हैं। हम अपनी ही दृष्टि से दूसरे का आकलन करते हैं।

शिर्ष पाठे अवृत



सदगुरु की
असीम छंब में



विश्वामित्र ने जब अपने गुरु से पूछा कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है और मैं किस प्रकार उसे प्राप्त कर सकता हूं, तो ब्रह्मा ने बताया कि जीवन के दो ही पक्ष हैं - भोग और योग। योग द्वारा जिस प्रकार जीवन को पूर्णता प्रदान की जा सकती है, उसी भाँति भोग द्वारा भी ऐसा सम्भव है। दोनों रास्ते क्या हैं, इसी का उद्घाटन सद्गुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में किया था। उनकी चिर-परिचित शैली -

न्त्रो व नित्यं मधुरं सदैव, दिव्यौ वतां दै
परिपूर्ण रूपं।

नित्यं वदान्य वरितं सहितं सदैव, गुरुर्वं
प्रणम्यं त्वमेवं प्रणम्यं।

विश्वामित्र जैसे तेजस्वी और क्रान्तिकारी ऋषि ने इस श्लोक में अपने तथ्य को स्पष्ट करते हुए स्वयं अपने गुरु के सामने प्रश्न किया कि मेरे जीवन में केवल चार चिन्तन हैं।

- मैं यह जानना चाहता हूं कि
मेरे जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य क्या है?

- दूसरा, मैं जानना चाहता हूं कि मैं अपने जीवन को किस प्रकार से अग्रसर करूं, किस प्रकार से आगे बढ़ाऊं?

- तीसरा, यह कि मैं अपने जीवन को किस प्रकार से दिव्यता से ओत-प्रोत कर सकता हूं, अपने आप में चेतनायुक्त बना सकता हूं?

- और जीवन का वह कब क्षण आयेगा जब गुरु मेरे सामने होंगे, जब गुरु प्रवचन कर रहे होंगे, मैं सामने बैठा हुआ होऊंगा, वो अमृत बरसाते हुए होंगे और मैं अपने कानों के माध्यम से, नेत्रों के माध्यम से, शरीर के अंग-अंग से, हजार कानों और हजार आंखों से उस अमृत तत्व को समेटता हुआ अपने प्राण तत्व को जाग्रत करने की ओर अग्रसर हो सकूंगा? मैं

केवल उन विधियों, उन विचारों, उन चिन्तनों को जानना चाहता हूँ।

जब विश्वामित्र ने गुरु से पूछा कि मेरे जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य क्या है, तो उन्होंने कहा कि जीवन दो प्रकार से जिया जा सकता है - एक जीवन भोग के माध्यम से, एक जीवन योग के माध्यम से। दो ही रास्ते हैं, तीसरा रास्ता हो ही नहीं सकता। जीवन का अमर एक पक्ष योग है, तो भोग भी दूसरा पक्ष है।

किसी ने यह प्रश्न किया नहीं, विश्वामित्र ने किया,
खड़े होकर पूछा कि मेरे जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य
क्या है? क्या भोग लक्ष्य है और अगर है, तो फिर
पूर्ण भोग के साथ जीवन व्यतीत करूँ?

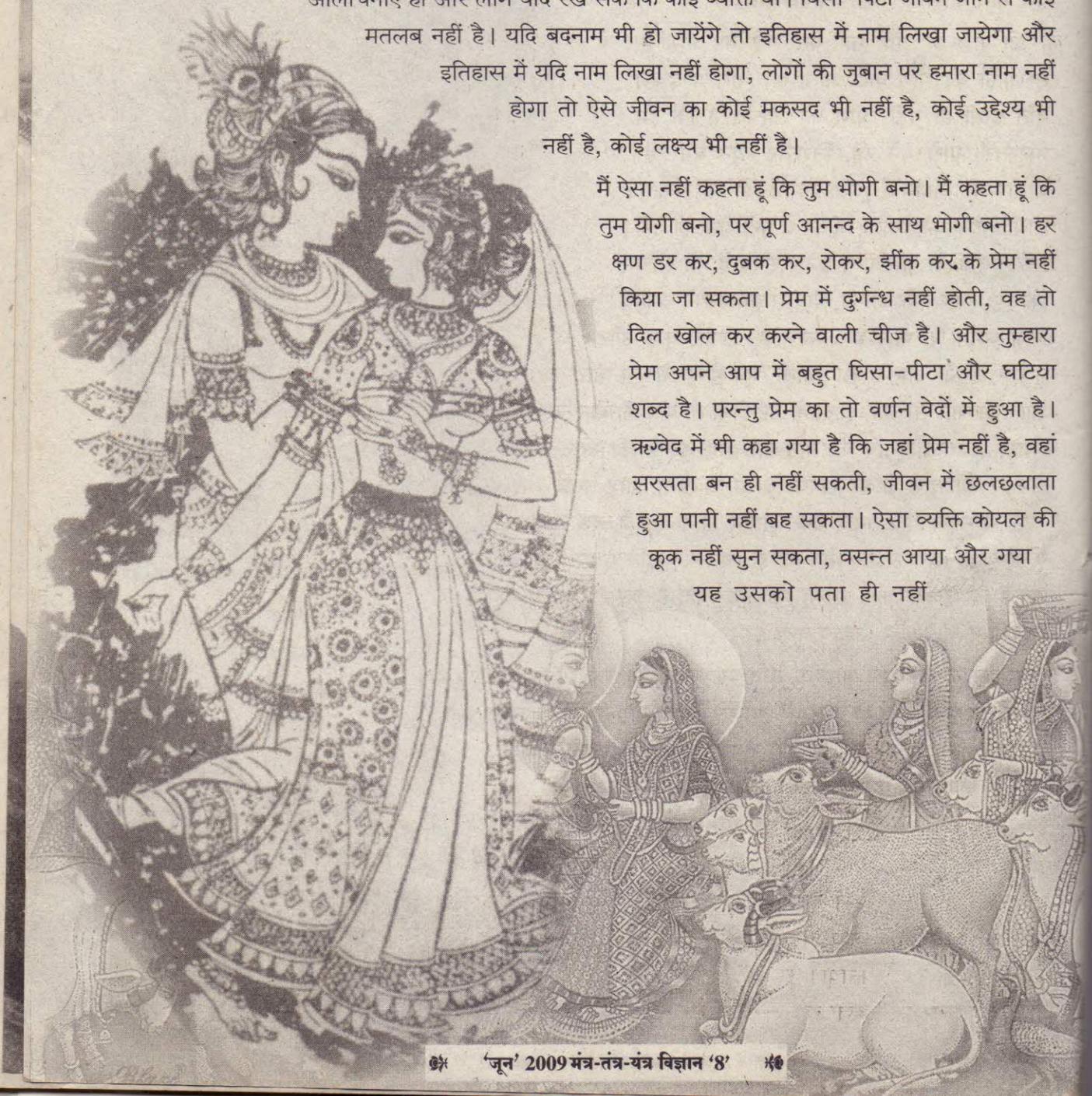
जो कुछ हम प्राप्त नहीं कर सकें वह भोग है,
तृष्णाओं को भोग कहा जाता है। भोग में इच्छा
पूर्ति होती ही नहीं, भोग का तात्पर्य है कि हम
निरन्तर प्यासे बने रहें, निरन्तर न्यून बने रहें।
भोगी व्यक्ति जीवन में पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता।
भोगी व्यक्ति की इच्छाएं जीवन में पूरी होती ही नहीं।
जिस व्यक्ति के पास पांच हजार रुपये हैं, वो सोचेगा
कि दस हजार होने चाहिये, पच्चीस हजार होने चाहिये।
जिस व्यक्ति के पास धन पर्याप्त है, उसकी कुछ और
तृष्णाएं होंगी, और इच्छाएं होंगी, पुत्र होगा तो पुत्र की
शादी की बात सोचेगा, शादी हो गई होगी तो पौत्र की बात
सोचेगा, अपने बुढ़ापे की बात सोचेगा, बुढ़ापे की ओर
अग्रसर होते हुए भी हर समय चिन्ता में रहेगा, मात्र तनाव
ग्रस्त ही रहेगा। जो तनाव ग्रस्त जीवन जी सकता है, वह भोगी
है और यह सारा संसार भोग की ही चिन्तन पद्धति में इसलिए बढ़
रहा है कि उसको कोई रास्ता नहीं मिल रहा है, उसको मालूम नहीं है
कि जीवन का लक्ष्य, उद्देश्य क्या है?

लेकिन तुम तो पूर्ण भोग के साथ जीवन व्यतीत कर भी नहीं पा रहे हो।
अगर तुम पूर्ण भोगी हो, तब भी तुम मेरे शिष्य बन सकते हो अगर पूर्ण
भोगी बन सको तो! वह भी नहीं बन सकते तुम! पिछले पच्चीस
हजार वर्ष में केवल कृष्ण ही ऐसा व्यक्तित्व हुआ जो
अपने आप में पूर्ण भोगी बना।

यह नहीं सोचा जाता कि लोग क्या कहेंगे, क्या नहीं कहेंगे, क्योंकि लोग तो कहेंगे ही। आप कुछ करोगे तब भी कहेंगे, कुछ नहीं करोगे तब भी कहेंगे। तुम्हारा समाज तुम्हें गालियां देने के अलावा कुछ कर भी नहीं सकता, प्रशंसा नहीं कर सकता तुम्हारी। समाज का निर्माण ही इसलिये हुआ है। तुम जिस समाज में जी रहे हो, उस समाज में आलोचनाओं के अलावा कुछ है ही नहीं। उन आलोचनाओं का जहर जितना मैंने पिया है, शायद उसका हजारवां हिस्सा भी तुमने नहीं पिया है। मैंने हर क्षण, हर पल उन आलोचनाओं को सहन किया है।

कृष्ण ने सोचा कि अगर भोग में जीवन व्यतीत करना है तो पूर्णता के साथ व्यतीत करना है। उसमें इफ एण्ड बट नहीं होता, उसमें सोचना-विचारना नहीं होता और जब आलोचनाएं होनी ही हैं, तो इतिहास में पूरी ढंग से आलोचनाएं हों और लोग याद रख सकें कि कोई व्यक्ति था। घिसा-पिटा जीवन जीने से कोई मतलब नहीं है। यदि बदनाम भी हो जायेंगे तो इतिहास में नाम लिखा जायेगा और इतिहास में यदि नाम लिखा नहीं होगा, लोगों की जुबान पर हमारा नाम नहीं होगा तो ऐसे जीवन का कोई मकसद भी नहीं है, कोई उद्देश्य भी नहीं है, कोई लक्ष्य भी नहीं है।

मैं ऐसा नहीं कहता हूँ कि तुम भोगी बनो। मैं कहता हूँ कि तुम योगी बनो, पर पूर्ण आनन्द के साथ भोगी बनो। हर क्षण डर कर, दुबक कर, रोकर, झींक कर के प्रेम नहीं किया जा सकता। प्रेम में दुर्गन्ध नहीं होती, वह तो दिल खोल कर करने वाली चीज है। और तुम्हारा प्रेम अपने आप में बहुत घिसा-पीटा और घटिया शब्द है। परन्तु प्रेम का तो वर्णन वेदों में हुआ है। ऋग्वेद में भी कहा गया है कि जहां प्रेम नहीं है, वहां सरसता बन ही नहीं सकती, जीवन में छलछलाता हुआ पानी नहीं बह सकता। ऐसा व्यक्ति को यल की कूक नहीं सुन सकता, वसन्त आया और गया यह उसको पता ही नहीं



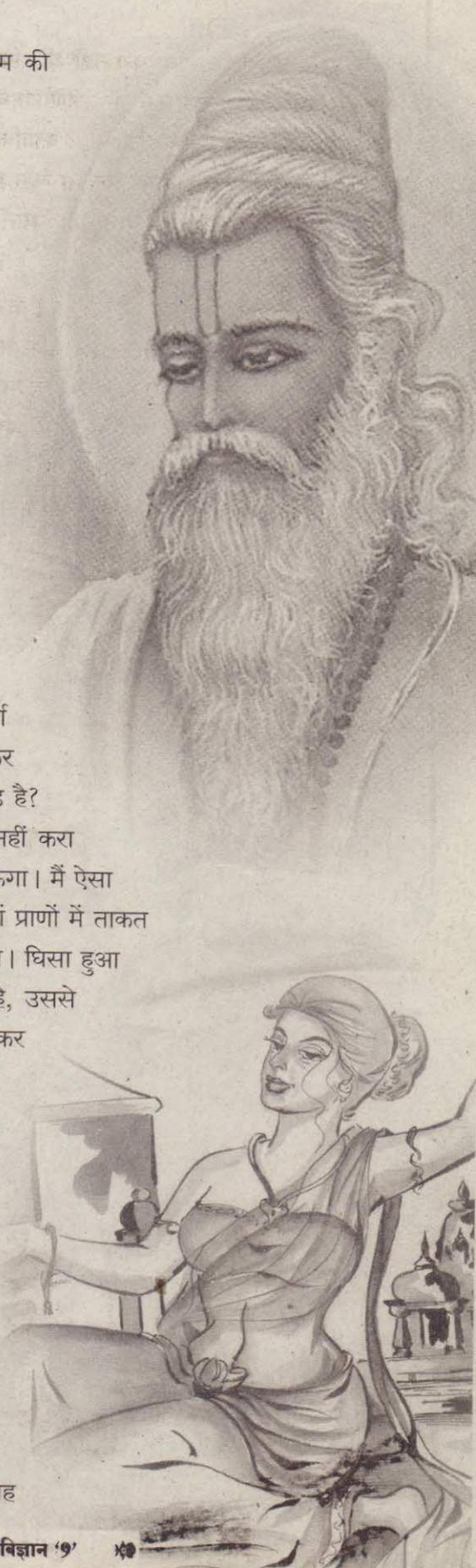
पढ़ेगा और हजारों व्यक्ति ऐसा जीवन जी लेते हैं, जो प्रेम की परिभाषा को नहीं समझते, मात्र वासना ही समझते हैं।

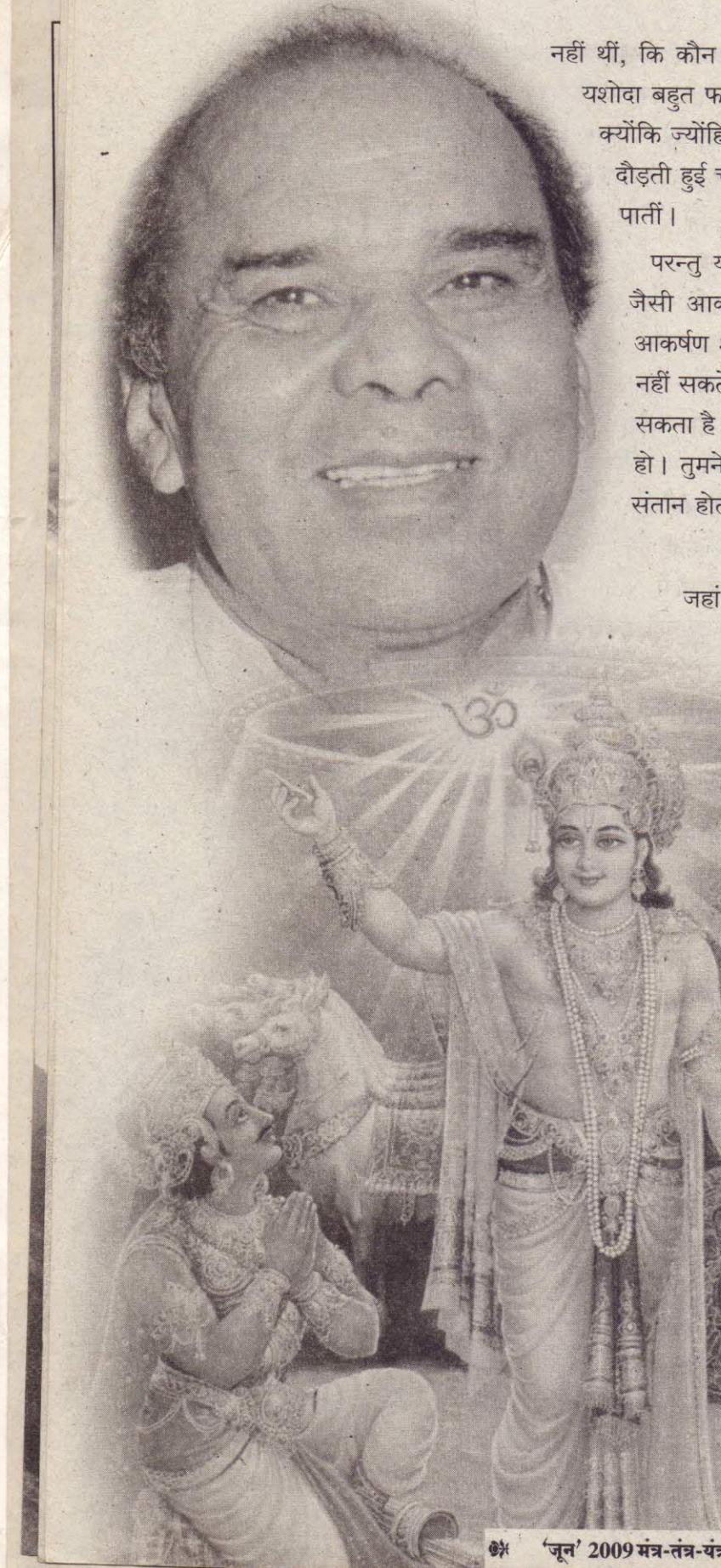
अगर हर क्षण तुम दुबक कर, डरते हुए चल रहे हो तो भोग में पूर्णता के साथ नहीं उत्तर सकते। अगर नदी ऐसा सोचे कि लोग मुझे बहते हुए देखेंगे और मैं रुक जाऊं तो वह कभी समुद्र से नहीं मिल सकती, नदी इस बात की परवाह नहीं करती कि मार्ग में बांध है कि पत्थर है। उसे तो बस यह होता कि मुझे पहुंचना है और समुद्र में मिल जाना है। इसलिये नदी सही अर्थों में प्रेमिका है। नदी का छलछलाता हुआ पानी जीवन है, तालाब का पानी तो सड़ जाता है, उसमें गन्दगी और कीचड़ हो जायेगा। तुम्हारा जीवन भी एक जगह रुका हुआ है, एक परिवेश में - तुम हो, तुम्हारी पत्नी, दो लड़के, दो लड़कियाँ हैं, भाई है, बहन है, बस इसी के ईर्द-गिर्द धूम रहे हो। पड़ोस में कोई जी रहा है, पड़ोस में कोई मर रहा है, तुम्हें चिन्ता नहीं हैं तुमने और तुम्हारे समाज ने जीवन देखा नहीं।

परन्तु विश्वामित्र ऐसा पहला व्यक्तित्व था, जिसने पूर्ण संन्यास लेते हुए भी विवाह किया। लोगों ने कहा, ये क्या कर रहे हो? उसने कहा कि क्या तकलीफ है? इसमें क्या गडबड है? लोगों ने कहा कि तुम इस प्रकार से अप्सराओं को नृत्य नहीं कर सकते। विश्वामित्र ने कहा कि मैं जरूर मेनका से नृत्य कराऊंगा। मैं ऐसा करूंगा, क्योंकि जहां विद्रोह नहीं है, जहां चैलेंज नहीं है, जहां प्राणों में ताकत नहीं है, क्षमता नहीं है, वह जीवन में कुछ कर भी नहीं सकता। घिसा हुआ व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। जो रो रहा है, जो मर रहा है, उससे उम्मीद की भी क्या जा सकती है? मुर्दा व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

जो इस रोगी समाज के बीच में खड़ा होकर विद्रोह कर सकता है, वह मेरा शिष्य बन सकता है। जो खड़ा हो सकता है, चैलेंज के साथ, क्षमता के साथ, जो बगावत कर सकता है, वह मेरा शिष्य बन सकता है, रोगी व्यक्ति मेरा शिष्य नहीं बन सकता।

विश्वामित्र ने जीवन में हर क्षण चैलेंज उठाया। जो समाज ने कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिये, उसने कहा कि मैं ऐसा करके ही दिखाऊंगा। कृष्ण ने भी विश्वामित्र के दो हजार साल बाद वही रुप अपनाया। कृष्ण बिल्कुल मस्ती के साथ यमुना के किनारे बंसी बजा रहा था। उसे इस बात की परवाह





नहीं थीं, कि कौन क्या कर हा है। घर जाता तो नन्द गालियां देते, यशोदा बहुत फटकारती कि तू ये क्या कर रहा है? ये ठीक नहीं हैं क्योंकि ज्योंहि कृष्ण बांसुरी बजाता तो गांव की लड़कियां, औरतें दौड़ती हुई चली जातीं, उन्हें होश ही नहीं रहता, वे सक ही नहीं पातीं।

परन्तु यदि तुम भोगमय हुए हो क्या तुम्हारे अन्दर कृष्ण जैसी आकर्षण क्षमता आ सकी है? नहीं आ सकती! उस आकर्षण शक्ति के लिये भी प्राण तत्व चाहिये। भोगी तुम बन नहीं सकते, क्योंकि जिसके प्राण तत्व जाग्रत है, वही प्रेम कर सकता है। तुम प्रेम कर ही नहीं सकते, तुम वासना कर सकते हो। तुमने वासनाएं की हैं, और वासनाओं का फल केवल संतान होती हैं। इसलिए भर्तृहरि ने कहा है -

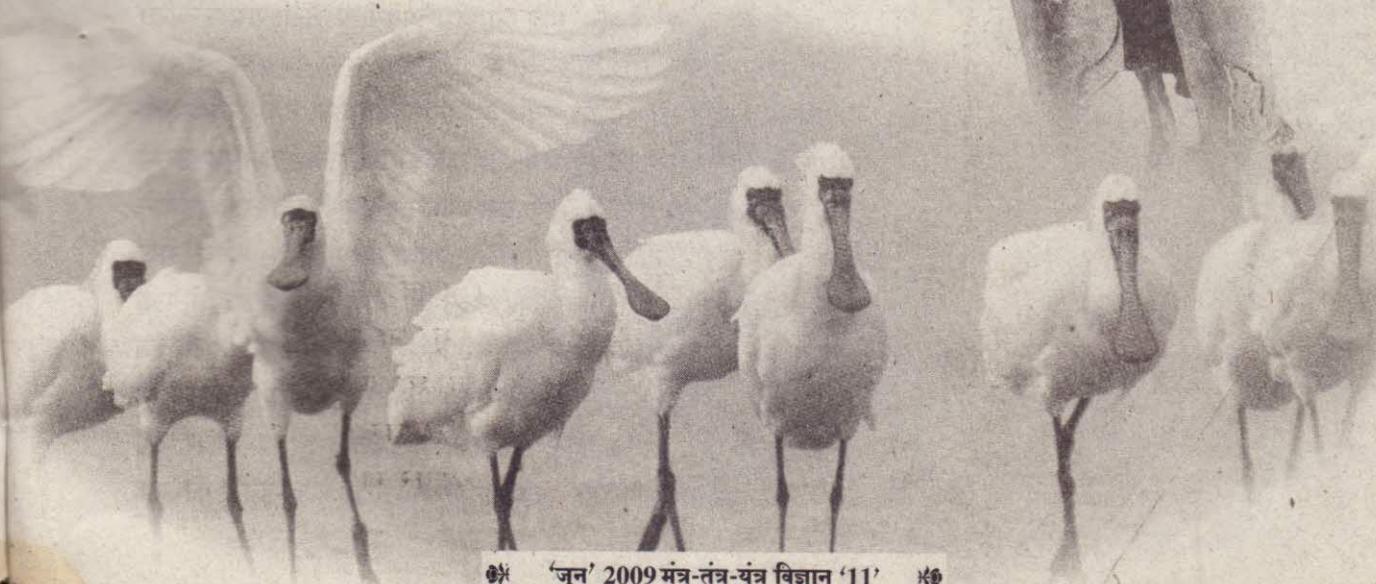
'भोगे रोग भयं'

जहां भोग है वहां रोग है ही। भोग से रोग की उत्पत्ति होती है। परन्तु भोग तो अपने आप में आनन्ददायक चीज है। हम प्रत्येक क्षण का भोग करें, प्रत्येक वस्तु का भोग करें और संसार में प्रभु ने इतना अधिक भोग बिखेर दिया है, कि हम उसको समझ ही नहीं पा रहे हैं। हमने भोग के चिन्तन को घटिया शब्दों में बांध दिया है।

मैं तो तुम्हें यह कह रहा हूं कि भोग करें तो पूर्णता के साथ करें, प्रेम करें तो पूर्णता के साथ करें। कृष्ण घबराया नहीं, उसने फिर किसी प्रकार का कोई भय ही नहीं रखा और जब गोपीयों के पास से निकल कर मथुरा चला गया तो उसने कुछ जीवन का आधार है। कृष्ण का जीवन भोगमय कहा जा सकता है, मगर भोगमय होते हुए भी कृष्ण को योगेश्वर कहा गया। अगर तुम्हारा प्राण तत्व जाग्रत है, तो तुम बिलकुल विरक्त होकर भोग का आनन्द ले सकते हो।

सुबह उठें कभी, देखिये प्रकृति कितनी सुन्दर हवा बिखेरती है! अगर आप सुबह उठें तो साढ़े पांच, छः बजे तो पूर्व की ओर से बिल्कुल लाल गोला बाहर निकल रहा होता है, आकाश बहुत लालिमायुक्त हो जाता है, क्षितिज पर लालिमा बिखर जाती है। भोग तो बिखेरा प्रभु ने, आपने उस भोग को देखा नहीं, कोशिश नहीं की। आपके पास से आपका बच्चा किलकता हुआ जा रहा है, आपने उसे गोदी में उठाकर कभी उड़ाना भी नहीं, क्योंकि आपको तो ऑफिस जाने की जल्दी है। वह भी भोग था, परन्तु आपने जीवन के चिन्तन को समझा ही नहीं। इसलिये आप अपने को भोगी कह भी नहीं सकते। आप रोगी जरूर हैं। रोगी इसलिये हैं, कि आप डरते हुए काम कर रहे हैं।

और विश्वामित्र यही पूछ रहा है कि जीवन का मर्म क्या है, जीवन को व्यतीत कैसे करना है? तो उनके गुरु ने, ब्रह्मा ने यह नहीं कहा कि तुम भोग नहीं करो। उन्होंने तो कहा कि तुम भोगमय बनो, तुम भोग करो, मगर दृष्टा बन कर करो, उसमें लिप्त नहीं हो जाओ। एक तरफ किनारे खड़े होकर देखो, जो प्रकृति ने भोग बिखेरा है उसका आनन्द लो, जो पत्तों की सरसराहट है, उसके संगीत को भी तुम सुनो, कभी नदी के किनारे बैठ कर उसकी लहरें जो गान सुनाती हैं, उस संगीत को भी कभी सुनो, कभी गुरु के पास बैठकर गुरु जो मौन संगीत बोलता है, उसको सुनने की कोशिश करो। वह तुम नहीं करते हो। वह तुम इसलिये नहीं कर सकते, कि तुम्हें भोग की परिभाषा ज्ञात नहीं है। तुमने, और तुमने नहीं, तुम्हारे समाज ने भोग को वासना के साथ जोड़ दिया है। और तुम उस समाज के अंग हो, जो स्वयं ही रोगी है। रोगी इसलिये है कि मां हर क्षण बेटी को दबोचे रहती है, कि तू हंस नहीं सकती, तू घर के बाहर नहीं जा सकती, तू पराये पुस्तक से बात नहीं कर सकती, इधर नहीं जा सकती, उधर नहीं जा सकती। और शादी हुई तो पति रोक देगा, सास रोक देगी कि ऐसा नहीं कर सकती, वैसा नहीं कर सकती।



जो कुछ तुम भोग की बात समझ रहे हो, वह मैं भोग चुका हूं। मैंने प्रेम की पंरिभाषा जानी है, मैं प्रेम करने की कला जानता हूं। मैं प्रेम दे भी सकता हूं, ले भी सकता हूं। मैंने भ्रमर का संगीत सुना है, मैंने उगते हुए सूर्य को देखा है, मैंने सूर्य से बात करने की कोशिश की है, मैंने तितली के नर्तन को देखा है, मैंने लहराती हुई हवा का अनुभव किया है, मैंने हिमालय के बर्फ में भी आनन्द के स्रोत को ढूँढ़ा है। मैंने जीवन को बहुत निकटा से देखा है - उस संन्यास को भी, इस गृहस्थ को भी इसलिये जीवन को भोगमय भी जियें, तो प्राणों के साथ जियें, शरीर के साथ नहीं, क्योंकि प्रेम शरीर के साथ नहीं हो सकता, प्राणों के साथ प्रेम हो सकता है।

इसलिये विश्वामित्र ने पूछा कि जीवन का उद्देश्य क्या है? तो योगमय बनें या भोगमय बनें? परन्तु अगर भोगमय बनें तो दृष्टा बनकर। हम किनारे खड़े होकर देखें, हम लिस नहीं हो जायें। ज्योंही शहद की मक्खी शहद में भीग जाती है, पंख उसके भीग जाते हैं, वह मर जाती है। तो उसमें लिस होने की जखरत नहीं है।

तुम्हारी पत्नी है, पुत्र है, अपना काम कर रहे हैं, तुम जीवन को देख रहे हो, दृष्टा बन कर देख रहे हो। कृष्ण यही कह रहे हैं कि अर्जुन! तू उसमें लिस मत हो, तुम जब यह सोचते हो कि भीष्म तुम्हारा दादा है, तो तुम गलती कर रहे हो। अगर तुम यह सोचोगे कि दादा है, तुम दृष्टा न बन कर लिस हो जाओगे और युद्ध नहीं कर पाओगे, तुम युद्ध में विजय प्राप्त नहीं कर पाओगे। तू यह मत सोच कि यह गुरु है, तू यह सोच कि यह द्रोण है, यह कृपाचार्य है। तुझे तो बस लड़ना है, क्योंकि विजय प्राप्त करनी है।

इसलिये ब्रह्मा ने विश्वामित्र को कहा कि तू भोग तो कर लेकिन दृष्टा बन कर, प्रकृति के साथ प्रेम कर, बहती हवा के साथ प्रेम कर, अपने प्राणों के साथ प्रेम कर, प्रेम करने की कला सीख। मैं बैठा हुआ पत्तों की सरसराहट को सुन रहा हूं, उसके गायन को सुन रहा हूं। आंख बंद करके भी मैं गायन को सुन सकता हूं और जब तुम अपने प्राणों में उतरोगे, तो तुम्हें देवताओं का संगीत अपने आप सुनाई देगा। वह संगीत भी सुन सकते हैं। कृष्ण ने कहा कि मैं जीवन को प्रेम से संगीतमय करना सिखाऊंगा।

और कृष्ण जैसा व्यक्ति यदि श्रीमद्भगवद्गीता जैसा ग्रंथ उच्चरित कर सकता है, तो निश्चय ही वह अत्यन्त विद्वान होगा। श्रीमद्भगवद्गीता - अपने स्वयं के जीवन की कथा है। 'श्रीमद्' का मतलब है कि मेरा जीवन क्या है, यह समझने की कला है उसमें और 'भगवद्' का तात्पर्य है कि इस जीवन को पूर्ण तत्व तक पहुंचाने का चिन्तन और क्रिया क्या है। और गीता का मतलब है गेय, गाई हुई चीज, संगीतमय। गीता कोई पढ़ने की चीज नहीं है, वह तो एक गुंजरण है, गाने की चीज है, और गाने का तात्पर्य यह नहीं है कि हारमोनियम लेकर गायें। श्रीमद्भगवद्गीता का तात्पर्य यह नहीं है कि वह जो एक श्लोक है - 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे...' केवल बस वही है। ऐसा भी नहीं कि वह एक इतिहास है, वह तो जीवन की एक

चेतना है, संगीत है।

कृष्ण ने स्पष्ट कहा कि - 'यदा यदा हि धर्मस्य जलानिर्भवति भारत! अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदात्मानं सूजाम्यहम्।' जब-जब भी धर्म की हानि होगी - धर्म का तात्पर्य हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई, यह नहीं था, उस समय यह था ही नहीं, उस समय या तो शैव थे या वैष्णव थे। विष्णु को मानने वाले थे या शिव को मानने वाले थे। धर्म की जलानि का मतलब था, कि जहां-जहां भी अज्ञान आयेगा, जहां-जहां भौतिकता छा जायेगी, जब व्यक्ति में धड़कन खत्म हो जायेगी, जब व्यक्ति मुर्दा बन कर चलने लग जायेगा... और धृतराष्ट्र बिल्कुल मुर्दा बनकर ही चल रहा था। उसे हर क्षण चिन्ता थी कि मैं अपने बेटे को राजगद्दी कैसे दूँ? दुर्योधन मुर्दा बना चल रहा था कि मुझे जिन्दा रहना है और बस राजगद्दी पर बैठना है और महाभारत इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक व्यक्ति मुर्दे की तरह चल रहा था, चेतना नहीं थी, विदुर में थी, परन्तु भीष्म में नहीं थी, द्रोण में नहीं थी, कृपाचार्य में नहीं थी, अश्वत्थामा में भी नहीं थी और वे सब समाप्त हो गये।

'यदा यदा हि धर्मस्य जलानिर्भवति...' जब भी ऐसा समय आयेगा तब; 'अभ्युत्थानं' उस समय उन मुर्दा शरीरों को उठाने के लिये; 'तदात्मानं' - उनकी आत्मा को जगाने के लिये, 'सूजाम्यहं' - मैं खुद खड़ा होऊंगा, मैं खुद समझाऊंगा। और मैं वही वापस तुम्हें दोहरा रहा हूँ पांच हजार साल बाद वही कह रहा हूँ तुम्हें। मैं नहीं कह सकता कि तुम जीवन में पलट कर कितना पीछे तक देख सकते हो, लेकिन जिस दिन तुम्हारी आंखें दिव्य चक्षु बन सकेंगी, जिस समय तुम पिछले जन्मों को देख सकोगे तो मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सब तुम्हें स्पष्ट साकार दिखाई देगा। तुम्हें दिखाई देगा कि महाभारत युद्ध हो रहा है, मैं तुम्हें समझा रहा हूँ और यही श्लोक बोल रहा हूँ जो आज तुम्हारे सामने बोला है। उस समय भी मैं यही चीख कर कह रहा था, कि तुम्हें युद्ध में विजय प्राप्त करनी है, अर्जुन तो एक निमित्त था। यह बात अर्जुन को ही नहीं समझा रहा था, और मैं यह बात केवल तुम्हें ही नहीं समझा रहा हूँ। जो तुम्हारे पास खड़े नहीं हैं भारतवर्ष के उन लोगों को भी समझा रहा हूँ।

'अभ्युत्थानं अधर्मस्य जलानिर्भवति भारत!' - पूरे भारतवर्ष में जहां भी मुर्दा शरीर है, उनको मैं तुम्हारे माध्यम से सुना रहा हूँ। वह अर्जुन के माध्यम से सुना रहा था, पूरे महाभारत के योद्धाओं को - जो कौरव दल में थे, चाहे पाण्डव दल में थे, चाहे हस्तिनापुर में थे, चाहे आर्यवर्त के किसी भी कोने में थे। अर्जुन तो बस निमित्त मात्र था।

आज मैं भी वही इतिहास दोहरा रहा हूँ, मैं बैठा

बोल रहा हूं और तुम सुन रहे हो। मगर केवल तुम्हें ही मैं सुना नहीं रहा हूं, जहां पर भी मुर्दा शरीर हैं, उनको मैं समझा रहा हूं, क्योंकि कहीं न कहीं वे मुझसे जुड़े हुए जरूर हैं।

मुर्दा का मतलब जिनमें कोई चेतना नहीं है, हंसी नहीं मुस्कुराहट नहीं है। मैं कहता हूं कि आप मुझे मुस्कुराते हुए मिलो, तो आप थोड़े से दांत निपोर कर खड़े हो जाते हो। वह मुस्कुराहट नहीं होती। तुम थोड़े गाल फैला देते हो और खुश हो जाते हो कि मैं खुश होकर गुरुजी से मिल लिया। न तुम हंसे, न तुम्हारे समाज ने तुम्हें हंसने दिया।

गुरु जाग्रत हो, और जो जाग्रत है वह मुस्कुरा सकता है, वह प्रेम कर सकता है, वह बालकों के साथ भी खेल सकता है, बुढ़ों के साथ प्रवचन भी कर सकता है। उसको प्रवचन करने की कला में देखेंगे, तो बिल्कुल एक दूसरे रूप में देखेंगे और अगर वह शेर-शायरी सुनायेगा तो बिल्कुल एक दूसरे अन्दाज में। हम कल्पना नहीं कर सकते कि कल यही व्यक्ति मंच पर बैठा प्रवचन कर रहा था और आज एकदम लखनवी अन्दाज में गजल गा रहा है, कमाल है। और आज नदी के किनारे बैठा-बैठा नदी का संगीत सुन रहा है, किसी बात की परवाह भी नहीं है। और ये आज बच्चों के साथ मुस्करा रहा है, ये क्या व्यक्तित्व है! जीवन के प्रत्येक क्षण में जो जीवित हो, जाग्रत हो, वह गुरु है।

...और जब विश्वामित्र ने पूछा तो गुरु ने कहा कि अगर तुम भोगमय जीवन व्यतीत नहीं कर सकते, तो धोग के माध्यम से भी जीवन जिया जा सकता है, इतना आसान नहीं है। विषययुक्त जीवन तो आसान है, वासनामय जीवन तो आसान है, वासनात्मक जीवन व्यतीत करने के लिये किसी स्कूल में पढ़ाई की आवश्यकता नहीं होती, पत्नी के साथ पुत्र केसे पैदा होते हैं, कहीं ट्रेनिंग नहीं दी जाती, जरूरत नहीं हैं। वासना के लिये कुछ ज्ञान की जरूरत नहीं है। मगर प्रेम के लिये ज्ञान की जरूरत है, चेतना की जरूरत है। योग के लिये इसलिये कहा कि अगर तुम भोग में नहीं रह

सको, दृष्टा नहीं बन सको, ... क्योंकि जब दृष्टा बनते हैं तो जीवन में जो हो रहा है, हो रहा है, बस एक तरफ खड़ा देख रहा हूँ। पल्ली अपना काम कर रही है, पुत्र अपना काम कर रहा है, अच्छा कर रहा है या बुरा अपने कर्म का फैल भोग रहा है। अगर मैं उसमें लिस होता हूँ कि तू दुःखी है, उसके साथ आंसू बहाऊं, सीने से लिपटाऊं और रोऊं उसके साथ, फिर तो लिस हो गया।

... तो दूसरा रास्ता है योग यानि जुड़ना। 'योग वशिष्ठ' ग्रंथ के प्रथम श्लोक में बताया गया है कि योग का तत्त्वज्ञ क्या है, क्या जुड़ना है और कैसे जुड़ना है? और उसमें वशिष्ठ ने पल्ली का नाम नहीं लिया, वशिष्ठ ने ईश्वर का नाम भी नहीं लिया। वशिष्ठ ने तो कहा कि ईश्वर है ही नहीं, ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। जो है वह ब्रह्म है, और ब्रह्म बाहर नहीं है, वेद में साफ कहा है - 'अहं ब्रह्मास्मि' - आकाश में ब्रह्म नहीं है, मैं खुद ब्रह्म हूँ। 'द्वितीयो नास्ति' - दूसरी कोई चीज है ही नहीं। जब तुम यह सोचोगे कि दूसरी कोई चीज ही नहीं है, तब तुम ब्रह्म बन सकते हो। ब्रह्म बनने के लिये तो बस मैं हूँ, बाकी दुनिया खेल-खेल रही है। सिनेमा का टिकट लिया है, और मैं बैठा कुर्सी पर देख रहा हूँ कि हीरो आ रहा है, शादी हो रही है, जवान लड़का मर जाता है, मां रो रही है, पछाड़ खा रही है। और सिनेमा हाल में यह देखकर कई औरतें सुबकने भी लग जाती हैं। एक हीरोइन नाचती है तो रुपये फेंकने शुरू हो जाते हैं, तो यह उसमें भाग लेने की क्रिया होने लगती है - लेकिन यह तो बस पर्दे पर खेल चल रहा है, क्योंकि पांच रुपये का टिकट लिया है।

ऐसा दृष्टा बन सको तो भोग कर सकते हो और यदि ऐसा नहीं कर सकते तो तुम्हें योग करना पड़ेगा। दोनों में से कोई एक रास्ता चुनना पड़ेगा। योग का अर्थ है दो तत्वों को जोड़ने की क्रिया। और दो तत्व केवल गुरु और शिष्य ही हो सकते हैं, क्योंकि इसके अलावा बाकी सारी चीजें वासनात्मक हैं। गुरु के साथ प्रेम होता है, वासना बन ही नहीं सकती, उसमें लेन-देन का हिसाब है ही नहीं। गुरु तुमसे कुछ मांग नहीं सकता, तुम मजबूर नहीं हो गुरु को कुछ देने के लिये। योग का अर्थ है गुरु

के साथ पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया,
पूर्ण रूप से, होठों से नहीं, प्रार्थना के
माध्यम से भी नहीं, चरण छूने के
माध्यम से भी नहीं। तुम्हें सिर
झुकाना पड़ेगा, विनीत होना
पड़ेगा, नम होना पड़ेगा। कबीर
ने साफ कहा है -

कबीर ये घर प्रेम
का, खाला का घर
नाहि ॥
शीष उतारे भुर्ड धरे
वो एचसे घर
माहि ॥

गुरु और शिष्य का
सम्बन्ध प्रेम का सम्बन्ध
है। इस में तो वही उतर



सकता है, जो सिर को काट कर नीचे रख सकता है। अगर तुम सिर को लिये हुए चल सकते हो, अहंकार को लिये हुए चल सकते हो, तो गुरु के प्राणों में नहीं मिल सकते हो। तुम क्या हो, लखपति हो या करोड़पति, अपने घर में हो। वह तुम्हारा गृहस्थ का जीवन है, उसका मुझसे कोई लेन-देन नहीं है। मेरा-तुम्हारा सीधा प्राणों का सम्बन्ध है और जब प्राणों का सम्बन्ध है तो तुम्हें विनीत होना पड़ेगा, झुकना पड़ेगा -

नमन्ति फलिनो वृक्षः, नमन्ति गुणिनो जनः

शुष्क काष्ठं च मूर्खं च न नमन्ति कदाचन्

- केवल फलदार ढाली ही झुक सकती है। जिसमें गुण हैं, जिसमें ज्ञान आ गया है, जिसमें चेतना आ गई है, वह झुक सकता है। झुकने की क्रिया अत्यन्त कठिन है। आम आदमी आसानी से झुक नहीं सकता, बहुत अहं से खड़ा हुआ है, हर बार उसका अहं उसे थपथपाता है। वह अहं को खुद पैदा करता है कि मैं हूं और मेरे पास पांच लाख रुपये हैं। मैं हूं और मैं बहुत सुन्दर हूं शीशे में दो बार स्त्री चेहरा देखती है कि मैं बहुत सुन्दर हूं और कोई कुछ कहे या नहीं कहे, वो खुद अपने अहं को पोषित करती रहती है। पुरुष भी अपने अहं को पोषित करता रहता है, कि मैं हूं, मैं समाज का संरपंच हूं, एम.एल.ए. हूं, एम.पी. हूं और पांच लाख रुपये का मालिक हूं, मेरा व्यापार है, मेरी दुकान है। तुम्हारा अहं और कोई पोषित नहीं कर रहा, तुम्हारा अहं तुम खुद पोषित कर रहे हो।



इसलिये झुकना बहुत कठिन क्रिया हैं, क्योंकि झुकने के लिए अपना सिर उतारना पड़ेगा, झुकने के लिये अपने को मारना पड़ेगा। मृत्यु तो जीवन का श्रृंगार है, बहुत आनन्ददायक उत्सव है, नृत्य है, मृत्यु से घबराने की जरूरत नहीं है, मृत्यु से विषयी आदमी घबराता है। इसलिये गुरु सबसे पहले मृत्यु देता है। जो भी तुम्हारे पास है - तुम्हारा छल, तुम्हारा झूठ, तुम्हारा असत्य, तुम्हारा व्याभिचार, तुम्हारा अहं - यह सब पहले समाप्त हो। वो समाप्त होगा तो गुणी व्यक्ति अपने आप झुकेगा - 'नमन्ति गुणिनो जनः'। सूखी लकड़ी नहीं झुक सकती। जिस दिन तुम सूखने लकड़े बन जाओगे, उस दिन मेरे कहने का तुम्हारे ऊपर कोई असर नहीं पड़ेगा।

विश्वामित्र को गुरु ने कहा कि अगर तुम्हें योग में उतरना है, तो इतना झुको कि तुम्हें गुरु के चरणों में मन्दिर दिखाई देने लग जाये, गुरु के चरणों में तुम्हें मस्जिद दिखाई देने लग जाए, गुरु के चरणों में गुरुद्वारा दिखाई देने लग जाये। तब समझो कि तुम झुके। तन के खड़े होने में जीवन में सार आ ही नहीं सकता। अगर तुम झुको, और फिर वापस तन के खड़े हो जाओ तो तुम शिष्य नहीं बन सकते, तुम

योग कर भी नहीं सकते। योग का मतलब है झुक जाना, अपने आप को मिटा देना, अपने आप को विसर्जित कर देना। ...और यह विसर्जित करना ही बूँद की समुद्र में विलीन होने की क्रिया है। बूँद समुद्र नहीं बन सकती। जो बूँद एक बार समुद्र में मिल गई, उसको फिर तुम अलग नहीं कर सकते, समुद्र में मिलते ही वह समुद्र बन जाती है।

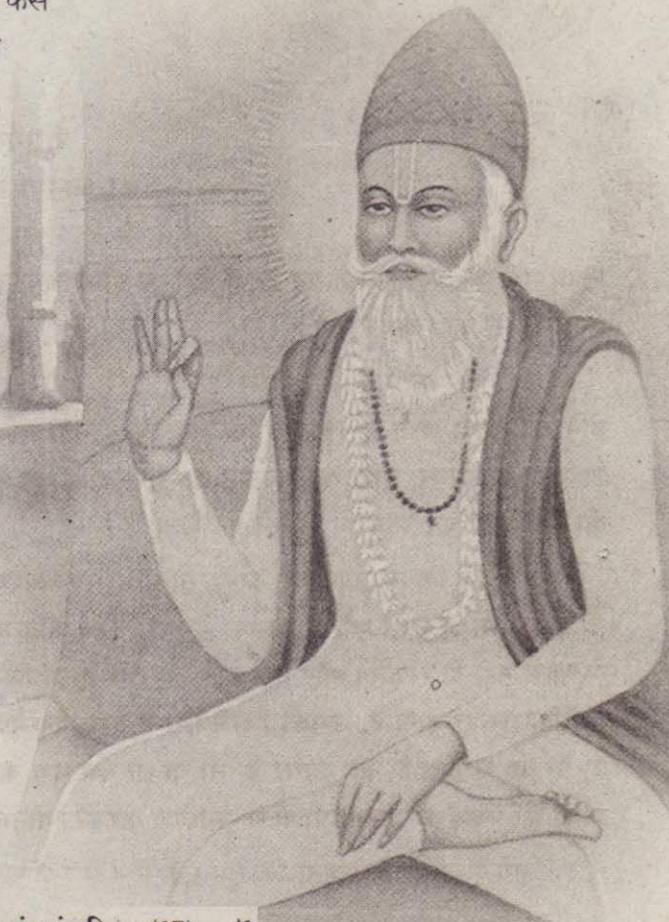
योग की इसी भावभूमि पर मैं तुम्हें समझा रहा हूँ कि तुम्हारा जीवन और मेरा जीवन अलग हो नहीं सकते, है ही नहीं। मेरे बिना तुम्हारे जीवन का अस्तित्व नहीं है। मेरे बिना तुम्हारा जीवन जीवन नहीं है, वह विषयी जीवन तो हो सकता है, वासना का जीवन तो हो सकता है, पर प्राणों का जीवन नहीं हो सकता है क्योंकि तुम्हारे जीवन का प्राण मैं हूँ, चेतना मैं हूँ, तुम्हारे पास केवल शरीर है और इस शरीर में प्राणों की चेतना मेरे माध्यम से प्राप्त हो सकती है, क्योंकि मैं तुम्हारा गुरु हूँ।

...और गुरु इसलिये हूँ कि तुमसे लेने की भावना नहीं है। गुरु इसलिये हूँ कि मुझमें आनन्द प्रदान करने की क्षमता है। जितने क्षण तुम्हारे मेरे साथ बीतते हैं, वे आनन्द के क्षण होते हैं। तुम आते हो मेरे पास और बहुत मस्ती के साथ रहते हो, खिलते हो, खिलखिलाते हुए, झूमते हुए, मुस्कराते हुए और वापिस जाते हो, तो चेहरे पर एक भी मुस्कराहट नहीं आती, एक क्षण भी सांस नहीं ले पाते हो, उसी बोझ में दबे रहते हो, इसलिये कि तुम्हारे पास जीवन था नहीं। तुम्हारे पास देह है और मैं उसमें प्राण तत्व जाग्रत कर सकता हूँ, चेतना मैं दे सकता हूँ। देने की कला मुझमें है, इसलिये मैं तुम्हारा गुरु हूँ।

...और इसके लिये योग की क्रिया है, पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया है। शिष्य को अगर जुड़ने की क्रिया ही आती तो अपने आप कभी भी जुड़ जाता। वह गुरु के पास तो आ सकता है, गुरु के चरणों में झुक तो सकता है, पर कैसे जुड़े? इसके अलावा वह क्या करे? विश्वामित्र का भी यही प्रश्न था कि मैं क्या करूँ? कैसे करूँ? आप कह रहे हैं कि प्राण तत्व में विसर्जित हो जाओ, तो मैं कैसे विसर्जित हो जाऊँ? यह कला मुझे मालूम नहीं है। होती, तो मैं कभी का विसर्जित हो गया होता। फिर बार-बार आपको दुःख नहीं देता, बार-बार मृत्यु को नले लगाने के लिए मजबूर नहीं होता, बार-बार उस गर्भ में दुःख नहीं प्राप्त करता।

विश्वामित्र को गुरु ने कहा कि एक जन्म में भी हो सकता है और हो सकता है कि दूसरा जन्म लेना भी पड़े। परन्तु दूसरा जन्म लेना क्यों पड़ सकता है? परीक्षित ने यही प्रश्न पूछा वेद व्यास जी को कि राधा एक ही जीवन में पूर्णता को प्राप्त कैसे कर गई?

तुम भी जब तक झुक नहीं जाओगे, जब तक अपने आप को मिटा नहीं दोगे, तब तक तुम्हें भी





जन्म लेने पड़ेंगे, और जब तक जन्म लोगे, मुझे फिर बार-बार अपने पास बुलाना पड़ेगा, आवाज देनी पड़ेगी। लेकिन यह सब तुम इस जीवन में भी कर सकते हो, उसके लिए कोई बहुत बड़ी घटना की जरूरत नहीं है, पांच-दस साल की जरूरत नहीं है, कोई मंत्र जाप की भी जरूरत नहीं है मंत्र जाप के माध्यम से प्राणों में समावेश नहीं हो सकता। अगर हो पाता तो फिर हजारों-लाखों लोग एक-दूसरे के प्राणों में समविष्ट हो जाते। प्राणों में समावेश तो विसर्जन होने की क्रिया है।

विश्वामित्र यहीं पूछ रहे हैं कि मैं प्राणों में समावेश कैसे करूँ? क्योंकि मैं दूसरा जन्म लेना नहीं चाहता। जीवन के जिस मोड़ पर मैं खड़ा हूँ, जहां आपने मेरा हाथ पकड़ा है, बस यहां से मेरी जीवन की पगडण्डी मुड़नी चाहिये, जीवन में आनन्द आना चाहिये।

...और मैं तुम्हें यहीं कह रहा हूँ कि मैं तुम्हें आनन्द देना चाहता हूँ, सुख नहीं। मैं तुम्हारे लिये पंख नहीं लगा रहा हूँ। सुख तो पंगु बना देगा, कमज़ोर बना देगा, रोगी बना देगा और तुम्हें रोगग्रस्त नहीं होना है। शशान में जाकर सो जाना जीवन का आनन्द नहीं है। कृष्ण ऐसे नहीं सो पाये, राम ऐसे नहीं सो

पाये, बुद्ध ने वह क्रिया नहीं की, महावीर ने वह क्रिया नहीं की, ईसामसीह ने वह क्रिया नहीं की, सुकरात ने वह क्रिया नहीं की। वे जाग्रत रहे, जीवित रहे, क्योंकि जीवन के एक विशेष मोड़ पर उन्होंने गुरु को पकड़ लिया।

बुद्ध को भी गुरु मिले और धर्म पद में बुद्ध ने यहीं कहा है कि किस क्रिया से मैं लीन हो जाऊँ? बुद्धत्व प्राप्त होने की क्रिया क्या है? बुद्धत्व का मतलब है जहां बुद्धि समाप्त हो जाती है, जहां श्रद्धा पैदा हो जाती है, अहंकार का अन्त, बुद्धि का अन्त - वह बुद्धत्व है, वह चेतना है, वहां प्राणों में पहुँचने की क्रिया है, विसर्जन की क्रिया है, यह ध्यान में उतरने की क्रिया है।

मैं तुम्हें कहूँ कि तुम प्राणों में उतरो, तो पांच साल अभ्यास करने के बाद भी शायद नहीं उतर सको। क्योंकि तुम्हारा सारा जीवन विषय - वासना में लिप्त है, क्योंकि बाहरी संसार के साठ साल के जो भोग हैं, वो एकदम से खत्म नहीं हो सकते। और नहीं खत्म हो सकते, तो फिर जो तुम नहीं करे सकते, वह गुरु को करना चाहिये क्योंकि गुरु तुम्हारा है, उसकी जिम्मेवारी है, गुरु जिम्मेवारी से बच नहीं सकता। अगर जिम्मेवारी से बचता है, तो वह भगोड़ा है, वह कायर है, तो या तो तुम गुरु के प्राणों में विसर्जित हो जाओ या फिर गुरु ही तुम्हारे प्राणों को पकड़ कर अपने प्राणों में समावेश कर ले। दोनों में से कोई एक क्रिया हो, यह गुरु की जिम्मेवारी है।

इसलिये मैं यह नहीं कहता कि तुम एक दिन में बुद्धत्व प्राप्त कर लोगे। प्राणों में उतरने के लिये ध्यान योग

की जो प्रक्रिया है वह लम्बी स्थितप्रज्ञ प्रक्रिया है, और समय बहुत कम बच गया है। मैंने तुम्हें कहा कि तुम ध्यानस्थ हो कर अन्दर उतरते जाओ, एक सीढ़ी, दूसरी सीढ़ी, पांचवीं सीढ़ी... दसवीं सीढ़ी - तो अपने आप तुम्हें ब्रह्मात्म के दर्शन होंगे, दूधिया प्रकाश सा दिखेगा, मगर यह तो अभ्यास की बात है, एक दिन में ऐसा संभव नहीं हो सकता। युद्ध ने कहा कि मैं सालों-साल तपस्या कर चुका हूं, मगर इतने वर्षों के बाद भी मैं उस तत्व को प्राप्त नहीं कर पाया जहां से ब्रह्माण्ड को देख सकूं। अर्जुन ने भी कहा - 'कृष्ण! मैं तुम्हें नहीं पहचानता कि तुम कौन हो? मैं तो तुम्हें सारथी समझ रहा हूं, तुम इतनी लम्बी चौड़ी बातें कर रहे हो, मैं नहीं समझ पा रहा हूं।'

लब कृष्ण ने कहा - 'तू नहीं देख पा रहा है, तो देख, मैं तुझे अपना विराट रूप दिखा रहा हूं कि मैं क्या हूं, अन्दर पूरा ब्रह्माण्ड है, तू देख सकता है। ये पूरा महाभारत युद्ध बाहर नहीं हो रहा है, मेरे अन्दर हो रहा है। ये सारा युद्ध मैं कर रहा हूं। ये कौरव मेरे अन्दर बैठे हैं, पाण्डव मेरे अन्दर बैठे हैं, भीष्म पितामह शर-शैया पर लेटे अन्दर पड़े हैं। सब तू देख ले और इसलिये तू बस निमित्त हो जा।'

इसलिये अगर तुम नहीं देख सको, तो गुरु की

जिम्मेवारी है कि वह करे। इसलिये अगर

जब भी तुम नाष्टीक नहीं उठाओगे

तो तुझे तुम्हारा हाथ पकड़ कर

उठाना है, हाथ में नाष्टीक देना

है, और तीस भासने के लिए तैयार

कर देना है, तुम्हें समझा देना है

कि करना ही है तुम्हें। और तब

तुम देख सकोगे कि जो सामने

मंच पर बैठा हुआ व्यक्तित्व है,

वह कौन है?

अभी तुम अलग बैठे हो, मैं

अलग बैठा हूं। मैं तुम्हें समझा

रहा हूं और तुम समझ रहे हो।

जब सुनने और समझने का भाव

ही खत्म हो जाता है, देखने का

भाव ही खत्म हो जाता है, दैत

भाव ही खत्म हो जाता है, तब

एकाकार हो जाता है।

तुम्हें जल्दी एक नये रास्ते

पर बढ़ना है, जहां जीवन का

प्रत्येक क्षण उत्सवमय हो सके,

आनन्दमय हो सके। तुम्हारे

चेहरे पर मुस्कराहट हो सके,

आंखों में ओज आ सके, चेहरे



के चारों ओर प्रभामण्डल आ सके, कोई देखे तो एहसास हो सके कि कोई व्यक्तित्व है, मैं तुम्हें एक बहुत बड़ा व्यक्तित्व बनाने जा रहा हूं और केवल तुम्हें ही नहीं ये बात पूरे भारतवर्ष को सुना रहा हूं। मैं तुम्हें बता रहा हूं कि तुम इतिहास के वो व्यक्तित्व बनने जा रहे हो, जहां पूरे भारतवर्ष का तुम दिशा-निर्देश कर सकोगे, मार्ग दर्शन कर सकोगे, मैं तुम्हें सूर्य बनाना चाहता हूं।

इसलिये जब मेरे प्राण और तुम्हारे प्राण एक हो सकेंगे, तो तुम्हारे प्राण फिर कुछ रहेंगे ही नहीं। मेरे प्राणों का विस्तार अगर पूरे ब्रह्माण्ड में है, तो निश्चय ही तुम्हारे प्राणों का विस्तार भी पूरे ब्रह्माण्ड में होगा ही और यह सब संभव हो सकेगा जब तुम मेरे प्राणों के पास रह सको, हर क्षण।

तुम मुझे भुला सकते नहीं, मेरा नाम आते ही तुम्हारी आंखों में आंसू आयेंगे ही, हर क्षण तुम्हारी स्थिति होगी ही कि मैं जाऊं और उनसे मिलूं। यह अलग बात है कि तुम्हारी विषय-वासना तुम्हें रोक देगी, जेब में पैसे नहीं हैं, कई और मजबूरियां भी हो सकती हैं। मगर उसके बाद भी तुम मेरे पास आने से अपने को रोक नहीं पाते हो।

इसलिये नहीं रोक पाते क्योंकि तुम्हारे और मेरे सम्बन्ध आज के हैं नहीं। पढ़ोसी से तो मिले हुए तुम्हें दो-दो महीने बीत जाते हैं, जो बिल्कुल तुम्हारे बगल में ही रहता है। और मैं हजार मील दूर बैठा हूं फिर भी हर क्षण मुझे भुला नहीं पाते हो। मेरा नाम याद आते ही तुम्हारी आंखों से आंसू छलछलाने लगते हैं। एकदम धड़कन रुक जाती है, एहसास होता है कि उनका मुस्कराना कुछ अलग है, बात करने की कला अलग है, चेतना अलग है, चाल अलग है, कहने का एक लहजा अलग है।

दस-बीस साल तुम अलग तो रह सकते हो, बीस साल बाद भी तुम मुझे भुला नहीं सकते। ऐसे हजार उदाहरण हैं। बीस साल पहले शिष्य आया और फिर नहीं आ पाया। बाद में फिर आया तो बोला - ‘गुरुजी, मेरी मजबूरी हो गई थी, मैं नहीं आ पाया, मगर एक भी क्षण आपको भुला नहीं पाया; भुलाने की क्रिया हो ही नहीं सकती, क्योंकि मैं भुलाने की चीज ही नहीं हूं, मैं याद रखने



लायक चीज हूं, मैं होठों पर गुनगुनाने लायक चीज हूं। मैं आखों में बसा लेने की चीज हूं।

इस बार इस जन्म में भी जब तुम मेरे पास आए हो तो अपने आप नहीं आये हो, मैंने तुम्हें खींचा है इसलिये तुम मेरे पास आ सके हो और इस बार मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। इस बार तुम्हें फांसा है। अपने प्रेम की डोरी में फांसा है, चतुराई से फांसा है और अगर मैं तुम्हें मुक्त कर सकता हूं, तो मैं तुम्हें फांस भी सकता हूं। तुम्हारे प्राणों को बांध सकता हूं, तुम अपने प्राणों को मुझसे अलग नहीं कर सकते।

जिस क्षण में तुम जी रहे हो, उस क्षण में छलांग लगा सकते हो। तुम्हें एक क्षण की जखरत है, एक हिम्मत और हौसले की जखरत है। जब राम ने हनुमान को कहा कि तुम्हें सीता की खबर लानी है, तो सुश्रीव, नल, नील, जाम्बन्त और हनुमान - सब समुद्र के किनारे पहुंचे और कहा लंका के बीच में चार सौ योजन लम्बा समुद्र है, तैर कर तो इतना पार नहीं हो सकता। जाम्बन्त ने कहा कि मैं वृद्ध हो गया हूं, अब शरीर इतना घिस गया है, कि अब मैं छलांग कर लंका पर नहीं उतर सकता। उस किनारे पर नहीं जा सकता। नल ने कहा कि मुझमें भी यह क्षमता नहीं है; हनुमान ने भी कहा कि मैं भी नहीं कर सकता। जाम्बन्त ने कहा - 'हनुमान! तुम छलांग लगा सकते हो, तुम्हें मालूम नहीं कि तुममें कितनी क्षमता है, तुम नहीं जानते, मगर मेरी अनुभवी आंखें कह रही हैं कि तुम छलांग लगा सकते हो।'

और मैं भी तुम्हारी हिचकिचाहट को जानता हूं,
मगर खुद तुम्हारे हाथ को पकड़ कर भी छलांग
लगा सकता हूं और जब मैं लगाऊंगा तो
निश्चय ही जब तुम अपनी कुण्ठाओं से
बाहर आओगे तो तुम्हारा शरीर एक
विशेष गन्ध से महकता हुआ
होगा, तुम्हारे आंखों में एक
नवीन भाव होगा, प्रेम की
लालिमा होगी, एक नृत्य
होगा, पूरा जीवन संवरा
हुआ होगा, हाय मोतियों
से भरे हुए होंगे। मैं तुम्हें
ऐसा ही आशीर्वाद देता
हूं।

- सद्गुरुदेव
परमहंस स्वामी
निखिलेश्वरानन्द

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर,
आप पार्वेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

पारद मुद्रिका

हमारे शास्त्रों में पारद को पूर्ण वशीकरण युक्त पदार्थ माना है, यदि किसी प्रकार से पारद की अंगूठी बन जाए और कोई व्यक्ति इसे धारण कर ले, तो यह अपने आप में अलौकिक और महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है।

सैकड़ों हजारों साधकों के आग्रह पर हमने मुद्रिका का निर्माण किया है। इस मुद्रिका को आसानी से किसी भी हाथ में या किसी भी उंगली में धारण किया जा सकता है, क्योंकि यह सभी प्रकार के नाप की बनाई गई है।

जब पारद मुद्रिका का निर्माण हो जाता है, तब इसे विशेष मंत्रों से मंत्र सिद्ध किया जाता है, वशीकरण मंत्रों से सम्पूर्ण बनाया जाता है, सम्मोहन मंत्रों से सम्पुर्ण किया जाता है, और चैतन्य मंत्रों से इसे सिद्ध किया जाता है।

आज के युग में यह अलौकिक तथ्य है, यह अद्वितीय मुद्रिका है, तंत्र के क्षेत्र में सर्वोपरि वस्तु है, जिससे हमारा जीवन, सहज, सुगम, सरल और प्रभावयुक्त बन जाता है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 258/- + 45/- postage = 303/-
Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

● गुरु तो प्रेम है
 ● गुरु तो सुगन्धि का झाँका है
 ● गुरु तो ईश्वर का प्रतिबिम्ब है
 ● गुरु तो जीवन का लक्ष्य है
 ● गुरु को समर्पण की क्रिया है
 ● गुरु ही जीवन का सर्वस्व है



ईश्वर को भले ही तुमने न देखा हो,

पर गुरु के माध्यम से ईश्वर को निहार सकते हो

जिनके पास बैठके से ही पवित्रता का बोध होता है

गुरु तो प्रेम है... सुगन्धि का झाँका है... ईश्वर का प्रतिबिम्ब है... नमन होने की क्रिया है... समर्पण की क्रिया है... जीवन का लक्ष्य है... जीवन का द्योदय है... जीवन का सर्वस्व है, जिसे तुम साकार अपनी आंखों से देख सकते हो, स्पर्श कर सकते हो, और उसके पास बैठकर पवित्रता का बोध कर सकते हो, जिसकी अपूर्व मादकता से उन्मत हो सकते हो, धरती से ऊपर उठकर जीवन के वास्तविक स्वरूप को पहचान सकते हो, ईश्वर को भले ही तुमने न देखा हो, पर गुरु के माध्यम से ईश्वर को निहार सकते हो। आज से 15 वर्ष पूर्व लिखे थे शब्द आज भी प्रेरणास्पद है।

मानव जिसे ईश्वरत्व कहता है, ब्रह्मत्व कहता है, शिवत्व और जीवन का वास्तविक सुख भी इसी में है, कि वह अनाम कहता है, क्या वह इन तत्वों से परिचित है? क्या जिसे और अरूप सत्ता के रूप और नाम के द्वारा पहचान कर उसमें योगीजन अरूप और अनाम कहते हैं, उस विराट सत्ता को लीन हो सके, एकाकार हो सके, अपने आप को उसमें पूर्णरूप पहचाना जा सकता है? मानव जीवन की श्रेष्ठता क्या है, और से समाहित कर सके, ...किन्तु इसके लिए आवश्यकता है वास्तविक सुख क्या है, यह जाना जा सकता है?

मात्र गुरु ही मानव रूप में इन अज्ञात स्वरूपों का स्पष्ट और वह दिव्य दृष्टि हमें केवल गुरु कृपा के माध्यम से ही ज्ञान दे सकते हैं, वे ही उस आत्म-तत्व, परम तत्व या शिव प्राप्त हो सकती है।

तत्व से साक्षात्कार करा सकते हैं, क्योंकि गुरु मानव और आज का मानव हर क्षण मानसिक द्वन्द्वों एवं तनावों से ईश्वर के बीच की एक कड़ी है, और गुरु के माध्यम से ही हम ग्रस्त व पीड़ित दिखाई देता है, उसका जीवन अशांत व उस विराट सत्ता को, जिसे मानव ईश्वर कहता है, ब्रह्म कहता अनिश्चित प्रतीत होता है, और इसी मानसिक शांति को प्राप्त है, पहचान सकते हैं, देख सकते हैं और अनुभव कर सकते करने के लिए वह विभिन्न मंदिरों व मठों तथा कभी-कभी साधु हैं, तथा मानव-जीवन का उत्स, मानव-जीवन की श्रेष्ठता संतों के पास या तीर्थ स्थलों पर भटकता फिरता है निरन्तर

बढ़ती हुई विषमताओं को पुनः आध्यात्मिकता की छांव तले उस वास्तविक आनन्द को प्राप्त करने के लिए।

प्रत्येक मानव मन आज उस भौतिकता में छिपी रिक्तता को अनुभव कर रहा है, परन्तु इसके लिए उसे कोई अस्पष्ट मार्ग दिखाई नहीं देता, जो उसे पूर्ण तृप्ति दे सके, जो उसे अपनी खुशबू से, अपनी सुगन्ध से आप्लावित कर सके, आनन्द से सराबोर कर सके, जो उसके अन्धकारमय जीवन को प्रकाशवान कर सके, जो उसके चेहरे पर मुस्कराहट, आँखों में खुमारी और हृदय में नृत्य की लय व थिरकन दे सके, इस अवस्था में मानव को किसी योग्य मार्ग निर्देशक की या किसी आश्रय सत्ता की ही आवश्यकता जान पड़ती है, जो उसे जीवन का पूर्ण आनन्द प्रदान कर सके।

ऐसी घटाटोप स्थिति में हमारे समक्ष स्वतः ही एक नाम उभर कर सामने आता है - पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी का जिन्हें हम शिष्य निखिलेश्वरानन्द जी के नाम से जानते हैं। वे एक ऐसी दिव्य विभूति हैं, जिनके दर्शन एवं स्मरण मात्र से ही शरीर इन्जनेन्युर उठता है और जीवन के सभी राग-द्रेष, संकल्प-विकल्प, अज्ञानता एवं समस्त न्यूनताएं समाप्त हो जाती हैं। योग विशिष्ट ने लिखा है कि -

दर्शनात् स्पर्शनात् शब्दात् कृपया शिष्य देहके ।
जनयेत् यः समावेशं शास्त्रवं स हि देशिकः ॥

जो दर्शन से, स्पर्श से या बातचीत के माध्यम से शिष्य के भीतर पूर्ण शिव भाव (ब्रह्मत्व) को जाग्रत कर दे, वही सद्गुरु कहलाता है, और पूज्य गुरुदेव ने इस शास्त्र वचन को प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में ही वर्तमान में गौरवान्वित है।

यह तो ईश्वर की असीम अनुकम्पा ही कही जा सकती है जो पूज्यपाद गुरुदेव जैसा श्रेष्ठ व्यक्तित्व हमारे समक्ष उपस्थित हुए, जिन्होंने हमें नई चेतना दी है, हमारे प्राणों को स्पन्दित किया है और हमारे गलत पगड़ण्डियों पर बढ़ते कदमों को, जो चमकीले गुरुओं की चकाचौथ में दिग्भ्रमित हो गए थे, उन्हें सही मार्ग प्रशस्त कर वास्तविक गुरु तत्व का बोध कराया है।

मानव जिसे अजन्मा और निर्विकार कहता है यदि उसे देह का आवरण दे दिया जाए, तो वे स्वयं पूज्यपाद गुरुदेव ही हैं, किन्तु यह बात हर कोई नहीं जान सकता, यह तो वही जान सकता है, जिसने इनके विराट स्वरूप के दर्शन किए हैं, प्रतिक्षण, प्रति वस्तु में, प्रतिक्रिया में उनको देखा हो, क्योंकि ऐसा आता ही है, जिसमें वह उनके उस दिव्य स्वरूप की सीधे, सरल शब्दों से।

झलक पा जाता है, उसे प्रेम स्निग्ध आचरण में उनकी उस महिमा की झलक मिल ही जाती है, और वह क्षण मनुष्य जीवन का सबसे सार्थक, सबसे महत्वपूर्ण और सबसे उत्तम क्षण होता है।

पूज्य गुरुदेव जैसे उच्च व्यक्तित्व को जान पाना कोई सहज बात नहीं है, वे तो माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा, पुत्र एवं प्रेमी आदि अन्य भिन्न-भिन्न स्वरूपों में प्रत्येक शिष्य के साथ हर क्षण विराजमान रहते हैं। साधारण मानव इन दो नेत्रों से, जो स्थूल काया उसे प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर हो रही है, केवल वही देख सकता है, क्योंकि उसके देखने की सीमा उतने तक ही सीमित है, वह उनके उस अद्वितीय स्वरूप को, उस विराटता को, उस ज्ञान के विशाल सागर को नहीं देख पाता।

कृष्ण और राम भी तो दो हाथ, दो पांव वाले ही व्यक्तित्व थे, उसके कोई चार हाथ या पांव नहीं थे, जिससे कि उनकी विराटता सिद्ध हो सकती हो, किन्तु समाज ने समय रहते उन्हें नहीं पहचाना, और उन्हें सिवाय गालियों, प्रवंचनाओं और आलोचनाओं के कुछ नहीं दिया, परन्तु जिसमें कुछ होगा, लोग उसी को तो कुछ कहेंगे, पर इससे उनकी श्रेष्ठता व उच्चता खत्म नहीं हो जाती, अपितु लोग उनके जाने के बाद ही उनके व्यक्तित्व की महत्ता को समझ पाते हैं। इस युग में पूज्यपाद गुरुदेव भी ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनकी विराटता को केवल एहसास किया जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है, क्योंकि मैंने उनके चरण कमलों में बैठकर उस अनिवार्य आनन्द को प्राप्त किया है, जो मुझे अन्य कहीं से भी प्राप्त नहीं हुआ।

मैं उस शांति और तृप्ति को प्राप्त करने के लिए कहाँ-कहाँ नहीं भटका। मैंने हिमालय के दुर्गम स्थानों व कन्दराओं को भी छान मारा, अनेक साधु-संतों से भैंट की, आध्यात्मिक केन्द्रों व संस्थाओं के चक्कर लगाए, और हरिद्वार, कृष्णकेश सरीखे अनेकों तीर्थ और धार्मिक स्थलों के दर्शन किए, परन्तु कहीं पर भी, किसी में भी कोई श्रेष्ठता मुझे दिखाई नहीं दी, तथा हर जगह मुझे ढोंग और पाखण्ड ही दिखाई दिया, जिसने मेरे हृदय को अविच्छिन्न कर दिया, किन्तु जिस आत्म बिम्ब की मुझे खोज थी वह मुझे दिखाई दिया - गुरुदेव - निखिल के चरण कमलों में। मैंने कितने ही साधु - संतों के प्रवचन सुने और उनके गूढ़ रहस्यों को जानना चाहा, परन्तु उनके तथाकथित ज्ञान से भरे शब्द मेरे अन्दर के खालीपन को भर न सके और सच्चा ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ पूज्य गुरुदेव जी के

उनका लक्ष्य उस ज्ञान से मानव मन को भटकाना नहीं है, अपितु सरल भाषा में उस ज्ञान को, उस चेतना को प्रस्तुत करना का प्रयास है, जिस ज्ञान को पंडित व पुरोहित ने कठिन व दुरुह बनाकर प्रायः समाज से विलुप्त कर दिया था, परन्तु हम ही संशय बश उन्हें नहीं समझ पाते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने तो अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से प्रवचनों के माध्यम से स्पष्ट किया है, और मानव जीवन के हर एक को, हर क्षेत्र को जन सामान्य के सामने पूर्णता के साथ रखा है, क्योंकि गहरी से गहरी बात को पूर्णता के साथ कह देने की, स्पष्ट कर देने की कला केवल उन्हीं में देखी जा सकती है, और आश्चर्य तो तब होता है, जब सैकड़ों-हजारों वेद, पुराणों, उपनिषदों, शास्त्रों आदि पर उनको धारा प्रवाह बोलते हुए देखता हूँ, ऐसा लगता है, मानो उसका एक-एक शब्द उन्हें कंठस्थ हो, परन्तु इतने बड़े ज्ञान के समुद्र को अपने अन्दर पूर्ण समाहित कर लेना किसी साधारण मानव के बस की बात नहीं, यह तो किसी अद्वितीय युग-पुरुष या महामानव के ही बस की बात हो सकती है।

उन्होंने उन शास्त्रों को ज्यों का त्यों रखे शब्दों में बांधकर उन्हें समाज के सामने नहीं रखा है, अपितु उन सभी विषयों को एक नई अर्थवत्ता दी है, एक नवीन गरिमा दी है, एक नवीन चेतना और प्राण दिए हैं, और सबसे बड़ी बात तो यह है, कि उस ज्ञान को समाज के प्रत्येक वर्ग से जोड़ने का प्रयास किया है, चाहे वह ज्योतिष का क्षेत्र हो, चाहे कर्मकाण्ड का, चाहे आयुर्वेद का क्षेत्र हो और चाहे साधना पद्धतियों का।

उन्होंने इस मानव समाज को वास्तविक प्रेम का परिचय देते हुए उसके सही अर्थ को समाज के सामने परिभाषित करने का प्रयास किया है, क्योंकि वे स्वयं ही प्रेम के साक्षात् जीवंत स्वरूप हैं, और उन्हें देखकर ही यह अनुभव किया जा सकता है कि वास्तव में प्रेम क्या है?

उन्होंने अपने जीवन में प्रेम और सौन्दर्य इन दो शब्दों को ही स्पष्ट किया, और इसके गूढ़ एवं जटिल रहस्यों को अपनी वाणी के माध्यम से, अपने शब्दों के माध्यम से सहज भाषा में व्यक्त करने का प्रयास किया है, क्योंकि ये ही दो शब्द सम्पूर्ण जीवन का आधार है, साधना है, सिद्धि है, ये केवल शब्द न होकर उनकी जीवंत एवं प्रत्यक्ष उपस्थिति ही कहे जा सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव इतने करुणामय और उदार व्यक्तित्व हैं, जो विषयों में अपने समस्त ज्ञान का सागर उड़ेल देने के लिए हर क्षण तत्पर हैं, और इसी कार्य की पूर्ति के लिए वे भिन्न-भिन्न तभी यह संभव हो सकता है।

साधक ध्यान दें -

पत्रिका के मई 2009 अंक में प्रकाशित दोनों दीक्षा कार्यक्रम दिनांक 05-06-07 जून 2009 तथा दिनांक 26-27-28 जून 2009 जोधपुर में ही आयोजित होंगे। भूलवश दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम छप गया था। उसे सुधार लें तथा 26-27-28 जून 2009 को दीक्षा के लिये जोधपुर ही आये। फिलहाल कुछ महीनों के लिये दिल्ली में कोई दीक्षा कार्यक्रम नहीं है।

स्थानों पर शिविरों का आयोजन कर शीघ्र से शीघ्र उन विषयों को अपना सर्वस्व ज्ञान प्रदान कर देने की क्रिया प्रवचन, दीक्षा, शक्तिपात्र व साधनाओं के माध्यम से सम्पन्न कर रहे हैं।

इस प्रकार का व्यक्तित्व बार-बार इस पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता, कई सदियां बीतने के बाद ही ऐसा युग पुरुष, ऐसा उच्च व्यक्तित्व समाज में उभर कर सामने आता है, जो सर्वगुण सम्पन्न व समस्त चौंसठ कलाओं से परिपूर्ण हो, जिसकी वाणी में ओज हो, चेतना हो, नवीनता हो, और जो दमखम तथा पूर्ण अधिकार के साथ अपनी बात को विषयों के गले में उतारने का प्रयास करता हो, ऐसे व्यक्तित्व की समीप्यता प्राप्त करनी ही अपने आप में जीवन का अहोभाग्य है।

व्यक्ति उनकी विषयता ग्रहण कर अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पक्षों में तो मनोवांछित सफलता प्राप्त करता ही है, क्योंकि उनके समीप बैठने मात्र से ही उनकी पवित्रता और पात्रता का बोध होने लगता है, और ऐसे युग पुरुष महामानव व अद्वितीय व्यक्तित्व की छाया तले रहकर ही मानव जीवन उच्च, श्रेष्ठ और पूर्ण पवित्र हो सकता है, जिनकी समीप्यता पा लेना ही जीवन का सौभाग्य कहा जा सकता है। उनके चरण कमलों में बैठने मात्र से ही उस शीतल छाया का भान होने लगता है, जिस शीतलता की तलाश मानव को बरसों से है, तथा जिस शांति को प्राप्त करने के लिए वह जगह-जगह भटक रहा होता है, और यह उपलब्ध ही मानव जीवन का वास्तविक सुख व आनन्द है, और ऐसा गुरु ही हमारे लिए 'ईश्वरीय स्वरूप' है, 'ब्रह्म स्वरूप है', 'शिव स्वरूप' है, जिसके द्वारा ही उस विराट सत्ता को, उस पृथ्यदायिनी 'परात्मशक्ति' को पहचाना जा सकता है, तथा उसके सान्निध्य में रहकर मानव जीवन की श्रेष्ठता को अनुभव व अहसास किया जा सकता है, किन्तु इसके लिए आवश्यकता है उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा की और पूर्ण विश्वास की, क्योंकि तभी यह संभव हो सकता है।

छाईश्यात्मक और सत्त्वात्मक सौच

किसी भी व्यक्ति के लिए स्वस्थ, सफल और मधुर जीवन जीने का सबसे मरल और सहज मंत्र सकारात्मक सोच है। सकारात्मक सोच ही व्यक्तित्व के निर्माण का आधार एवं समाज तथा परिवार के पारस्परिक प्रेम और सद्भाव का कारण होता है। जब भी सकारात्मक सोच को अपनाया जाता है, तो हर समस्या का समाधान भी उपलब्ध हो जाता है। दुनिया में जब-जब भी छोटी-छोटी बातों का नकारात्मक सख्त अपनाया गया, परिवार दृटा, समाज दृटा, धर्म और परम्पराएं दूर्टी और अग्निल मानवता का विभाजन हुआ। जब व्यक्ति सकारात्मक सोच को अपनाकर अपने परिवार और समाज की समस्याओं का समाधान नहीं निकालता, तब लगता है कि व्यक्ति खुद ही समस्या बन गया है। जो समाधान के लिये प्रयत्न नहीं करता, वह अपने आप में ही एक समस्या है। इंसान की वह बुद्धि किस काम की, अगर वह समस्या का समाधान न खोज सके?

दो इंसानों ने सोच ही लिया है कि वे विपरीत दिशाओं में ही जाएंगे तो भगवान भी उन्हें एक नहीं कर पाते। वहीं अगर वे निर्णय कर लें कि येन केन प्रकारेण हमें संधि स्थापित करनी ही है तो सकारात्मक सोच और बेहतर नजरिया रखने पर सुलभ रास्ता, मानसिक शांति, प्राप्त हो सकती है। सफलता और आनंद का सबसे बड़ा राज यही है कि मैं अपने आपको न केवल अपनी नकारात्मकताओं से मुक्त रखता हूं वरन् दूसरों की नकारात्मकताओं से भी अप्रभावित रहता हूं। न किसी से इर्ष्या और न किसी की निंदा करो। कोई आगे बढ़ रहा हो तो उसे प्रोत्साहन भी दो और उससे प्रेरणा भी लो। दूसरों की अच्छाइयों का सदा सम्मान करो और बुराइयों को नजरअंदाज करो। जीवन का यह नजरिया ही आपको नकारात्मकता से बचाएगा और सदा सकारात्मकता की तरफ ले जाता चला जाएगा। शांति, संतोष और प्रगति के लिए एकमात्र मार्ग सकारात्मक ओर संतुलित सोच ही है। सकारात्मक सोच ही हमें आने वाली विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देता है। जब कभी भी दूटे हुए समाज को जोड़ना हो, दूटे हुए धर्म को आपस में मिलाना हो, विरोधी वातावरण को शांत करना हो, आप एक ही हथियार अपनाएं और वह है सकारात्मक सोच। जब हर ओर से आदमी हताश और निराश हो जाए तब मुंह लटकाकर हाथ-

पर-हाथ रखकर बैठने की बजाय दो मिनट के लिए दिमाग बनाइए और निर्णय कीजिए कि मैं हर हाल में पॉजिटिव रहूँगा। बस आपकी यह मानसिकता आपको विजेता बनाने के लिए काफी है। सकारात्मक सोच यानी अपनी सोच में दूसरों को स्वीकार करना। बड़े डांट दें तो यह सोचें कि बड़े नहीं डांटेंगे तो कौन डांटेंगे? छोटों से गलती हो जाए तो यह सोचें कि छोटों से गलती नहीं होगी तो किससे होगी? आपकी इस तरह होने वाली सकारात्मक सोच ही आपको हर हालात में सहज और प्रसन्न रखेगी। विपरीत वातावरण में भी अपनी मानसिकता को स्वस्थ संतुलित और मधुर बनाए रखना ही व्यक्ति की सकारात्मकता है।

हमें वातावरण को पुनः सहज और सौम्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। यहीं तो इंसान की सकारात्मकता है। सकारात्मक मनोदशा में उपजने वाली सोच ही सकारात्मक सोच है। सकारात्मक सोच यानि सकारात्मक विचार, सकारात्मक विचार यानि सकारात्मक वाणी, सकारात्मक वाणी अर्थात् सकारात्मक व्यवहार, सकारात्मक व्यवहार अर्थात् सकारात्मक रिश्तेनाते। अच्छा सोचो, अच्छा बोलो, अच्छा बर्ताव करो। आपको भी वापस अच्छी सोच, अच्छे बोल और अच्छा बर्ताव मिलेगा।

सकारात्मक सोच जीवन का प्रसाद है और नकारात्मक सोच जीवन का अभिशाप है। सकारात्मक सोच पुण्य और नकारात्मक सोच पाप है। समाज और मानवता का धर्म सकारात्मक सोच है। विश्व-प्रेम, विश्व शांति और विश्व आदर्श का वातावरण सकारात्मक सोच के छांव तले ही बन सकता है।

नकारात्मक सोच तो दुनिया को बांटती है, तोड़ती है। नकारात्मक सोच यानि इंसान की तलवार और सकारात्मक सोच अर्थात् शरबत की प्याली। किसी को मारना है तो शरबत की प्याली पिलाकर मारो, ताकि दुश्मनी ही समाप्त हो जाए।

जो इंसान पीड़ा में भी शांति और क्षमा की भावना रखता है, तो सचमुच वह इंसान ही श्रेष्ठ सोच और श्रेष्ठ मानसिकता का ही अवधारक हो सकता है।

- गुरुदेव के प्रवचन से

शिव ही नित्य, स्थायी, सर्वव्यापी है
 शिव ही सृजन शक्ति के स्वरूप है
 शिव शक्ति के द्वारा ही कार्य करते हैं
 शक्ति भी शिव के द्वारा कार्य करती है
 अधिष्ठात्र है शिव द्वौरा शक्ति

आदिदेव महादेव

सदाशिव को ध्यान

शिव ही सत्य है

शिव ही सुखदर है,

शिव ही वरदयात्रारी है

एक विवेचन प्रत्येक साधक हेतु



श्री शिव अनादि हैं, अनन्त हैं, निर्गुण स्वरूप होते हुए भी सभी गुणों से युक्त हैं, शिव का आदि, मध्य और अन्त नहीं होते हुए भी सृष्टि का लय करने वाले हैं तथा भक्तों के कष्ट निवारण के लिए प्रत्येक मन्वन्तर में इनका प्रादुर्भाव होता है। शिव परब्रह्म होते हुए भी ब्रह्म की त्रिविधा शक्तियों में (सृष्टि तथा प्रलय या उत्पन्नि और पालन या संहार में से) प्रलय कारक या संहार कारक जैसी महान् शक्ति विशेष के धारक हैं, किन्तु फिर भी उत्पन्नि व पालन करते हुए भक्तों के प्रतिपालक व परम दयालु भी हैं।

भगवान शिव के हजारों - करोड़ों नाम हैं। उनमें से भी अधिक प्रसिद्धि को जो नाम प्राप्त हुए हैं, वे हैं - भगवान आशुतोष, शिव, सुद्र, औघड़दानी, महासुद्र, नीलकंठ, शितिकंठ, पुरुष, परमपुरुष, सुवर्चा, कपर्दी, कराल, कापाली, हर्षक, वरद, ऋष्म्बकेश्वर, त्रिपुरारी,

शंकर, क्षेम, ऋषिकेश, स्थाणु, हरिनेत्र, अव्यक्त, मुण्ड, क्रष्ण, धन्वी, भव, वर, सोमवक्त्र, चक्षुष्य, हिरण्यबाहु, उग्र, उत्तरण, सुतीर्थ, देवाधिदेव, बाहुशाली, दंडी, तपसा, लोलिहान, गोष्ठ, सिद्धमंत्र, वृष्णि, पशुपति, भूतपति, अकूरकर्मा, सहस्रशिरा, सहस्रचरण, भुवनेश्वर, स्वधा, मातृभक्त, सेनानी आदि सहस्र लक्ष व कोटि नामों से भक्तजन भगवान शिव का स्मरण करते आये हैं।

शिव अतुलनीय और असाधरण देवता हैं महादेव का व्यक्तित्व असीमित है। शुद्ध चेतना का ही नाम शिव है तथा सर्वोच्च सत्ता को ही शंकर कहा गया है। विशुद्ध प्रज्ञा का दूसरा नाम ही शिव है, जो एक होते हुए भी त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) है।

सभी प्राणियों में है ईश्वर का वास

एक उपनती नदी में हिंचकोले स्वाती नाव में राजा, मंत्री और उनका सेवक यात्रा कर रहे थे। चारों ओर पानी ही पानी देखकर सेवक आंतकित हो गया। तब मंत्री ने सेवक को पकड़कर नदी के पानी में कई दुबकियां दी। सेवक जब 'नाव-नाव' चिल्लाया, तो पुनः उसे खींचकर नाव पर लाया गया। जब वह नाव पर पहुंचा, तो जान गया था कि जिस पानी से वह इतना भयभीत है, उससे नाव पर ही सुरक्षित रहेगा। इसी प्रकार हम लोग भी भगवान का विश्वास करते हैं, फिर भी संसार खपी भवसागर से भयभीत हैं। जब हम संसारिक कष्टों को भोगते हैं तभी ईश्वर पर विश्वास करने से उपनी सुरक्षा और निरापद होने का अनुभव करते हैं।

आप मनुज अर्थात् मनु की संतान हो, उन्हीं मनु की जिन्होंने आपके लिए मनुस्मृति, मानवीय आचार का नीतिशास्त्र रचा है। जिस तरह आपने घेहरे को देखने के लिए एक दर्पण की आवश्यकता होती है, उसी तरह आपने स्वरूप का ज्ञान करने के लिए आपको एक ईश्वर खपी गुरु की भी आवश्यकता होती है। जो भगवान के अस्तित्व से इन्कार करते हैं, वे स्वयं अपने और अपनी संपत्ति से इन्कार करते हैं।

ईश्वर शिव ही नित्य, स्थाई सत्ता व सर्वव्यापी हैं तथा शिव स्वयं शक्तिमय हैं, अतः शिव शक्ति के द्वारा ही कार्य करते हैं, वहीं शक्ति भी शिव के द्वारा ही कार्य करती हैं, इस प्रकार शक्ति शिव रूपी विशुद्ध चेतना जड़ तथा प्रकृति के बीच का एक माध्यम है, जिनको उमा, ईश्वरी, पार्वती आदि नामों से पुकारा जाता है। शक्ति महादेव की अनुरूप परिणति ही है, न कि कोई स्वतंत्र सत्ता। प्रकृति के सृष्टि कर्ता, विकास कर्ता व संहार कर्ता आदि सम्पूर्ण नियमों की कार्य प्रणाली उसी सत्ता के आधार पर अनुप्राप्ति है। जब मन शिव सत्ता से सत्तावान हो जाता है, तो प्रकृति के सम्पूर्ण नियम उसके सहयोगी बनकर कार्य करते हैं। भक्त का योग क्षेम स्वयं महादेव ही वहन करते हैं तथा उस जीवधारी का जीवन उस समष्टि प्रकृति से पोषित होता चला जाता है।

शिवलिंग की पूजा का महत्व

अन्य देवताओं की मूर्तियों की तो पूजा होती है, किन्तु शिवलिंग की पूजा का अधिक महत्व है। भगवान शिव ब्रह्माण्ड स्वरूप हैं, अतः दार्शनिकों की उक्ति में 'यः पिण्डे स्त्र ब्रह्माण्डे' सही चरितार्थ होती है। अतः साधन-सीमित व ज्ञान-सीमित शक्तिधारी मानव ब्रह्माण्ड स्वरूप की तो पूजार्चना नहीं कर सकता, किन्तु लिंग स्वरूप पिण्ड की पूजार्चना एक ही दिन में अनेक बार भी करना चाहे, तो कर सकता है। शिवलिंग उनकी सृजनात्मक शक्ति का धोतक है। यद्यपि शंकर निर्गुण व निराकार हैं, तथापि लिंग स्वरूप सृजन का स्रोत होते हुए भी सम्पूर्ण चराचर, चल व अचल पदार्थों के अंत और नाश का परिचायक भी है। लिंग रूपी आकाश की वेदी पृथ्वी ही शिवलिंग में अव्यक्त, अदृश्य, सृजन शक्ति का भी अन्तर्भाव है तथा यही आध्यात्मिकता का भी स्वरूप है।

शिव की परोपकारिता

पौराणिक आख्यानों के अनुसार भगवान शिव ने समुद्र मंथन से उत्पन्न महाविष का पान देव तथा दानवों की प्रार्थना से

किया तथा विष से उन सभी की रक्षा की व नीलकण्ठ कहलाये। आज भी उस विष का नीला निशान शिव की मूर्तियों व चित्रों पर दिखाई देता है। शिव की परोपकारिता, दीनदयालुता, औघढ़दानी स्वरूप आदि की जनश्रुतियां प्रसिद्ध हैं, इसीलिए संसार में सर्वाधिक शिव मंदिरों की भरमार है एवं भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी शिव पूजे जाते हैं।

परदुःख कातरता

भक्ति करने से अन्य देवता इतने शीघ्र प्रसन्न नहीं होते, जितने शीघ्र भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं, इसीलिए उन्हें भोले-भंडारी कहा जाता है।

भगवान शिव की भगवान राम व कृष्ण ने भी पूजा की है तथा वरदान प्राप्त किये हैं, अतः समय-समय पर प्रार्थनाओं से प्रसन्न होकर भगवान शिव मानव का ही नहीं देवताओं तथा दानवों का भी उपकार करते रहते हैं।

सद्गुरुभिषेक, सहस्रधटाभिषेक का महत्व

भगवान नीलकण्ठ को विषपान की तीव्रता कभी विचलित नहीं करे, इसीलिए शास्त्रों ने शिव के अभिषेक का महत्व बतलाया है। साधारण अभिषेक, नित्य जलधाराभिषेक, अहर्निषाभिषेक, सहस्रधटाभिषेक, दुर्घाभिषेक, घृताभिषेक, पंचामृत स्नान आदि विविध रूपों में अनेक प्रकारों से शिव का अभिषेक किया जाता है, जिससे आराधक के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।

अतः शिव ही सत्य हैं, शिव ही सुन्दर हैं व शिव ही कल्याणकारी हैं।

सद्गुरु और शिव

परम्पराओं में भगवान शिव को सर्वाधिक सरल देव माना गया है, जो अल्प पूजन से ही संतुष्ट हो जाते हैं; किन्तु इस परम्परा के मूल में जो गृहार्थ निहित है, उसका स्पष्टीकरण भी आवश्यक है। अल्प पूजन से संतुष्ट होने का रहस्य वही है जिसे भगवतपाद ने अपने सौन्दर्य लहरी के पदों के माध्यम से वर्णित किया है। भगवान शिव का मूल पूजन तो नितांत आत्मगत अवस्था है, योग का प्रयास है। इस योग के लिए यह आवश्यक नहीं, कि साधक हठयोग का सहारा ले या अपने को तपा डाले वरन् विनम्र होकर प्रयास करे, तो अनुभव कर सकेगा, कि वह जिन देवाधिदेव की साधना करने को आतुर है, वह तो पहले से ही उसके हृदय पटल पर ही विराजमान है।

भगवान शिव का पूर्ण स्वरूप तो वास्तव में 'योगाय' अर्थात् योगमय ही है, उसे तो केवल शिववत् बनकर ही 'अनुभव' किया जा सकता है तथा वह स्वरूप 'योगनमिताय' अर्थात् योग-नमस्कार करता हूँ।

केवल योग के माध्यम से ही प्रणाम करने योग्य भी है।

भगवतपाद ने इसी तथ्य का साक्षात् अपने जीवन में कर 'शिवोऽहं शंकरोऽहं' अर्थात् 'मैं ही शंकराचार्य हूँ, मैं ही शिव हूँ' का घोष किया था। शिव वस्तुतः एक देव से भी अधिक एक भावभूति है, जीवन-चिंतन की पराकाष्ठा है। जिस प्रकार बुद्धत्व... भगवान बुद्ध ने यह स्पष्ट कहा था -

'मैं कोई पहला और अंतिम 'बुद्ध' नहीं हूँ वरन् मेरे पहले भी 'बुद्ध' हुए हैं और मेरे पश्चात् भी बुद्ध होंगे।'

ठीक यही बात भगवान शिव के विषय में भी कही जा सकती है, क्योंकि जो साधक उनके आत्म को समझता हुआ तदनुरूप अपने आत्म को भी प्रस्फुटि करेगा, वही 'शिव' होगा। यही क्रिया दुष्कर है, किन्तु 'शिव' को प्राप्त करने का कोई अन्य मार्ग भी नहीं है।

कुण्डलिनी जागरण की अवस्था में पूर्णता तब मानी जाती है जब साधक 'शिव' का साक्षात् कर ले, इसका मावार्थ यही है, कि जब साधक भी योग की उच्चतम स्थिति प्राप्त करने के उपरान्त शांत चित्त, सरल, निःस्पृह एवं उदार बन सके, तभी वह पूर्ण है, अन्यथा उसकी उच्चता का कोई अर्थ ही नहीं।

संसार की जितनी त्याज्य वस्तुएं हैं, वे ही भगवान शिव का अर्घ्य बनने की उपयुक्त सामग्री मानी गई हैं इसी प्रकार जो संसार के सर्वाधिक त्याज्य एवं पतित लोगों को आत्मसात् करने की भावना से युक्त हो, वही 'शिव' हो सकता है। सद्गुरु भी यही क्रिया करते हैं। इसी कारणवश उन्हें 'प्रकट शिव' ही माना जाता है।

शिव तो एक भाव है -

न भूर्मिन् चापरे न चहिन् वायु
न चाकाशमासते न तन्द्रा न निद्रा।
न श्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो।
न वस्त्यास्ति मूर्तिस्तिमूर्ति तमीडे ॥

- (शंकराचार्य)

अर्थात् 'जो न मृथ्यु है न जल है, न अग्नि है, न वायु है और न आकाश है, न तन्द्रा है, न निद्रा है, न श्रीष्म है, न शीत है, जिनका न कोई देश है, न वेश है; उन मूर्तिहीन त्रिमूर्ति की मैं वंदना करता हूँ।'

यही सद्गुरु का भी स्वरूप है, क्योंकि जिस प्रकार 'शिव' समत्व पर आसीन हैं, योगगम्य हैं, उसी प्रकार सद्गुरु भी अन्तःकरण से केवल योगगम्य हैं। ऐसे गुरु एवं शिव को मैं

भगवान् शिव-शरणी द्वे संसार को प्रदान की

शांभवी-तात्त्वात्मक शिवध्या

शिव का आत्म साक्षात्कार करना ही शांभवी क्रिया है
योग गुरु उचित समय पर शिष्य को शांभवी दीक्षा देते हैं

शांभवी शक्ति ज्ञानरण प्रक्रिया है
इस बार श्रावण मास में सम्पन्न करें

शांभवी मंत्रों से आपूर्ति

जिसमें सांसारिक कामनाओं से शिव दर्शन की यात्रा है

भगवान् शिव अपनी भक्तवत्सलता के कारण ही सभी के प्रिय देव हैं, तभी तो उन्हें देवाधिदेव महादेव कहा गया है। इसी कारण तो जहां प्रत्येक दैवीय शक्ति के लिए वर्ष में एक या दो दिन का निर्धारण किया गया है, वहाँ भगवान् शिव की आराधना के लिए पूरा एक मास ही निर्धारित है। वह मास है - 'श्रावण', जिस माह में जिस किसी भी उद्देश्य से भगवान् शिव की आराधना की जाय, वह निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

यदि देखा जाय तो भगवान् शिव की साधना गृहस्थ साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि भगवान् शिव समस्त रूपों में साधक की मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। वे बाधाओं का निराकरण करने में समर्थ हैं। पूर्णतः निर्लिपि और निराकार होते हुए भी भगवान् शिव पूर्ण गृहस्थ हैं, इसी कारण विभिन्न रोगों के हर्ता हैं, औघड़दानी बन कर भी रंक को एक ओर जहां वे योगियों के इष्ट हैं, वहाँ दूसरी ओर गृहस्थों राजा बनाने की सामर्थ्य रखते हैं; दूसरी ओर स्वयं शमशान के भी आराध्य देव हैं। भगवान् शिव की आराधना प्रत्येक वर्ग में रहते हुए, भस्म लपेटे हुए उसी प्रकार से आनन्दित करता है - 'गृहस्थ' इस कामना के साथ, कि उसे पूर्ण रूप से रहते हैं, जिस प्रकार वे कैलाश पर्वत पर भगवती पार्वती गृहस्थ सुख प्राप्त हो सके; 'स्त्रियां' अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए; 'कुमारियां' श्रेष्ठ पति की प्राप्ति के लिए; वहाँ दूसरी ओर 'योगी' शिवत्व प्राप्ति के लिए उनके ब्रह्मस्वरूप की आराधना करते हैं।

भगवान् शिव सिर्फ एक रूप में ही नहीं, अपितु विभिन्न रूपों में साधक की मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। वे एक ओर तो कुबेराधिपति हैं, वहाँ महामृत्युञ्जय स्वरूप में विभिन्न रोगों के हर्ता हैं, औघड़दानी बन कर भी रंक को एक ओर जहां वे योगियों के इष्ट हैं, वहाँ दूसरी ओर गृहस्थों राजा बनाने की सामर्थ्य रखते हैं; दूसरी ओर स्वयं शमशान के साथ रहते हैं। इन्हीं भगवान् शिव की आराधना करने वाले योगी परमानन्द की प्राप्ति करते हैं।

भगवान् शिव की उपासना करना विश्व का सर्वाधिक प्राचीनतम कृत्य है और यदि शिव उपासना 'शांभवी विद्या'

द्वारा की जाय, तो वह अन्यतम फलप्रदायक होती है। इसके महत्व का आभास एक बात से ही हो जाता है, कि यदि 'शाम्भवी विद्या' किसी को ज्ञात है, तो उसके स्पर्श से प्राणी इक्कीस कुलों के साथ मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

**दर्शनात् स्पर्शनात् तस्य
त्रिसम्भुलसंयुताः ।
जबा मुक्तिपदं व्यान्ति किं
युक्तस्तत्परायणाः ॥**

इन्हें अधिक महत्व के कारण ही इस विद्या को अत्यधिक गोपनीय रखने का आदेश है -

**गुद्धाद् गुद्धतरा विद्या न देवा यस्य कस्यचित् ।
एतज्ज्ञानं वसेद् स देशः पुण्यभाजनम् ॥**

अर्थात् 'यह विद्या गुद्धाति गुद्धतर है, जिसे किसी सामान्य व्यक्ति को बताना ही नहीं चाहिए। यह ज्ञान जहां है, वह क्षेत्र 'पुण्य क्षेत्र' है तथा वहां के निवासी पुण्यात्मा हैं।'

'शाम्भवी विद्या' के बारे में अनेक धर्मग्रन्थों यथा श्रीमद्भगवद्गीता, पातञ्जल योगसूत्र, हठयोग प्रदीपिका तथा घेरण्ड संहिता में वर्णन प्राप्त होता है। घेरण्ड संहिता में इस विद्या का महत्व प्रतिपादित करते हुए उद्धृत है -

'शाम्भवी यो विजानाति स च ब्रह्म न चान्यथा'

अर्थात् 'शाम्भवी विद्या जानने वाला स्वयं ब्रह्म (शिव) स्वरूप हो जाता है।'

उपरोक्त विवेचन से शाम्भवी विद्या का महत्व और गोपनीयता; पूर्ण स्पष्ट हो रही है। इसलिए शास्त्रानुसार शाम्भवी विद्या के जानकार 'गुरु' के बारे में भी स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है -

**दृष्टिः स्थिरा यस्य विनैव दृश्यं,
वायुः स्थिरो यस्य विना प्रयत्नम् ।
चित्तं स्थिरं यस्य विनावत्तम्बं;
स एव शोणी स गुरुः स सेव्यः ॥**

ऐसे सिद्ध गुरु के द्वारा ही शाम्भवी विद्या का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए, क्योंकि इस विद्या के जानकार गुरु सामान्य दिखते हुए भी अध्यात्म रूप में शिव के पूर्ण अंशस्वरूप होते हैं। शाम्भवी विद्या को आदिशक्ति उमा स्वरूपिणी कहा गया है और शम्भु से आविर्भूता भी कहा गया है -



**आदिशक्तिरूपा चैवा भक्तो जन्मवती पुरा ।
अर्थुना जन्मसंस्कारात् त्वमेको लब्धवानसि ॥**

व्यक्ति भगवान शिव की आराधना कर अपने जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लेता है, चाहे वह उसकी धन सम्बन्धी समस्या हो या रोग मुक्ति, कुटुम्ब सुख प्राप्ति या फिर पौरुषता से सम्बन्धित हो।

संन्यासी इष्ट प्राप्ति हेतु, वाक् सिद्धि व साधनाओं में श्रेष्ठता प्राप्ति हेतु भगवान शिव की साधना को सम्पन्न करते हैं।

श्रावण मास प्रत्येक साधक के लिए विशेष महत्व रखता है। प्रत्येक साधक श्रावण मास की प्रतीक्षा करता है, इस माह विशेष में साधना करने के लिए और इसके लिए वह पहले से ही साधना की तैयारी कर अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने का प्रयत्न करता है।

श्रावण मास के महत्वपूर्ण अवसर पर आपके जीवन की विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु श्रावण के प्रत्येक सोमवार पर 'शाम्भवी साधनाएं' दे रहे हैं। ये साधनाएं सर्वथा गोपनीय रही हैं, जो इन विशेष दिवसों पर ही पूर्णता के साथ सम्पन्न की जा सकती हैं।

पहला सोमवार (दिनांक 13 जुलाई 2009)

श्रावण मास के प्रथम सोमवार को साधक अपनी भौतिक और सांसारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना सम्पन्न करें -

- ◆ यदि साधक क्रष्ण सम्बन्धी समस्या से उलझा हुआ है, तो वह क्रष्ण मुक्ति हेतु इस दिवस को भगवान शिव की आराधना सम्पन्न करें।
- ◆ इस दिन साधना सम्पन्न करने से साधक को जीवन में अतुलनीय धनागम का स्रोत प्राप्त होता है।
- ◆ यदि साधक अल्प समय में ही पूर्ण ऐश्वर्य का उपयोग करना चाहता है, तो यह दिवस श्रेष्ठतम दिवस है।
- ◆ इस दिवस पर साधना सम्पन्न कर कुबेर भी देवताओं के कोषाध्यक्ष कहलाये, अतः इस दिन साधकों को इस साधना को अवश्य करना चाहिए।

साधना विधान

- ★ इस दिन साधक रात्रि में स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण करें।
- ★ लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर ताम्रपात्र में 'हीं' बीज हल्दी से अंकित कर 'शिव कुबेर यंत्र' को स्थापित करें।
- ★ पांच पीले पुष्प चढ़ाकर शिव कुबेर यंत्र का पूजन करें।
- ★ 'कुबेर माला' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ हीं कुबेराय फट् ॥

- ★ मंत्र जप समाप्ति के बाद अगले दिन यंत्र व माला नदी में विसर्जित कर दें।

साधना समग्री - 300/-



जैसी श्रद्धा तैसा ही बनता है त्यतिरिक्त

श्रद्धा के अनुरूप ही मनुष्य का व्यक्तित्व बनता है। उसका चिंतन, कार्यकलाप उसके अंतस की श्रद्धा के अनुरूप ही बनते हैं। श्रद्धा का अर्थ विश्व की विराट शक्ति में ही अदृट विश्वास रखना नहीं है, बल्कि अपने विराट स्वरूप में भी विश्वास रखना है। श्रद्धा ही मनुष्य जीवन को कर्म की प्रेरणा देती है। जीवन की सम्पन्नता और सार्थकता मनुष्य की श्रद्धा पर ही निर्भर है। जिन मनुष्यों ने श्रद्धा को जीवन का प्रकाश माना, वे जीवन संघर्ष में सदैव अजेय बने रहे। अपनी दिव्यता में विश्वास और दिव्यता की आदि-शक्ति में अडिग श्रद्धा के कारण ही मनस्वी व्यक्ति अपने अंतस से साहस और शक्ति की प्रेरणा पाते रहते हैं।

यदि हमने जीवन में श्रद्धा के दीप को संजो रखा है, तो यह दीप एक दिन सूरज भी बन सकता है जिसके आगे अंधेरा और आंधियां कुछ नहीं कर पाएंगी। जीवन की समस्त व्याधियों की अमृतोपम औषध यह श्रद्धा बाहर से लाने की वस्तु नहीं है, वह तो हमारे अंदर है। उसे तर्क से नहीं पाया जा सकता। किसी वस्तु में श्रद्धा करने से न केवल वह वस्तु जीवित और शक्तिवान दिखने लगती है, अपितु सारा जीवन एक नई शक्ति और उमंग से भर जाता है।

श्रद्धा के उद्भव के साथ मन में जिस अदम्य साहस का उदय होता है, वही श्रद्धा की दिव्यता का सबसे बड़ा प्रमाण है। श्रद्धा से ही श्रद्धा को पाया जा सकता है। श्रद्धापूर्ण समर्पण के बाद हमें अपने अंदर एक नवीन स्फूर्ति का अनुभव होता है, नवीन दृष्टि प्राप्त होती है और प्रतीति सजीव हो उठती है कि हम किसी महती शक्ति के सम्मुख खड़े हैं। श्रद्धा मनुष्य को अतुल सामर्थ्य प्रदान करती है।



दूसरा सोमवार (दिनांक 20 जुलाई 2009)

साधक अपने जीवन में निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इस प्रयोग को करें -

- ◆ घर में कलह है या अशांति है, तो व्यक्ति कुटुम्ब सुख की प्राप्ति हेतु यह प्रयोग सम्पन्न करें।
- ◆ भगवान शिव का एक स्वरूप 'वैद्यनाथ' भी है, जिसकी साधना कर व्यक्ति पूर्णतः रोगमुक्त हो सकता है।
- ◆ यदि व्यक्ति के विवाह में बाधाएं आ रही हों या विवाह हेतु अवसर ही नहीं बन रहे हों, तो भी व्यक्ति यह साधना सम्पन्न कर सकता है।
- ◆ यदि साधक पुरुषोचित सौन्दर्य प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है, तो पूर्ण पौरुषत्व प्राप्ति हेतु यह प्रयोग अत्यन्त उपयोगी है।
- ◆ सौन्दर्य की कामना प्रत्येक स्त्री के मन में होती है, इस कामना को पूर्ण करने के लिए प्रत्येक साधिका को यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
- ◆ भूमि, भवन और वाहन, जो कि वर्तमान समय में व्यक्ति के जीवन की अनिवार्यता बन गये हैं, इनकी प्राप्ति हेतु भी साधक इस प्रयोग को सम्पन्न करें।



साधना विधान

- ★ साधक सफेद वस्त्र धारण कर यह साधना प्रातः 5 से 6 बजे के मध्य प्रारम्भ करें।
- ★ लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर, उस पर गुलाब की पंखुड़ियों से 'वं' बीज अंकित कर 'सौन्दर्या यंत्र' स्थापित करें।
- ★ यंत्र का पूजन सात गुलाब के पुष्प चढ़ा कर करें।
- ★ 'कामदेव माला' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

// ॐ वं रति प्रियायै फट् //

- ★ मंत्र जप समाप्त होने पर आरती करें तथा अगले दिन यंत्र तथा माला को श्वेत रंग के वस्त्र में बांधकर नदी में विसर्जित करें।

साधना सामग्री - 320/-

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

तीसरा सोमवार (दिनांक 27 जुलाई 2009)

इस विशेष दिवस पर साधक अपनी निम्न कामनाओं की पूर्ति हेतु यह प्रयोग करें -

- ◆ इष्ट की प्राप्ति हेतु। ◆ भगवान शिव के प्रत्यक्ष दर्शन हेतु। ◆ गुरु धन प्राप्ति हेतु।
- ◆ राज्य बाधा की निवृत्ति हेतु। ◆ अकाल मृत्युभय निवारण हेतु।

साधना विधान

- ★ साधक पीले वस्त्र धारण कर यह साधना सम्पन्न करें।
- ★ यह साधना रात्रि को 9 से 10 बजे के मध्य प्रारम्भ करें।
- ★ लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछायें तथा उस पर केसर से 'शं' बीज अंकित कर उस पर 'शिवत्व प्राप्ति यंत्र' को स्थापित करें।
- ★ यंत्र का पूजन नौ (9) श्वेत पुष्प (यदि कमल पुष्प हों, तो अति उत्तम है) चढ़ा कर करें।

☆ ‘शिवत्व माला’ से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें -

मंत्र

॥ॐ. शं राज्याधिपतये साम्ब सदा शिवाय नमः ॥

☆ साधना समाप्त होने के अगले दिन पीले वस्त्र में यंत्र व माला को मौली से लपेट कर किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 260/-



चौथा सोमवार (दिनांक 3 अगस्त 2009)

यह विशिष्ट दिवस साधकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बन कर आया है, क्योंकि साधक इस दिन निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं -

- ❖ मनोकामना पूर्ति हेतु एवं वाक् सिद्धि हेतु।
 - ❖ पुत्र प्राप्ति हेतु।
 - ❖ शत्रु संहार हेतु।
 - ❖ मुकदमों में सफलता पाने के लिए।

साधना विधान

☆ साधक श्वेत वस्त्र धारण कर यह साधना सम्पन्न करें।

★ यह साधना प्रातः या रात्रि किसी भी समय अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर सकते हैं।

★ लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें, उस पर पीले रंग से रंगे चावलों की ढेरी पर 'महादेव यन्त्र' को स्थापित करें।

★ यंत्र का 11 बिल्ल्यु पत्र चढ़ाकर पुजन करें।

☆ ‘रुद्र माला’ से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें -

३८

॥ॐ महादेवाय रुद्राय हं ॥

☆ साधना समाप्ति के अगले दिन साधक यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 330/-

A decorative horizontal separator consisting of ten small diamond-shaped icons arranged in a row.

इन साधनाओं को आप कहीं भी बैठकर सम्पन्न कर सकते हैं। यदि उस दिन आप यात्रा पर हैं, होटल में या किसी भी अन्य स्थान पर हैं, तो भी आप वहां पर यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं। यदि आप किन्हीं कारणवश इन साधनाओं को सम्पन्न नहीं कर पाते हैं, तो इसे आपकी पत्नी या योग्य पंडित भी आपके नाम का संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है।

आप अपनी आवश्यकतानुसार चारों प्रयोग कर सकते हैं अथवा कोई एक या दो या फिर तीन। फिर भी ज्यादा उचित यही होगा, कि आप चारों सोमवार के प्रयोगों को सम्पूर्ण करें, क्योंकि गया हुआ वक्त वापिस लौट कर नहीं आता, अतः यह अद्वितीय अवसर चूकना आपकी न्यूनता का ही घोतक होगा।

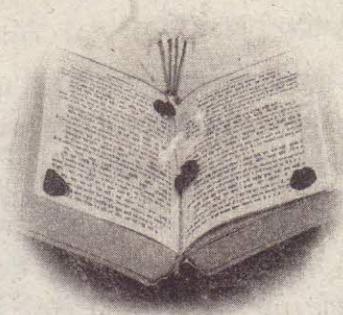


बौद्ध शास्त्र कहते हैं -

**महाचीन उग्रतारा
उनकी प्रधान तांत्रोक्त देवी हैं**

हिन्दु शास्त्र कहते हैं -

**भृगुवर्ती तारा
दस महाविद्याओं में प्रधान है**



तारा के सम्बन्ध में बौद्ध-हिन्दु मत-मतान्तर है

लेकिन एक बात सिद्ध है

भृगुवर्ती तारा तीव्र तांत्रोक्त देवी है

जिसके तीन प्रधान स्वरूप हैं, उग्रतारा, एक जटा तारा और नील सरस्वती तारा। जो 'साधक' तारा साधना करता है वह जीवन में 'तर' जाता है अर्थात् शोक, रोग, दुःख, खारिक्य को समाप्त कर अपने जीवन का अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

बौद्ध मतानुसार - तारा एक बौद्ध देवी हैं, ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है। हिन्दुओं ने बौद्धों की देवी महाचीन तारा को तारा नाम से अपना लिया।

बौद्ध धर्म पर जंब महायान सम्प्रदाय का प्रभाव बढ़ा, तो उन्होंने विकाया धारण को तथा ध्यानी बुद्ध अपनाया। प्रत्येक बुद्ध को एक बोधिसत्त्व व एक शक्ति रूपी देवी से जोड़ दिया गया। इस तरह अवलोकितेश्वर का सम्प्रदाय तारा से जुड़ा।

महाचीन तारा को ही उग्रतारा कहते हैं। उग्रतारा दस महाविद्या देवियों में एक मानी गई हैं। दस महाविद्या की देवियां काली, तारा, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, बगला, धूमावती, कमला, मातंगी, घोड़शी व भैरवी हैं। तारा अपने भक्तों की सभी तरह के खतरों व दुर्योगों से रक्षा करती हैं। वह सभी बौद्ध व बोधिसत्त्वों की माँ मानी गई हैं। वह प्रजनपारमिता के नाम से भी जानी जाती है। महायान सम्प्रदाय के भारतवर्ष में लोकप्रिय हो जाने तथा उसके तिब्बत और चीन तक प्रसारित हो जाने तक तारा एक सर्वमान्य देवी हो चुकी थीं। इस देवी की प्रार्थना से दस महाभय दूर हो जाते हैं। उग्रतारा महायान सम्प्रदाय के बौद्धों की देवी हैं तथा शाक्त तारा निःसन्देह उनका रूपांतर।

बौद्ध और ब्राह्मण दोनों ग्रंथों में देवी तारा को स्थान मिला है। बौद्ध ग्रंथ 'साधन माला' में उन्हें स्थान मिला ही है तथा 'तंत्र सार' में भी उनका वर्णन है।

'साधन माला' में इस देवी का वर्णन इस प्रकार किया जाता है - देवी का जटा मुकुट अग्निमय है तथा खैरी (Brown) रंग का है। उसमें अक्षोभ्य की आकृति है। देवी प्रत्यालीढ़ ढंग से खड़ी हैं, उनके गले में लटक रही मुण्डों की माला भय उत्पन्न करती है, उनका उदर फैला हुआ है तथा अपने छोटे कद में वे भयंकर दिखती हैं; उनका रूप-रंग नील कमल के समान है - एक चेहरा, तीन आंखें भव्य होते हुए भी भयंकर रूप से हंसती हैं, वे सर्पों की माला से अलंकृत हैं तथा अत्यन्त प्रसन्न दिखाई देती हैं, उनकी गोल आंखें लाल हैं, फैली हुई जिह्वा तथा विषैले दांत; शव के ऊपर खड़ी वे पूर्ण यौवनवती दिखती हैं; कमर तक वे सिंहचर्म से ढंकी हुई हैं, वे पांच मंगलकारी चिह्नों से युक्त हैं, उनके दो दायें हाथों में तलवार और कारटी है तथा दो बायें हाथों में उत्पला और कपाल।

तारा के बौद्ध देवी होने के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिये जाते हैं -

1. हिन्दू तंत्र शास्त्र में तारा मूर्ति की आध्यात्मिक व्याख्या का अभाव।
2. हिन्दुओं की देवी तारा की ध्यानमण्ड पंचमुद्रा की मूल व्याख्या तथा बौद्धों की समीचीन व्याख्या।
3. हिन्दू तंत्र में एकजटा नाम का कोई अर्थ नहीं।
4. अक्षोभ्य शब्द की गलत व्याख्या। तारा के मस्तक पर अक्षोभ्य अवस्थित होने के कारण-निर्णय में हिन्दुओं की असमर्थता तथा बौद्धों का सही कारण-निर्णय।

5. बौद्ध देवी एकजटा की अवतार मूर्ति महाचीन तारा के साथ हिन्दू तारा की समानता।

6. बौद्ध तारा के पूर्व हिन्दू तारा के अस्तित्व का प्रमाणभाव।

7. बुद्धदेव से वशिष्ठ को तारा मंत्र की प्राप्ति।

8. बौद्ध सिद्ध नागार्जुन द्वारा देवी तारा की पूजा का प्रसार।

हिन्दू आचार्यों की तरफ से इनके उत्तर इस प्रकार दिये गये -

1. तांत्रिक सम्प्रदाय के गुरु उपयुक्त शिष्य के अतिरिक्त किसी दूसरे को कोई रहस्य नहीं बतलाते थे। अयोग्य को विद्यादान तथा विद्या का रहस्य बतलाने का शास्त्रीय निषेध है - यह आज भी देखा जाता है। सम्प्रदाय परम्परा में जो रहस्य विद्या के नाम से जाना जाता है, उसे उन्होंने ग्रंथों में भी स्थान नहीं दिया। इसलिए उन्होंने एकजटा नाम का रहस्य तथा तारा के मस्तक में अवस्थित अक्षोभ्य के कारण की व्याख्या भी नहीं की। 'तोड़ल तंत्र' में अक्षोभ्य का जो अर्थ देखा जाता है, वह रहस्य विद्या नहीं है। अतः रहस्य प्रकाश नहीं करना अज्ञता नहीं है। फिर तोड़ल तंत्र के अक्षोभ्य तथा तारा के मस्तक स्थित अक्षोभ्य एक नहीं है।

2. बौद्ध शास्त्रों में शब्दों का अर्थ जिस-जिस रूप में व्यवहृत होता है, मुद्रा शब्द का कपाल अर्थ अन्यत्र प्रसिद्ध नहीं होने पर तंत्र में क्या यह प्रयुक्त नहीं हो सकता है? ध्यानोक्त शब्द की प्रधानता नहीं है, अर्थ ही प्रधान है। कपाल पंचक भूषित तारा ही जब हिन्दुओं की उपास्या है, तब मुद्रा शब्द का कपाल अर्थ में प्रसिद्ध नहीं होने के कारण इसे इसी अर्थ में ग्रहण करना होगा। वास्तव में चिह्नार्थक और अलंकारार्थक मुद्रा शब्द का इस तरह का अर्थ असमीचीन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि काली, तारा आदि देवियों की मुण्डमाला, पंचमुद्रा ही अलंकार है। बौद्धों ने मुद्रा शब्द की जो व्याख्या की है, वह तारा के ध्यान व मूर्ति में नहीं देखी जाती है। बौद्ध तारा तथा हिन्दू तारा के ध्यान व मूर्ति यदि एक हैं, तो अहिंसा के पुजारी बौद्धों द्वारा नरास्थि द्वारा मुद्रा का निर्माण दूसरों का अनुकरण ही है। देव-देवियों की मूर्तियों में नरास्थि का व्यवहार वेद और आगम में भी देखा जाता है। बुद्ध ने स्वयं किसी ग्रंथ की रचना नहीं की तथा बौद्ध शास्त्र में इसका कहीं उल्लेख भी नहीं है। बुद्ध के शरीर के त्याग करने के बहुकाल पश्चात् बौद्ध धर्म का अधःपतन होने पर बौद्धों ने जिन तंत्रों की रचना की, वे हिन्दू तंत्र

की ही नकल थीं। कोई किसी विषय पर सुन्दर व्याख्या कर उसे अपना निजी नहीं कह सकता।

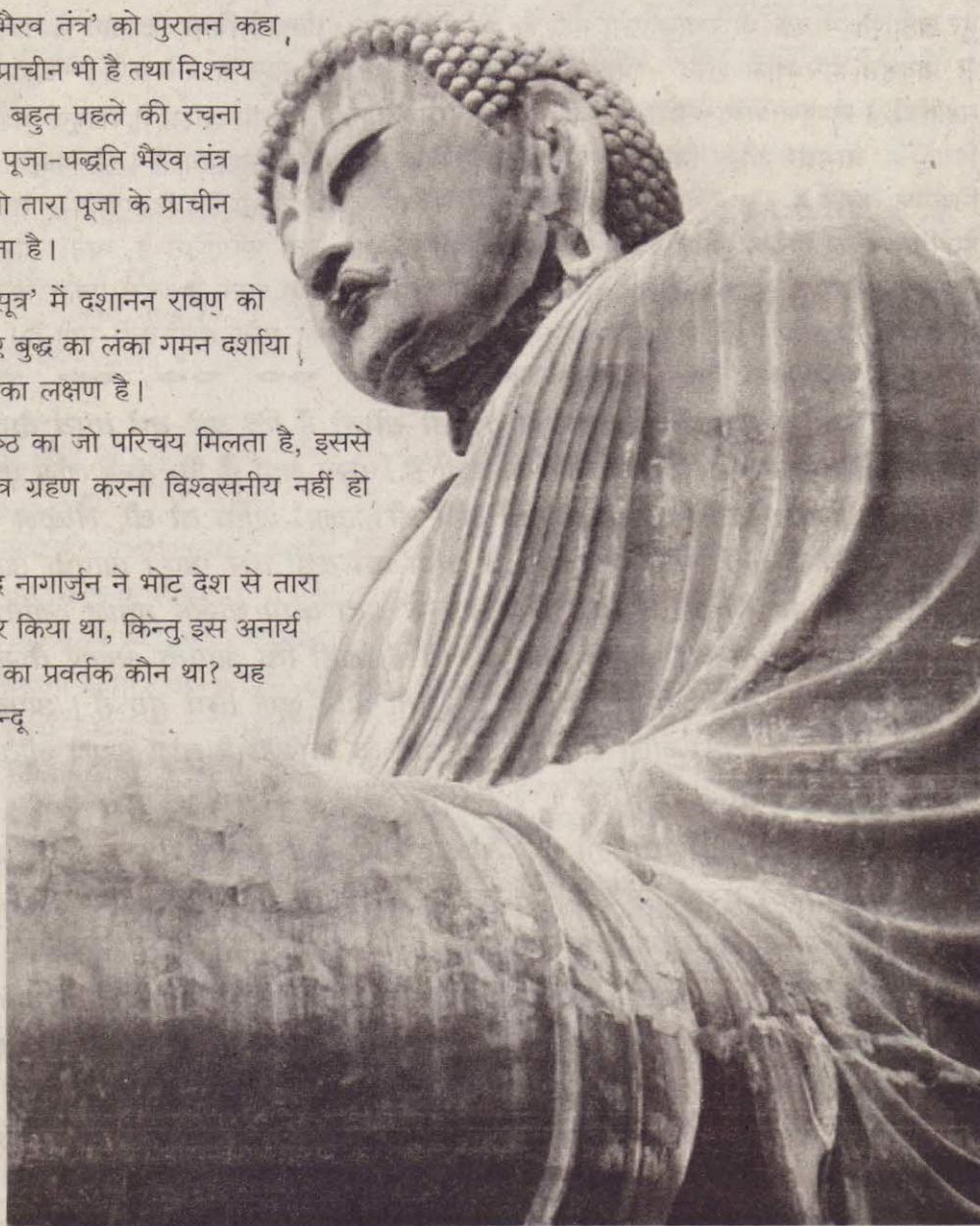
3. एकजटा शब्द का सहज अर्थ सभी को जात है, किन्तु इसका आध्यात्मिक अर्थ अप्रकाश्य है, अतः व्याख्या निष्प्रयोजन है।
4. अक्षोभ्य शिव तारा के सिर्फ मस्तक में ही नहीं रहते हैं, उनके पांव के नीचे भी रहते हैं। बौद्ध मूर्ति शास्त्र के अनुसार तारा के मस्तक में ध्यानी बुद्ध अक्षोभ्य स्थित हैं। हिन्दुओं ने तारा के मस्तक में अक्षोभ्य को रखा तथा उन्हें अन्य किसी मूर्ति में नहीं रखा, इसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता है।

अधिदेव द्वारा अध्यात्म का तात्पर्य बतलाने से अधिदेव अर्थात् देवोपासना में लोगों की अश्रद्धा होती, अतः इसका रहस्य नहीं बतलाया गया।

इसके अलावा सिर्फ योग्य शिष्य ही गुरु से रहस्य जान सकता है, सर्व साधारण नहीं।

5. बौद्ध देवी 'एकजटा' के साथ हिन्दू देवी तारा के साम्य रहने तथा बौद्ध देवी 'एकजटा' के पहले हिन्दू तारा का अस्तित्व प्रमाणित नहीं होने पर भी तारा को बौद्ध देवी नहीं कहा जा सकता।
6. सावर्ती शताब्दी के मध्य में सिद्ध नागार्जुन एकजटा पूजा के प्रवर्तक थे, अतः तारा इसके पूर्व की नहीं हो सकतीं, किन्तु सिद्ध नागार्जुन ने ही 'भैरव तंत्र' को पुरातन कहा है। वास्तव में यह अति प्राचीन भी है तथा निश्चय ही सातवीं शताब्दी के बहुत पहले की रचना है। यदि तारा मूर्ति की पूजा-पद्धति भैरव तंत्र के अनुसार रची गई, तो तारा पूजा के प्राचीन होने का ही समर्थन होता है।
7. बौद्ध ग्रंथ 'लंकावतार सूत्र' में दशनन रावण को तंत्र उपदेश दान के लिए बुद्ध का लंका गमन दर्शया गया है। यह प्रक्षिप्ता का लक्षण है। रामायण आदि में वशिष्ठ का जो परिचय मिलता है, इससे वशिष्ठ का बुद्ध से मंत्र ग्रहण करना विश्वसनीय नहीं हो सकता।
8. कहा जाता है, कि सिद्ध नागार्जुन ने भोट देश से तारा साधना पद्धति का उद्घार किया था, किन्तु इस अनार्य भोट देश में तारा पूजा का प्रवर्तक कौन था? यह भी हो सकता है, कि हिन्दू तारा को ही किसी ने भोट देश में पूजा के लिए अपनाया हो।

इस तरह हिन्दू आचार्य तारा को बौद्ध देवी मानने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हैं। तारा वैसे ही उनकी एक भगवती देवी हैं, जैसे मां काली। स्पष्ट है कि तारा सभी शास्त्रों एवं धर्मों की आराध्या देवी हैं।



तात्रीक द्वारा दसाइना

ऋषियों द्वारा निर्मित श्रौत-सिद्धान्तों के अनुसार इस विभक्त किया गया। 'निगम' रूप में ये विद्याएं दशावयवविद्या पूरे ब्रह्माण्ड में एक भी स्थान ऐसा नहीं है, जो वाक्-तत्त्व से प्रादुर्भूत होने वाले शब्द - प्रपञ्चों से रिक्त हो; अतः के नाम से प्रसिद्ध हैं।

महर्षियों ने सम्पूर्ण शब्द-राशि को दो भागों में विभक्त कर दिया - 'आगम' और 'निगम'। ये दोनों ही विश्व का निरूपण करते हैं और 'शास्त्र विद्या' के नाम से प्रसिद्ध हुए। विश्व का प्रत्येक पदार्थ एक क्षुद्र विद्या है तथा सम्पूर्ण विश्व की विद्याएं मिलकर महाविद्या कहलाती हैं। इस महाविश्वविद्या को ही सृष्टिक्रम के अनुसार दस भागों में

निगम शास्त्र में सम्पूर्ण विश्व की रचना का आधार सूर्य को माना गया है। सौरमण्डल आग्नेय है, अतः हिरण्यमय कहलाता है। हिरण्यमय - मण्डल के मध्य में सौर-ब्रह्म हुए। तत्त्व प्रतिष्ठित है, अतः सौर ब्रह्म को ही 'हिरण्य-गर्भ' कहा जाता है। इस प्रकार विश्वाधिष्ठाता हिरण्यगर्भ पुरुष की शक्ति तारा कही गयी है।

इस दुनिया में ज्यादातर लोग यही सोचते हैं कि बड़े-बड़े कार्य केवल महान् व्यक्ति ही कर सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। ऐसा नहीं है कि कुछ लोग कोई काम इसलिए नहीं कर पाते कि उनमें शक्ति नहीं थी। उनमें शक्ति तो थी, लेकिन वे उस शक्ति को पहचान नहीं सके, इसलिए उस काम को नहीं कर पाए। आपके अन्दर जो शक्तियां छिपी हुई हैं, उनके द्वारा आप बड़े से बड़ा काम करके महान् व्यक्ति बन सकते हैं। हकीकत तो यह है कि आप जानते ही नहीं कि आपके अन्दर कैसी-कैसी शक्तियां छिपी हुई हैं। आपमें कितनी योग्यता और गुण छिपे हुए हैं। अपनी इन शक्तियों, योग्यताओं और गुणों से अनजान होने के कारण ही लोग अपने जीवन के उद्देश्य को हासिल नहीं कर पाते।

इस संसार में कुछ ही ऐसे लोग होते हैं, जो जीवन में स्वयं को पहचानकर अपने कामों को पूरा कर पाते हैं। ज्यादातर व्यक्ति तो अपने आपको न पहचान पाने के कारण अपने कामों को पूरा किए बगैर ही इस दुनिया से रुख्सत हो जाते हैं।

यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि कुछ व्यक्तियों को अपने जीवन में उचित समय पर गुरु प्राप्त हो जाते हैं जो उनका हाथ पकड़ कर उनके भीतर की शक्ति को जाग्रत करते हैं, उसे यह पहचान करते हैं कि उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है। गुरु यह क्रिया जब सम्पन्न करते हैं तो जीवन में एक प्रचण्ड विस्फोट होता है इसी को शक्तिपात, दिव्यपात, उदर्वपात कहा गया है।

आगम शास्त्र के अनुसार महातम के केन्द्र में उत्पन्न होने वाले सूर्य को 'नक्षत्र' कहा गया है, अतः उनकी शक्ति 'तारा' नाम से जानी गयी।

ओंकार (प्रणव) को 'तारक' कहा गया है और प्रणवस्वरूप होने के कारण ही भगवती 'तारा' है।

'तारा' शब्द का सरलार्थ है - उबारने वाली, तारने वाली। इस प्रकार दैहिक, दैविक और भौतिक - इन तीनों प्रकार के तापों के कारण ही भगवती 'तारा' कही गयी।

पतञ्जलि ने कहा है - 1. अविद्या, 2. द्रेष, 3. अस्मिता, 4. राग तथा 5. अभिनिवेश - इन पांच प्रकार के क्लेशों से भगवती तारा अपने साधक की रक्षा करती हैं।

तारा के प्रमुख तीन स्वरूपों की साधना इनके आराधकों द्वारा की जाती है -

1. उग्रतारा -

साधकों को कठिन दुःख से मुक्त करके भव सागर से पार उतारने वाली है। ये साधक को उग्र आपत्ति रूपी भव-बन्धन से मुक्त करने वाली हैं।

2. एकजटा -

ये अपने साधक को कैवल्य प्रदान करती हैं।

3. नील सरस्वती -

ये अपने साधक को ज्ञान, विद्या और बुद्धि प्रदान करने वाली हैं।

भगवती तारा के इन तीनों रूपों की साधना करना अत्यधिक फलदायी है, अतः वर्तमान समय में अपने जीवन को परिपूर्ण बनाये रखने के लिए, जीवन को प्रत्येक विपत्तियों से सुरक्षित रखने के लिए तथा घर में सम्पन्नता बनाये रखने के लिए, इन तीन तत्वों की प्राप्ति के लिए जो जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं, भगवती तारा की साधना करनी चाहिए।

तारा साधना कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है, इस साधना में पुरुष या स्त्री का भेद-भाव नहीं है। इस साधना को किसी भी जाति और वर्ण का व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, साथ ही इस साधना को सम्पन्न करने के लिए उम्र भी बाधक नहीं है, अतः चाहे बालक हो, चाहे युवक हो अथवा वृद्ध हो, कोई भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। पूर्ण विधान से

गुरु स्तवन

ॐ नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुस्त्विणे ।
विद्यावतारसं सिद्धये स्वीकृतानेकविग्रह ॥१॥
नारायणस्वरूपाय परमार्थेकस्त्विणे ।
सर्वज्ञानतमोभेदभाविने चिद्धनाय ते ॥२॥
स्वतन्त्राय दयाकलुप्रविग्रहाय शिवात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यस्त्विणे ॥३॥
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनां ।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनं ज्ञानदायिने ॥४॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यादुपर्याधः ।
सदा सच्चित्स्वरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥५॥

हे परम पूज्य नाथ! भगवन् सदगुरु धारी शिव!! आपको नमस्कार!!! इस चराचर जगत में विविध ज्ञान विद्या के उद्भव हेतु, सिद्धि हेतु आपने यह स्वरूप ग्रहण किया है, आप साक्षात् नारायण स्वरूप हैं, परमार्थ, सेवा, परमार्थ द्यान ही आपका शुद्धतम श्री विग्रह रूप है, सम्पूर्ण ज्ञान रूपी अंधकार दोष का भेदन करने वाले, चिदा नन्द घन स्वरूप! आपको नमो नमः! आप परम स्वतंत्र हैं, केवल शिष्यों, साधकों, जीवों पर कृपा, करुणा करने हेतु ही शरीर धारण किये हैं, स्वतंत्र होते हुए भी प्रेमवश अपने भक्तों, शिष्यों के अधीन हैं, कल्याणों के भी कल्याण, मंगलों के भी मंगल, भव्यों के भी भव्य, आपके रूप को नमस्कार, आप ही विवेकियों के विवेक, विचारकों के विचार, प्रकाशकों के प्रकाश हैं, ज्ञानियों को ज्ञान देने वाले आप ही श्री स्वरूप हैं, बार-बार नमस्कार, आपको आपका यह शिष्य हर दिशा में आपको हर ओर से प्रणाम करता है, केवल इतना ही

तांत्रोक्त तारा साधना विधान

तारा साधना किसी भी रविवार को प्रातः प्रारम्भ करनी चाहिये। क्योंकि तारा सूर्य की शक्ति है। तारा साधना तीन दिन नियमित करनी चाहिये, तारा साधना वर्ष में दो बार अवश्य करनी चाहिये।

साधक पहले से ही 'तांत्रोक्त तारा महायंत्र' एवं 'काली हकीक माला' अपने पास रखें। इस साधना में गुलाबी रंग (हल्के लाल रंग) की प्रधानता है, अतः साधक के वस्त्र एवं आसन गुलाबी ही हों। निर्धारित समय पर पूजा गृह में उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठें। बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछा दें और उस पर गुलाबी रंग के रंगे चावलों की तीन ढेरियां बना दें, इन ढेरियों पर एक-एक 'लौंग' रखें। तारा महायंत्र (चित्र हो तो उसे भी) को तीनों ढेरियों के पीछे गुलाब पुष्प पर स्थापित करें। धी का दीपक लगायें और पूजन प्रारम्भ करें -

आचमन

दाहिने हाथ में क्रमशः तीन बार आचमनी से जल लें और निम्न मंत्र का उच्चारण कर जल को होठों से लगायें -

ॐ ह्रीं त्रीं हं फट् ॥

अस्य श्रीतारामंत्रस्य अक्षोभ्य त्र्यग्निः, बृहती छन्दः
तारा देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्ति, त्रीं कीलकं, ममाभीष्ट
सिद्धये जपे विनियोगः ।

विनियोग करने के पश्चात् साधक 'मूँगा माला' से निम्न मंत्र की तेरह माला जप करें -

मंत्र
॥ॐ ह्रीं त्रीं फट् ॥

नीराजन

मंत्र जप के पश्चात् धी के दीपक से निम्न मंत्र बोलते हुए आरती करें -

नीराजनं सुमंगल्यं कपूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कं वहि सदृशं महादेवि! नमोऽस्तुते ॥

नमस्कार

नीराजन के पश्चात् नमस्कार करें -

नमः सर्वहितार्थार्थै जगदाधार हेतवे ।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मवाकृतः ॥

उपरोक्त वर्णित क्रम के अनुसार ही तीनों दिन पूजन करें।

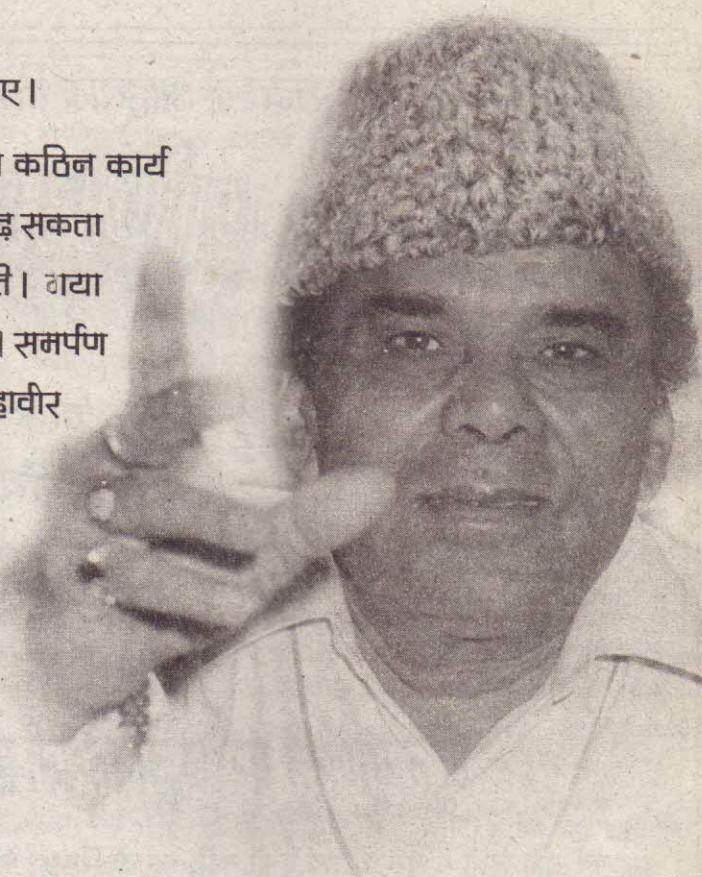
शिष्य धर्म

केवल गुरु से दीक्षा लेने या मंत्र जप करने से व्यक्ति शिष्य नहीं हो पाता ।
शिष्य का क्या अर्थ है? शिष्य किसे कहते हैं?

- ❖ शिष्य का अर्थ है कि जो सीखने के लिए, कुछ नया बनने के लिए तैयार हो ।
- ❖ शिष्य अपने विचारों से, मान्यताओं से, तर्क से बंधा नहीं होता । वह कली की तरह बंद न होकर, एक पुष्प के समान खिला हुआ होता है।
- ❖ जब व्यक्ति अपने विचारों गे गार्ड, मन्त्र होता हुआ गार्ड के

ऐश्वर्य। उसे तो केवल पूर्ण समर्पण चाहिए।

- ★ गुरु जो रास्ता बताए उस पर बढ़ना बहुत कठिन कार्य है। केवल हिमन्तवान व्यक्ति ही उस पर बढ़ सकता है, कायर और बुजदिल नहीं बढ़ सकते। गया बीता व्यक्ति पूर्ण समर्पण नहीं कर सकता। समर्पण के लिए तो व्यक्ति को वीर होना पड़ेगा। महावीर होना पड़ेगा।
- ★ जीवन में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आपने कितना धन कमाया या कितना झूठ बोला था, कितनी चोरी की? महत्वपूर्ण है कि आप गुरु के बताए रास्ते पर कितना चले, कितना गुरु कार्य किया, तुमने अंधेरे में कितने ढीपक जलाए?
- ★ मैं तुम्हारा हाथ पकड़ने को तैयार हूं, यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं तुम्हें सही रास्ते पर पकड़कर अग्रसर करूं। मैं ऐसा करूंगा ही, यह मेरा धर्म है और मेरे बताए हुए मार्ग पर चलकर ही आप पूर्णता तक पहुंच पाएंगे, अद्वितीय बन सकेंगे।
- ★ केवल चरण स्पर्श करके, गुरु को फूलों का हार पहनाने से कुछ नहीं होगा। गुरु जिस मार्ग पर ले जाकर आपको खड़ा करें उस पर आप अग्रसर हों वही जीवन की श्रेष्ठता है, उच्चता है।



गुरु पूर्णिमा पर सदगुरदेव ने आह्वान किया था

आहं श्रीष्ट्या पूर्णिमा हे



अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को इसके लिए लगाया है, अपनी सकूं, कि तुम आकाश में सुदूर ऊँचाई पर बिना थके पहुंच जवानी को हिमालय के पत्थरों पर धिस-धिस कर तुम्हें अमृत पिलाने का प्रयास किया है, तुम्हारे प्रत्येक जन्म में मैंने चेतना इन्द्र धनुष के रंगों पर रंग बिखरने के लिए तैयार कर सकूं, देने की कोशिश की है, और हर बार तुम्हारे मुरझाये हुए चेहरे जहां विस्तुत आकाश हो, जहां आनन्द का समुद्र लहलहा पर एक खुशी, एक आह्लाद एक चमक प्रदान करने का रहा हो, जहां प्रेम और मधुरता की शीतल बयार हो, जहां पूर्णता और सिद्धियां जयमाला लिये तुम्हारे गले में डालने के प्रयास किया है।

पर यह सब कुछ यों ही नहीं हो गया, इसके लिए मुझे तुमसे भी ज्यादा परिश्रम करना पड़ा है। मैंने अपने शरीर की बाती बना कर तुम्हारे जीवन के अंधकार में रोशनी बिखरने का प्रयत्न किया है, अपने प्राणों का दोहन कर उस अमृत जल से तुम्हारी बेल को सींचने का और हरी-भरी बनाये रखने का प्रयास किया है, तिल-तिल कर अपने आप को जलाते हुए भी, तुम्हारे चेहरे पर मुस्कराहट देने की कोशिश की है, और मेरा प्रत्येक क्षण, जीवन का प्रत्येक चिन्तन इस कार्य के लिए समर्पित हुआ है, जिससे कि मेरे मानस के राजहंस अपनी जाति को पहचान सकें, अपने स्वरूप से परिचित हो सकें, अपने गोत्र से अभिभूत हो सकें, और मेरे हृदय के इस मान संरोवर में गहराई के साथ ढुबकी लगाकर लौटते समय मोती ला सकें।

...और यह हर बार हुआ है, और यह पिछले जन्मों से होता रहा है, क्योंकि मैंने हर क्षण तुम्हारे लिए ही प्रयत्न किया है, मेरा जीवन अपने स्वयं के लिए या परिवार के लिए नहीं है, मेरा जीवन का उद्देश्य तो शिष्यों को पूर्णता देने का प्रयास है, और इसके लिए मैंने सिद्धाश्रम जैसा आनन्दायक और अनिर्वचनीय आश्रम छोड़ा और तुम्हारे इन मैले-कुचले, गलियारों में आकर बैठा, जो वायुवेग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए सक्षम था, उसे तुम्हारे लिए अपने आप को एक छोटे से वाहन में बंद कर लिया, जिसका घर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड था, और किसी भी ग्रह या लोक में विचरण करता हुआ जो निरन्तर आनन्दयुक्त था, उसने तुम्हारे लिए अपने आप को एक ढोने ये घर में आकर उन्हें

सको, और उस ब्रह्मत्व का आनन्द ले सको, मैं तुम्हें उन पिलाने का प्रयास किया है, तुम्हारे प्रत्येक जन्म में मैंने चेतना इन्द्र धनुष के रंगों पर रंग बिखरने के लिए तैयार कर सकूं, जहां विस्तुत आकाश हो, जहां आनन्द का समुद्र लहलहा पर एक खुशी, एक आह्लाद एक चमक प्रदान करने का रहा हो, जहां प्रेम और मधुरता की शीतल बयार हो, जहां पूर्णता और सिद्धियां जयमाला लिये तुम्हारे गले में डालने के लिए उद्यत और उत्सकु हों।

और यह सब बराबर हो रहा है, तुमने अपने आपको पहली बार पहचानने का प्रयत्न किया है, पहली बार यह अहसास किया है, कि तुम संसार में अकेले नहीं हो, कोई तुम्हारा रखवाला अवश्य है, जो तुम्हारे जीवन की बराबर चौकीदारी कर रहा है, कोई ऐसा व्यक्तित्व तुम्हारे जीवन में अवश्य है, जिसे अपनी चिन्ताएं, परेशानियां और समस्याएं खुशी-खुशी देकर अपने आपको हल्का कर सकते हो, और मुझे तुम जो दे रहे हो, उससे मुझे प्रसन्नता है।

क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं, क्योंकि तुम्हारे पांव मेरे पांव के साथ आगे बढ़ रहे हैं, क्योंकि मैं तुम्हारे जीवन का ध्यान रखने वाला, तुम्हारे जीवन को आह्लाद कारक बनाने वाला और तुम्हारे जीवन के प्रत्येक क्षण का हिसाब-किताब रखने वाला साथ हूं।

मैं इन सब के लिए ही गुरु पूर्णिमा पर आवाज दे रहा हूं, क्योंकि यह तुम्हारा स्वयं का पर्व है। यदि शिष्य सही अर्थों में शिष्य है, यदि सही अर्थों में वह मेरी आत्मा का अंश है, यदि सही अर्थों में मेरी प्राणश्चेतना है, तो उसके पांव किसी भी हालत में रुक नहीं सकते, समाज उसका रास्ता रोक नहीं सकता, परिवार उसके पैरों में बेड़ियां डाल नहीं सकता, वह तो हर हालत में आगे बढ़ कर गुरु चरणों में, मुझ में एकाकार होगा ही, क्योंकि यह एकाकार होना ही जीवन की पूर्णता है, और यदि ऐसा नहीं हो सका तो वह शिष्यता ही नहीं है, वह तो कायरता है, बुजदिली है, कमजोरी है, नपुंसकता है, और मझे विश्वास है कि मैं

सदाबहार यौवन तो हर कोई पाना चाहता है

लेकिन क्या यह संभव है

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के पास कोई जवाब नहीं है
हमारे तंत्र विज्ञान में इसका उपाय है



अध्यूषित ज्ञान

तीढ़ बार करिये और यौवनवान बढ़िये

चिंता छोड़ो, सादा भोजन करो, व्यायाम करो समय पर दवाइयां लो, यह सलाह तो सभी डॉक्टर देते हैं। लेकिन सारी क्रियाएं यौवन को रथायी और मन को तरोताजा नहीं बना रही है। लोग असमय बृद्ध होते जा रहे हैं। शरीर मन थकने लगा है। इस का निवारण है अमृत्व साधना से जो कायाकल्प की अनृती साधना है।

पुरातन काल से ही मनुष्य की एक प्रमुख महत्वकांक्षा यह रही है, कि वह किसी प्रकार से चिर यौवनवान बना रह सके, वृद्धता को टाल सके। शायद इसीलिए सभी धर्मों में देवताओं को चिर यौवनवान बताया गया है, परन्तु दुर्भाग्यवश आम लोगों के साथ ऐसा नहीं है और वे अपने मन में यौवन का सपना संजोये हुए समाप्त हो जाते हैं।

इस बीसवीं सदी में वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयास किये हैं, कि वह मनुष्य को पुनः यौवन प्रदान कर सकें। इस समस्या का अबलोकन करने पर एक प्रश्न हमारे समक्ष उभरता है, कि मनुष्य की मूलतः आयु क्या मानी जाए वह कितने वर्ष जीने की आशा करे?

कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य को जितना समय युवा होने में लगता है, उसकी आयु उससे 6-7 गुनी अधिक होती है, अर्थात् यदि व्यक्ति 20 वर्ष में अपने यौवन को प्राप्त करता है, तो सामान्य रूप से उसकी आयु 120 वर्ष होनी चाहिए, जबकि ऐसा नहीं होता है। व्यक्ति की आयु 60-70 वर्ष की होती है या यूं कहें, कि वे वृद्धता की जंजीर में स्वयं ही अपने को बांध लेते हैं, जबकि वे थोड़ा सा प्रयत्न करें, तो चिर यौवनवान बने रहना कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है।

इस पृथ्वी पर कुछ गिने-चुने व्यक्ति ही होंगे, जिन्होंने 100 या इससे अधिक वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है और जीवित हैं, परन्तु इन्हीं अधिक आयु प्राप्त होने पर उनके शरीर जर्जर अवस्था तक पहुंच जाते हैं, सुनाई देना बंद होने लगता है, फिर चिरयौवन का स्वप्न पुनः स्वप्न ही रह जाता है।

ऐसा नहीं है, कि व्यक्ति वृद्ध होता है, बल्कि स्वयं को वृद्धता के आवरण में ढकने लगता है और उसकी यह प्रक्रिया 40 वर्ष की आयु के बाद से ही शुरू हो जाती है, जबकि अपवाद स्वरूप कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं, जो 70-80 वर्ष के हो गये हैं, किन्तु कार्य क्षमता 20-22 वर्ष के युवक से अधिक ही है और वे अत्यधिक कार्य कुशल भी हैं।

बिट्रेन की पूर्व प्रधानमंत्री मार्गेट थ्रेचर भा अधिक आयु प्राप्त होने के बाद भी किसी लाठी के सहारे चलती उनके चेहरे से झलकता आत्मविश्वास उनके उत्साह का ही परिचायक था। परन्तु ऐसे लोग अल्प संख्या में अपवाद स्वरूप ही हैं।

यदि मनुष्य में होने वाले परिवर्तनों पर वृष्टिपात किया जाय, तो सम्भवतः उनकी वृद्धता को समाप्त करने का उपाय मिल सकता है। बालों के सफेद होने का अर्थ वृद्धता नहीं वरन् यह तो वेह में घटित होने वाली प्रक्रिया है, जिस

प्रभाव बाह्य शरीर पर दिखाई देता है; पर बालों के सफेद होने पर ही व्यक्ति स्वयं को वृद्ध मान लेता है।

व्यक्ति साधारणतः अपने आसपास के वातावरण और जीवनचर्या से ज्यादा प्रभावित होते हैं और धीरे-धीरे प्रभावित होते हुए अपने यौवनकाल को समाप्त करने की ओर अग्रसर हो जाते हैं। **उदाहरणतः** या तो वे इतना अधिक भोजन करते हैं, कि उनके शरीर का वजन उनकी आयु से दो गुना या तीन गुना रहता है और वे व्यक्ति युवाकाल में ही वृद्ध बन जाते हैं या इतना अधिक मानसिक तौर से व्यथित रहते हैं, जिसकी वहज से वे नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते हैं, फलतः उनकी शारीरिक क्षमता प्रभावित होने लगती है और वे मानसिक रूप से इतना थक चुके होते हैं, कि उनका उल्लास, प्रसन्नता, सौन्दर्य शनैः-शनैः क्षीण होता जाता है।

मानसिक आघातों को सहन करते-करते व्यक्ति के विशेष अंग प्रभावित होने लगते हैं, तो वैज्ञानिक प्रभावित अंग को निकाल कर उसके स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति का अंग प्रत्यारोपित कर देते हैं, प्लास्टिक सर्जरी और कॉस्मेटिक सर्जरी के द्वारा मनुष्य के चेहरे की झुरियाँ समाप्त कर देते हैं या उनके बेडौल अंगों को सुडौल बना देने की प्रक्रिया करते हैं।

परन्तु अंग प्रत्यारोपण भी मनुष्य को यौवनवान नहीं बना सकता, कृत्रिम अंगों से व्यक्ति अपने आपको पूर्णतः रोगमुक्त नहीं मान पाता और मानसिक स्तर पर वृद्धता धारण करने लगता है। यदि मनुष्य का हृदय ही बुझा-बुझा रहेगा, प्रसन्न नहीं रहेगा, तो उसे कोई भी व्यक्ति यौवन नहीं दे सकता, यद्यपि व्यक्ति के यौवन को स्थिर रखने के अनेकों प्रयास हो रहे हैं।

उच्चीसर्वीं शताब्दी में 'ब्रॉउन सेकार्ड' एक चिकित्सा शास्त्री थे, उन्होंने मनुष्य के यौवनकाल को पुनः वापस लाने हेतु एक अर्क तैयार किया, परन्तु उसका प्रभाव अत्यल्प ही निकला - इसका प्रभाव कुछ समय तक तो रहता था, परन्तु स्थाई रूप से व्यक्ति को यौवन प्रदान करने में अक्षम था।

विज्ञान अब पुनः उन प्राचीन ग्रंथों की ओर जाने लगा है, जिनके माध्यम से ऋषि, योगी आदि हजारों वर्ष तपस्या के बाद भी युवा बने रहते थे -

- आखिर इसके पीछे क्या रहस्य हो सकता है?
- वे अपने आपको चिर यौवनवान बनाये रखने के लिए क्या प्रयोग करते थे?
- उनकी प्रसन्नता, उनके सौन्दर्य, उनके उद्घाम यौवन का क्या रहस्य हो सकता है?

अंग प्रत्यारोपण भी मनुष्य को यौवनवान नहीं बना सकता, क्योंकि कृत्रिम अंगों से व्यक्ति अपने आपको पूर्णतः रोगमुक्त नहीं मान पाता और मानसिक स्तर पर वृद्धता धारण करने लगता है।

- आखिर इसके पीछे कौन सी क्रिया थी?

इन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात हुआ एक ऐसी संन्यासिनी से, जिसने स्वयं को 70 वर्षों के बाद भी यौवनकाल ही बनाये रखा है। उसने बताया कि यह मात्र तंत्र के माध्यम से ही संभव है, कि व्यक्ति सौन्दर्यवान्, उद्घाम यौवन के वेग से आपूरित बना रहे और यह साधना 'अमृत्व साधना' कहलाती है, जिसके प्रभाव को उसने स्वयं अनुभव किया है और इसकी प्रामाणिकता को जांचा है।

उस संन्यासिनी से जो साधना हमें ज्ञात हुई, उसे पत्रिका के पाठकों और साधकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

साधना विधान

1. इस साधना में 'अमृताशन यंत्र' तथा 'कायाकल्प माला' की आवश्यकता पड़ती है।
2. यह एक दिवसीय साधना है, इसे किसी शुभ योग में अथवा किसी भी माह की अमावस्या को कर सकते हैं और इस साधना को कुल तीन बार करना है।
3. साधक श्वेत वस्त्र तथा गुरु पीताम्बर धारण करें।
4. लकड़ी के बाजोट पर तांबे की प्लेट में यंत्र स्थापित करें तथा यंत्र का सामान्य पूजन करें।
5. निम्न मंत्र की 75 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ श्री अमृतं साधय श्री ॐ फट ॥

6. 10 मिनट तक यंत्र पर उपरोक्त मंत्र बोलते हुए जल-धारा प्रवाहित करें, यदि पात्र भर जाता है, तो जल किसी अन्य पात्र में डालते रहें।
7. तत्पश्चात् 21 बार उपरोक्त मंत्र बोलते हुए 21 गुलाब के पुष्प यंत्र पर चढ़ायें।
8. पूजन समाप्त होने पर जल, जो अपने यंत्र पर चढ़ाया है, स्वयं ग्रहण कर लें।
9. तीन बार साधना होने के पश्चात् यंत्र, माला और गुलाब के पुष्प किसी नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 190/-

किसी भी मंत्र को दोष मत दीजिए
 किसी भी साधना प्रक्रिया को दोष मत दीजिए
 किसी भी गुरु को दोष मत दीजिए
 किसी भी देव को दोष मत दीजिए
 साधना में सफलता नहीं मिलती

तो कारण जानिए
 उसका उपाय कीजिए
 प्रस्तुत है

साधना के विष्ण और विशेषकरण

स्वास्थ्य, आहार, शंका, सद्गुरु, प्रसिद्धि,
 ब्रह्मचर्य, कामना और परदोष। इन मूल तत्वों
 पर विचार करना आवश्यक है। इन पर आत्म-
 मंथन साधक को स्वयं ही करना है।

साधना या अनुष्ठान आदि का एक क्रम, एक विशेष विधान होता है। जब तक इन सारे तथ्यों की जानकारी नहीं होती तब तक साधना में सफलता प्राप्त करना संदिग्ध रहता है। कई बार साधक कड़े प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त करता, इसका कारण साधक के पूर्व जन्म में किए शुभ या अशुभ कर्म हैं। कई बार हम देखते हैं कि दुष्ट व दुराचारी व्यक्ति समाज में सम्मानित और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। इसके विपरीत ईश्वर भक्त ब्राह्मण या साधक सभी प्रकार के दुःख भोगता रहता है।

इसके बारे में नीचे कुछ बिन्दु स्पष्ट किये गए हैं, जिनके माध्यम से साधक अपने पूर्व जीवन के दोष क्षय कर सब प्रकार के विष्ण दूर करके साधना में सफलता प्राप्त कर सकता है।

1. स्वास्थ्य

सबसे पहले विष्ण है स्वास्थ्य का बिगड़ना। जब तक स्वास्थ्य ठीक रहेगा तभी तक मनुष्य साधना कर सकता है, रोग पीड़ित शरीर से साधना में सफलता प्राप्त करना प्रायः

असंभव है, इसलिए सोने, उठने, काम करने व खाने पीने आदि के ऐसे नियम रखने चाहिए जिनसे शरीर का स्वस्थ रहना संभव हो। प्राकृतिक भोजन, व्यायाम तथा विशेष आसनों से स्वास्थ्य पर विशेष लाभ पहुंचता है।

2. आहार

दूसरा विष्ण आहार की अशुद्धि भी है। जिससे स्वास्थ्य तो बिगड़ता ही है, परन्तु इससे मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए हमारे शास्त्रों में आहार शुद्धि पर बहुत जोर दिया है। एक प्रसिद्ध कथन है, ‘जैसा अन्न वैसा मन’ मनुष्य जिस प्रकार का अन्न ग्रहण करता है, उसके विचार, बुद्धि, कार्य कलाप भी उसी तरह के हो जाते हैं। आहार को भी तीन भागों में बांटा है - एक तो अधिक खट्टे, तीखे, मिर्च वाले अधिक कड़वे गरमागरम व अत्यन्त कड़क राजसी आहार व दूसरा बासी सड़ा हुआ, जूठा, अपवित्र व दुर्गन्ध युक्त, मांस मदिरा आदि तामसिक आहार तथा तीसरे न्याय और धर्म से उपर्जित अन्न तथा न ज्यादा खट्टा न तीखे सत कमाई से उपर्जित सात्विक आहार की ग्रहण करना चाहिए।

तामसिक व राजसिक पदार्थ के सेवन से काम, क्रोध, लोभ, मोह अभिमान व मत्सर आदि दोष उत्पन्न होकर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ देते हैं, जिससे साधक अपने साधना पथ से गिर जाता है, यथा सम्भव आहार अल्प ही करना अच्छा होता है।

किसी भी मंत्र को दोष मत दीजिए
 किसी भी साधना प्रक्रिया को दोष मत दीजिए
 किसी भी गुरु को दोष मत दीजिए
 किसी भी देव को दोष मत दीजिए
 साधना में सफलता नहीं मिलती

तो कारण जानिए
 उसका उपाय कीजिए
 प्रस्तुत है

साधना के विषय और बिंगड़न

स्वास्थ्य, आहार, शंका, सद्गुरु, प्रसिद्धि, ब्रह्मचर्य, कामना और परदोष। इन मूल तत्वों पर विचार करना आवश्यक है। इन पर आत्म-मंथन साधक को स्वयं ही करना है।

साधना या अनुष्ठान आदि का एक क्रम, एक विशेष विधान होता है। जब तक इन सारे तथ्यों की जानकारी नहीं होती तब तक साधना में सफलता प्राप्त करना संदिग्ध रहता है। कई बार साधक कड़े प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त करता, इसका कारण साधक के पूर्व जन्म में किए शुभ या अशुभ कर्म हैं। कई बार हम देखते हैं कि दुष्ट व दुराचारी व्यक्ति समाज में सम्मानित और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। इसके विपरीत ईश्वर भक्त ब्राह्मण या साधक सभी प्रकार के दुःख भोगता रहता है।

इसके बारे में नीचे कुछ बिन्दु स्पष्ट किये गए हैं, जिनके माध्यम से साधक अपने पूर्व जीवन के दोष क्षय कर सके।

1. स्वास्थ्य

सबसे पहले विषय है स्वास्थ्य का बिंगड़न। जब तक स्वास्थ्य ठीक रहेगा तभी तक मनुष्य साधना कर सकता है, रोग पीड़ित शरीर से साधना में सफलता प्राप्त करना प्रायः करना अच्छा होता है।

असंभव है, इसलिए सोने, उठने, काम करने व खाने पीने आदि के ऐसे नियम रखने चाहिए जिनसे शरीर का स्वस्थ रहना संभव हो। प्राकृतिक भोजन, व्यायाम तथा विशेष आसनों से स्वास्थ्य पर विशेष लाभ पहुंचता है।

2. आहार

दूसरा विषय आहार की अशुद्धि भी है। जिससे स्वास्थ्य तो बिंगड़ता ही है, परन्तु इससे मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए हमारे शास्त्रों में आहार शुद्धि पर बहुत जोर दिया है। एक प्रसिद्ध कथन है, 'जैसा अन्न वैसा मन' मनुष्य जिस प्रकार का अन्न ग्रहण करता है, उसके विचार, बुद्धि, कार्य कलाप भी उसी तरह के हो जाते हैं। आहार को भी तीन भागों में बांटा है - एक तो अधिक खट्टे, तीखे, मिर्च वाले अधिक कड़वे गरमागरम व अत्यन्त कड़क राजसी आहार व दूसरा बासी सड़ा हुआ, जूठा, अपवित्र व दुर्गन्ध युक्त, मांस मदिरा आदि तामसिक आहार तथा तीसरे न्याय और धर्म से उपर्जित अन्न तथा न ज्यादा खट्टा न तीखे सत कमाई से उपर्जित सात्त्विक आहार की ग्रहण करना चाहिए।

तामसिक व राजसिक पदार्थ के सेवन से काम, क्रोध, लोभ, मोह अभिमान व मत्सर आदि दोष उत्पन्न होकर शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बिंगड़ देते हैं, जिससे साधक अपने साधना पथ से गिर जाता है, यथा सम्भव आहार अल्प ही करना अच्छा होता है।

3. शंका

साधक की साधना में तीसरा विघ्न शंका है। जब एक बार साधक गुरु के कहने पर एक साधना में लग जाता है तो उसे तुरन्त तो सिद्धि नहीं मिल पाती।

उदाहरणार्थ एक विशेष 11 (ग्यारह) दिन का अनुष्ठान है, और जब पांच छः दिन गुजर जाने पर उसे किसी प्रकार की अनुभूति नहीं होती तो साधक अपनी साधना में शंका करने लग जाता है। प्रायः देखने में आया है कि लक्ष्मी अनुष्ठान में साधक के व्यय में वृद्धि होती है और अनुष्ठान के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने पर लक्ष्मी जी की अपार कृपा से सभी प्रकार से उन्नति करता है। अनुष्ठान के प्रारम्भ में जब प्राकृतिक रोष से व्यय बढ़ता है तो यह शंका अच्छे - अच्छे साधकों को प्रायः हो जाती है और उनकी बुद्धि में समय-समय पर यह भावना उत्पन्न हो जाया करती है, न मालूम यह देवी या देवता है भी या नहीं, मुझे दर्शन देंगे या नहीं। मैं जो साधना कर रहा हूँ वह ठीक है या नहीं? जो यंत्र या चित्र मैंने रखा है, वह मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित है या नहीं? ठीक होती तो अब तक कुछ न कुछ अनुभूति या लाभ अवश्य होता, हो न हो साधना में कोई गड़बड़ है और मुझे गुरुजी ने ठीक से बताया नहीं, जिससे उसके मन में शंका पक्ष और बढ़कर हावी हो जाता है, फलस्वरूप कई साधक तो अनुष्ठान पूरा करने से पहले ही छोड़ देते हैं, और पूरा करते भी हैं तो पूर्ण श्रद्धा व विश्वास के साथ नहीं सम्पन्न करते हैं उन्हें किसी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं होती।

भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं।

अश्रद्ध्या हृतं दत्तं तपस्त्वं कृतं च यत् ।

असदित्युच्यते पर्थ न च तत्प्रेत्य नरे इह ॥

अश्रद्धा से किया हुआ हवन, दान, तप या कोई भी कर्म असत् कहलाता है, उससे न यहां कोई लाभ होता है और न परलोक में होता है।

श्रद्धा ही साधक का मुख्य बल है। श्रद्धा गुरु के प्रति, अपनी साधना के प्रति, श्रद्धा, मंत्र, यंत्र या उस देवी या देवता के प्रति दृढ़ता को बनाए रखते हुए करनी चाहिए। यथार्थ साधक को तो बुद्ध की भाँति अटल भाव से साधना को सम्पन्न करनी चाहिए -

**इहासने शुष्कयतु में शरीरं
त्वगस्थिमांसं प्रलयञ्च यातु ।
अप्राप्य शोधं बहुकल्प दुर्लभं
नेवासनात कायमनश्चतिष्यते ॥**

इस आसन पर मेरा शरीर सूख जाय, चमड़ी, हड्डी नाश हो जाए, परन्तु बहुकल्प दुर्लभ बोध प्राप्त किए बिना इस आसन से कभी नहीं उठूँगा। जिससे साधक अपनी साधना में आगे बढ़ सके व जितना वह आगे बढ़ेगा उतना ही उसे इस बात का पता चल जायगा कि यह सब बातें कल्पना ही नहीं अपितु ध्रुव सत्य है।

4. सद्गुरु

सद्गुरु का अर्थ कोई विशेष मनुष्य से नहीं, अपितु जो भी ज्ञान दें सके, शिष्य के जीवन को ऊँचा उठा सके और उसके जीवन को पूर्णता दे सके, उसे सही मार्गदर्शन सके, वही गुरु कहलाने योग्य है।

यह विषय बहुत ही विचारणीय है, क्योंकि वर्तमान काल में सच्चे त्यागी, अनुभवी गुरुओं की बहुत कमी हो गई है। यों तो आजकल गुरुओं की संख्या बहुत बढ़ गई है, जिधर देखिये, गुरुओं के समुदाय में अधिकांश दम्भी, दुरोचारी, परधन और परस्त्री-कामी, नाम चाहने वाले, बिना साधना के ही अपने आपको अनन्य भक्त, परमज्ञानी, यहां तक कि अपने को ईश्वर तक बतलाने वाल कपटी पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में सद्गुरु का चुनाव करना बड़ा कठिन हो गया है।

एक अच्छे सद्गुरु का शिष्य को मिल जाना भी एक सौभाग्य की बात है शिष्य को साधना मार्ग पर प्रवृत्त करने के लिए और उसके साधना काल में आने वाली बाधाओं से सही मार्ग दिखाने व साधक के भीतर शक्ति का संचार करने के लिए सद्गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है। तंत्र पारंगत योगियों का कहना है कि सद्गुरु से दीक्षा प्राप्त करने से साधक में दिव्यता आती है तथा उसके पापों का नाश हो जाता है।

नित नये गुरु से भी साधना में बड़ी गड़बड़ी मच जाती है, क्योंकि साधना लक्ष्य एक होने पर भी मार्ग अनेक होते हैं। आज एक के कहने पर प्राणायाम शुरू किया, कल दूसरे की बात सुनकर हठयोग द्वारा साधना करने लगे, परसों तीसरे के उपदेश से नाम जप आरम्भ कर दिया, चौथे दिन व्याख्यान के प्रभाव से वेदान्त का विचार करने लगे। इस तरह जगह-जगह भटकने और बात-बात में गुरु बदलते रहने से कोई भी साधना सिद्ध नहीं होती।

भगवान् कृष्ण ने स्वयं, गीता में कहा है -

तद विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिन ॥

उस ज्ञान को तू तत्व दर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ,

उनको भली-भांति दण्डवत् प्रणाम करने से उनकी सेवा करने तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्व का उपदेश करेंगे।

यह केवल सद्गुरु द्वारा ही संभव है।

5. प्रसिद्धि

साधक के मार्ग में एक बड़ी बाधा, प्रसिद्धि की भी है। जब लोगों को पता चलता है कि अमुक साधक यह साधना करता है तो स्वाभाविक ही है कि उनके मन में साधक के लिए श्रद्धा हो जाती है, वे समय-समय पर मन, वाणी, शरीर से उसका आदर, मान करने लग जाते हैं। साधक भी मनुष्य है व आदर, मान व प्रतिष्ठा प्रिय होते हैं। ज्यों-ज्यों उसे इनकी प्राप्ति होती है, त्यों-त्यों उसकी लालसा अधिक से अधिक लोगों से मिल कर सम्मान प्राप्त करने की होने लगती है। परिणाम स्वरूप वह ज्यों-ज्यों ईश्वरीय साधना से हट कर अपनी सम्मान वृद्धि में लग जाता है, त्यों-त्यों उसकी साधना में न्यूनता आती है, त्यों-त्यों उसका तेज, निस्पृहता, सरलता और ईश्वरीय श्रद्धा में भी न्यूनता आने लगती है, जिससे साधक का सत्त्व मुखी हृदय तामसिक होकर क्रोध, मोह और दम्भ से भर जाता है। इसलिए साधक की भलाई इसी में है, कि वह जितना है, दुनियां उसको सदा उससे कम ही जाने। बाहर से नीचे रहकर अन्दर से ऊंचा उठते जाना ही साधक के लिए कल्याणप्रद है।

6. ब्रह्मचर्य

साधना में एक विघ्न ब्रह्मचर्यता का पूरा पालन न करना भी है। साधक के शरीर में तेज और ओज हुए बिना साधना में पूरी सफलता नहीं मिलती। इसमें प्रथान आवश्यकता है शरीर, मन, इन्द्रियों और बुद्धि के बल की ओर यह बल प्राप्त होता है ब्रह्मचर्य से। अतः साधक को चाहिये कि न तो ऐसी कोई क्रिया करे न ऐसा संग ही करे तथा न ऐसे पदार्थों का सेवन ही करे कि जिससे उसके ब्रह्मचर्य का नाश हो।

विवाहित साधकों स्त्री या पुरुष को भी परमार्थ साधना के लिए यथा साध्य शीलव्रत पालन करना चाहिये। सदा यह स्मरण रखना चाहिये कि जो जितना ही ब्रह्मचर्य का पालन करेगा, वह उतना ही शीघ्र साधना में उच्च स्तर प्राप्त कर सकेगा।

हनुमान जी ने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया, जिसके प्रभाव से वे बड़े ही वीर, तेजस्वी, ज्ञानी, धीर, विद्वान् व भगवान् के भक्त हुए। वे योग की सिद्धियों के ज्ञाता थे। जिनके

प्रभाव से वे महान से महान और सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप धारण कर लिया करते थे, यह बात लंका जाने समय उन्होंने विशाल रूप धारण कर सौ योजन के समुद्र को लांघ गये तथा लंका प्रवेश करते समय सूक्ष्म रूप धारण कर लिया इस वृत्तान्त से सिद्ध होती है।

भीष्म पितामह ने आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा ली, इससे संतुष्ट होकर उनके पिता शान्तनु ने उनको वरदान दिया कि तुम्हारी इच्छा के बिना तुम्हें मृत्यु नहीं मार सकेगी, परशुराम जैसे महान् अस्त्रधर त्रैलोक्यं विजयी वीर भी तेर्इस दिन घोर युद्ध करके भीष्मपितामह से पराजित हुए, इसमें ब्रह्मचर्य पालन एक प्रधान कारण है।

7. कामना

जिस साधक का मन विषय वासनाओं से मुक्त नहीं हो जाता है, उसके भी साधना मार्ग में बड़े विघ्न आते हैं, क्योंकि कामना से ही तो क्रोध, मोह, लोभ उत्पन्न होते हैं और जिसके फलस्वरूप बुद्धिनाश साधना का नाश कर डालती है, अतएव कामनाओं से चिन्त को सदा दूर रखना चाहिए।

8. परदोष

साधक की साधना में एक दोष दूसरों में दोष देखना भी है। साधक को इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए कि दूसरे क्या करते हैं। साधक को तो अपनी साधना में निरन्तर मग्न रहना चाहिए, जिससे उन्हें दूसरों में दोष देखने का समय ही न मिले ... और जिन्हें दूसरों में दोष देखने की आदत पढ़ जाती है, वे अपने साधना मार्ग पर स्थिर रह कर आगे नहीं बढ़ सकते। साधक को हरि भक्त श्री कर्बार जी के इस उपदेश पर ध्यान रखना चाहिए।

बुरा जो देखने मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल स्त्रोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

उदाहरण स्वरूप जब भी आप अपनी तर्जीनी उंगली उठाकर दूसरों की ओर इशारा करेंगे तो मध्यमा, अनामिका व कनिष्ठिका तीनों उंगलियां आपकी ओर मुड़ जाएँगी और उनके मुड़ने का अभिप्राय ही यही है कि आप एक बार-दूसरों पर कुछ दोष देने से पहले तीन बार स्वयं को देखें। दोष तो अपने देखने चाहिए और उन्होंने को दूर करने का यथासंभव प्रयत्न करना चाहिए।

इन आठ प्रमुख बिन्दुओं पर विचार कर अपने दोषों को हटाकर साधना मार्ग पर आगे बढ़िये और निरन्तर साधना करते रहिये, सद्गुरु आपके साथ है अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आख्यर होते हैं साधना क्षमता सर्वेषां शुभता

चन्द्र ग्रहण

जब चन्द्र किरणें सूर्य से प्रभावित हो धरती पर एक विचित्र साधनात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है, तब जो साधक इन क्षणों को पकड़ लेता है वह सामान्य काल की साधना से सहस्र गुना फल और सिद्धि प्राप्त करता है।

**चन्द्र ग्रहण 6 अगस्त 2009 रक्षाबंधन पूर्णिमा
साधनात्मक काल सूर्योल्से सूर्योदय तक**

विवाद में मत पड़े कि यह ग्रहण भारत में दिख रहा है या नहीं। आप साधना करें और उसके प्रभाव के बारे में हमें पत्र लिखें -

ग्रहण और साधना

अगर मंत्र साधना उपयुक्त समय या दिवस पर की जाय, तो उसका प्रभाव स्वतः ही कई गुण बढ़ जाता है, अतः साधना क्षेत्र में विभिन्न दिवसों का महत्व विस्तार पूर्वक समझाया जाय है और इस बात पर विशेष बल दिया गया है, कि महारात्रि (शिवरात्रि), क्रूर रात्रि (होली), मोह रात्रि (जन्माष्टमी), महोरात्रि (नवरात्रि) एवं काल रात्रि (दीपावली) कुछ ऐसे पर्व हैं, जो कि साधना के क्षेत्र में अद्वितीय हैं, जिनका महत्व हर योगी, यति साधक भली प्रकार से जानता एवं समझता है।

54'

परन्तु जहां हमारे शास्त्रों ने इन जैसे अनेक पर्वों को सराहा आहुति भी हजार आहुतियों के समान फल देती है।

है, प्राथमिकता दी है, वर्षों उन्होंने कुछ विशेष पर्वों को अति शुभ एवं साधना और तंत्र में सर्वोपरि माना है। ये पर्व हैं -

◆ सूर्य ग्रहण

◆ चन्द्र ग्रहण

ग्रहण की महत्वा इसलिए सर्वाधिक है, क्योंकि उस समय इस प्रकार का गुरुत्वाकर्षण प्रभाव पैदा होता है, जो साधना से प्राप्त होने वाले फल को कई गुण बढ़ा देता है।

ग्रहण काल के दौरान किए गए मंत्र जप सामान्य रूप से किए गए लाख जपों के बराबर होते हैं, उस दिन दी गई एक आहुति भी हजार आहुतियों के समान फल देती है।

प्रेरणा के सागर गुरु

सृष्टि में अनन्त गुण हैं, अनन्त विद्याएं हैं, अनन्त जीवन हैं। उसके बावजूद भी मनुष्य अपने आप को अतृप्ति और शुष्क अनुभव करता है, तो स्पष्ट है कि उसके जीवन में प्रेरणा का सागर नहीं है। प्रेरणा का तात्पर्य है, प्रेरक से प्राप्त करना। जिस भाव से जीवन में आपसमें सकते, वह भाव प्रेरणा भाव कहलाता है। प्रेरणा की साकार मूर्ति केवल सद्गुरु ही हो सकते हैं। यदि जीवन में गुरुत्व का एक सहत्रांश भी है तो वह सहत्रांश शिष्य को शांत नहीं रख सकता, उसके जीवन में गुरु का वह अंश निरन्तर लहरें उठाता है, जगन करता है, शिष्य को जीवन में कुछ करने की निरन्तर प्रेरणा देता रहता है।

निखिल रस वह अमृत बूँद है जो जीवन में बहते हुए हलाहल विष को भी अमृत में परिवर्तित कर देती है, निखिल अमृत रस ऐसा रस है जो सहस्र नाड़ियों का भेदन करता हुए पूरे देह मन और प्राण में व्योम हो जाता है।

सद्गुरु प्रेम की प्रतिमूर्ति ही नहीं, साकार रूप होते हैं। जिसने गुरु से प्रेम कर लिया उसके लिए संसार के सारे प्रेम बौने हो जाते हैं, क्योंकि उसने प्रेम रस द्वारा निखिल रस का आस्वादन कर उसे अपने भीतर बसा लिया।

हमने अपने जीवन में गुरु को साकार रूप में देखा, निराकार रूप में भी देखा, संगुण रूप में भी देखा, निर्गुण रूप में भी देखा, गुरु से अनुभूत भी हुए और गुरु की अनुभूति भी प्राप्त हुई। यह सब क्रीड़ा गुरु किया है जिसमें शिष्य का कार्य अपने आप को समर्पित कर देना है। रुके हुए पानी में बदबू आ सकती है, रुके हुए जीवन में व्याधि आ सकती है लेकिन प्रवाहमान जीवन्त जल में और व्यक्तित्व में सारे दोष बहकर दूर हो जाते हैं। जहां इस प्रवाह को अपने अहंकार, बुद्धि से रोकने का प्रयत्न किया, वहीं जीवन में अनुभूति समाप्त हो जाती है। जीवन में तरलता समाप्त हो जाती है। इस निखिल रस के प्रभाव को अवरुद्ध मत होने दो, इस प्रवाह में अपने जीवन को प्रवाहित करने में ही जीवन की सार्थकता है।

इस बार श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन के दिन सूर्य ग्रहण पश्चात् चन्द्र ग्रहण का एक विशेष योग बन रहा है। इसमें सम्बन्ध में ज्योतिषी विशेष वाद-विवाद कर रहे हैं कि ये ग्रहण भारत में नहीं दिखने के कारण मान्य नहीं हैं। लेकिन यह तर्क किसी भी स्थिति में उचित नहीं कहा जा सकता। चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण विश्व के किसी भी भू-भाग पर दिखाई दे उनका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है।

रक्षा बंधन का पर्व आरक्ष पर्व कहलाता है। जिस विप्राचीन काल में गुरु अपने शिष्य के घर जाकर उसे रक्षा सुपहनाते थे। साधनात्मक दृष्टि से चन्द्र ग्रहण के महत्व के समझना केवल श्रेष्ठ साधक के लिये ही संभव है। श्रेष्ठ साधक मन से भावुक, आत्मलीन और क्रियाशील होता है। चन्द्रमा मन का प्रतीक है। इस दिन चन्द्रमा से सम्बन्धित साधना करने से विशेष लाभ अवश्य प्राप्त होता है। यह भी जान ले कि चन्द्रमा किस प्रकार की शक्ति तत्व का वाहक है और इसकी साधना से क्या लाभ प्राप्त होता है।

मानव जीवन का संचालन पांच ज्ञानेन्द्रियों और पांच कर्मेन्द्रियों से होता है। इन सभी इन्द्रियों का संचालन मन है तथा मन का संचालक चन्द्रमा है। वेदों में कहा गया है—‘चन्द्रमा मनसो जातः’ अर्थात् चन्द्रमा मन है। साधनाओं के दृष्टि से देखें तो चन्द्रमा में स्वयं इतनी दिव्यता प्राप्त है, जिसे अमृत का मूल कहा गया है।

यहां तक कि समस्त देवों के अधिपति त्रिदेवों में भी प्रमुख जिनका काम ही कल्याण करना है, ऐसे भगवान शंकर ने भी इसे अपनाया और किसी अन्य जगह नहीं सीधे अपने शीश पर ही स्थान दिया और स्वयं चन्द्रशेखर कहलाए।

अज्ञानी मानव की दृष्टि में ग्रहण अशुभ माना जाता है क्योंकि प्राचीनकाल से चली आ रही परम्परागत रीतियों ने साधारण मानव के मन में यह धारण बैठा दी है, कि ग्रहण के समय कोई भी कार्य करना अशुभ या निर्धारित होता है, इसलिए लोग ग्रहण के समय कोई भी कार्य करने से भय अनुभव करते हैं, किन्तु उन्हें इस बात से आशंकित न होकर ग्रहण के समय का पूर्ण लाभ उठाना चाहिए।

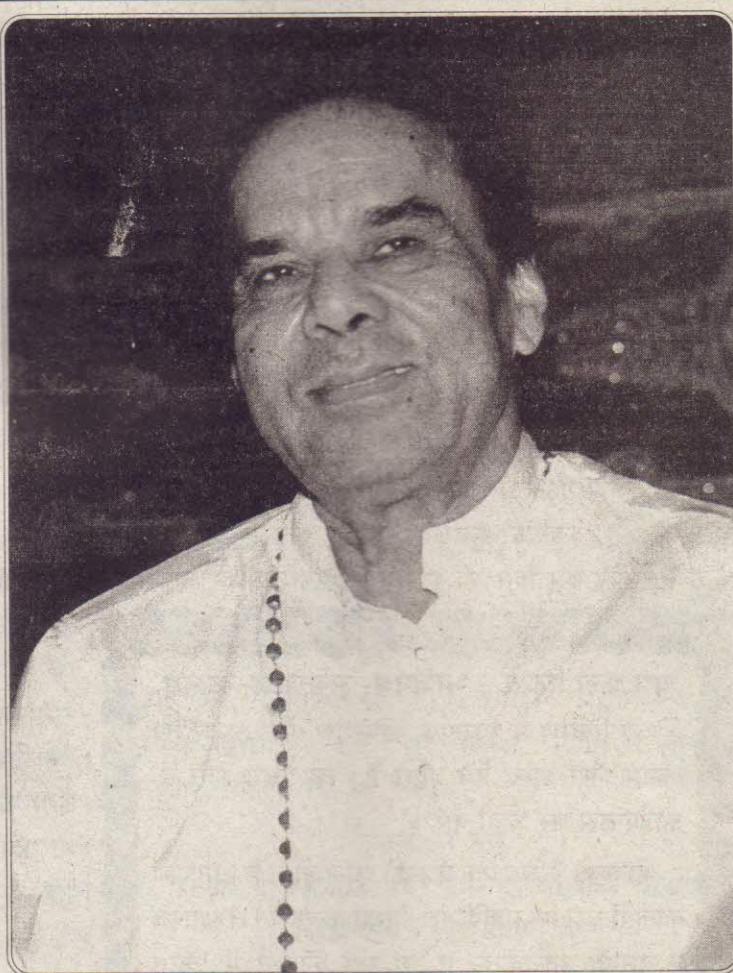
06 अगस्त 2009 चन्द्र ग्रहण को पड़ रहा है, जिसका लाभ प्रत्येक साधक को उठाना ही चाहिए। चन्द्र ग्रहण साधनात्मक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि चन्द्र ग्रहण के समय वायुमण्डल में एक विशेष प्रकार की शक्ति व्याप्त होती है।

चन्द्र ग्रह को जानें -

चन्द्रमा अपनी शीतलता, कोमलता और सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है, इसीलिए चन्द्रमा व्यक्ति को सौन्दर्य, समस्त भौतिक-सुखों और गृहस्थ सुखों को देने वाला है, अतः चन्द्र ग्रहण के दिन का विशेष समय साधक के लिए महत्वपूर्ण समय होता है, क्योंकि उन क्षणों में साधना सम्पन्न करने पर साधक की अन्तःस्थिति विशेष तरंगों द्वारा ग्रहों से जुड़ जाती है, और जिस व्यक्ति का भी इन तरंगों से सामज्जन्य हो जाता है, वह अपने जीवन में सफल हो जाता है।

चन्द्र साधना के लाभ

1. नेत्र, ज्योति और चेहरे की कान्ति के लिए चन्द्र साधना विशेष रूप से अनुकूल है।
2. सौन्दर्य, कला, साहित्य का कारक ग्रह चन्द्रमा ही है। अत एव इन क्षेत्रों में विशेष सफलता के लिए चन्द्रमा साधना फलदायी होती है।
3. मन का कारक होने से नवीन शोध के कार्यों अथवा कल्पना/परिकल्पना, विचारों में मौलिकता जहां आवश्यक है, उसके लिये यह श्रेष्ठतम साधना है।
4. मन एवं नेत्रों पर आकर्षण तथा प्रभाव उत्पादकता सम्मोहन का आधार है। अतएव इस साधना के अन्दर सम्मोहन प्राकृतिक रूप से ही प्राप्त हो जाता है।
5. नारी की कमनीयता अथवा सुघड़ता अथवा ममता और मातृत्व भाव चन्द्रमा की ही देन है। नारी की सुकोमलता, केश राशि एवं चेहरे का सौन्दर्य विशेष रूप से चन्द्रमा द्वारा प्रभावित होता है। सौन्दर्य निखारने तथा खोये सौन्दर्य को पुनः लाने के लिये यह साधना स्त्रियों के लिए विशेष उपयोगी है। इसके अलावा 'मोती' धारण करना भी सौन्दर्य की दृष्टि से महिलाओं के लिए कारगर माना गया है।
6. रस, मिष्ठान, खेती, बाग-बगीचे के कार्यों में सफलता के लिए चन्द्रमा की साधना अनुकूल है।
7. सूर्य या अन्य क्रूर ग्रहों के कोप से बचने के लिये भी चन्द्रमा साधना से बड़ा शायद ही कोई उपाय हो।
8. सम्वेदनाओं का आधार होने से कवित्व शक्ति, ग्रंथ रचना अथवा साधना में सफलता के लिये विशेष लाभदायक है।
9. आयुर्वेद, रसायन का मूल ग्रह चन्द्रमा है, अतः औषधि
10. पारद विज्ञान अथवा कीमियागिरी (स्वर्ण निर्माण) के क्षेत्र में सफलता बिना चन्द्रमा की कृपा के सम्भव ही नहीं है।
11. रोचकता, मौलिकता, उत्साह, तरंग, उमंग यह सब चन्द्रमा के कारण ही प्राप्त होती है, अतएव संगीत का भी क्षेत्र चन्द्रमा से बहुत प्रभावित है।
12. सौन्दर्य का तो आधार ही चन्द्रमा है, शक्ति यदि सम्वेदना और सौन्दर्य से रहित हो जाये तो फिर उसे राक्षसी शक्ति ही कहा जाता है, अतएव किसी भी क्रूर व्यक्ति या लम्पट महिला को सही राह पर लाने के लिये चन्द्रमा की शक्ति गजब प्रभाव लाती है।
13. राष्ट्रभक्ति, समाज सुधार अथवा न्याय के क्षेत्र में सफलता के लिए विश्लेषण बुद्धि की आवश्यकता होती है और विश्लेषण करने की यह विशिष्टता चन्द्रमा की अनुकूलता से ही प्राप्त होती है।
14. किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिये आध्यात्मिक आधार



विज्ञान में सफलता के लिये इसका विशेष उपयोग है।

आवश्यक है। श्रद्धा, समर्पण, उदारता, त्याग, बलिदान, निष्ठा, गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण और भौतिक जगत में कुछ कर गुजरने की भावना चन्द्रमा की अनुकूलता से ही पैदा की जा सकती है।

15. हमारी सृष्टि मैथुनी सृष्टि कहलाती है, जिसका आधार पति-पत्नी, दाम्पत्य जीवन की अनुकूलता है। यह अनुकूलता उच्चतम आदर्श की स्थिति तक चन्द्रमा की अनुकूलता से ही पहुंच पाती है। अतः अनुकूल वर या वधू प्राप्त करने के लिये चन्द्रमा की अनुकूलता अनिवार्य है। चन्द्र ग्रहण के समय साधना सम्पन्न करने पर व्यक्ति अपनी

बाधाओं, समस्याओं और परेशानियों से हमेशा के लिए छुटकारा पा सकता है, क्योंकि समय का अपने-आप में विशेष महत्व होता है, और इस दिन का भलीभांति उपयोग कर वह अपने

यंत्र कैसे लिखें - भोजपत्र-अष्टगंध-कलम

यंत्र निर्माण में भोजपत्र, अष्टगंध और अनार की कलम जैसे शब्द हम पढ़ते हैं। यह क्या होते हैं, आइए इस पर चर्चा करें -

भोजपत्र - यह एक पेड़ की छाल होती है। प्राचीन काल में इस पर महर्षि ग्रंथ लिखा करते थे। तंत्रशास्त्र में इनका अधिकतर प्रयोग यंत्र लिखने में किया जाता है। इस पर लिखे यंत्र-मंत्र प्रभावशाली हैं और सिद्धिदायक होते हैं। भोजपत्र भूरे रंग का होता है। इसका उपयोग बाधा-विघ्न दूर करने के लिए करते हैं।

अष्टगंध - अष्टगंध एक प्रकार का सुगंधित मिश्रण है। इसका निर्माण आठ सुगंधित सामग्रियों से मिलाकर किया जाता है। इसमें प्रमुख केशर, कस्तूरी, अगर, तगर, गोरोचन, चंदन, गुलाबजल, सुगंधित इत्र आदि होते हैं। इन वस्तुओं के मिश्रण से एक प्रकार की स्याही का निर्माण किया जाता है जिससे भोजपत्र पर यंत्र लिखा जाता है। यंत्र के पूजन आदि से विपदाओं को दूर करके धन, ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

अनार की कलम - अनार के पेड़ की टहनी से इस कलम का निर्माण किया जाता है। मंत्र एवं यंत्र इस कलम के द्वारा ही लिखने का विधान है। इस कलम से लिखा गया यंत्र फलदायी होता है।

लिए सफलता के द्वारा खोल लेता है।

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि वह समय का दुरुपयोग न करते हुए पूजा-पाठ, मंत्र-जप, अनुष्ठान आदि सम्पन्न करें। इसका सदुपयोग करे, क्योंकि किसी भी प्रकार की समस्या से मुक्ति पाने के लिए इससे अच्छा समय और कोई नहीं है। इसका कारण यह है कि - इस विशिष्ट समय में किये गए पूजा-विधान, मंत्र-जप आदि का साधक को सौ गुना फल प्राप्त होता है, क्योंकि ग्रहण काल में की गई एक माला मंत्र-जप अन्य समय में की गई सौ माला मंत्र-जप के बराबर होती है।

बड़े-बड़े तांत्रिक व मार्त्रिक भी ऐसे ही क्षणों की प्रतीक्षा में टकटकी लगाए बैठे रहते हैं, क्योंकि उन्हें उसके द्विगुणित फल प्राप्ति का ज्ञान पहले से ही होता है और साधारण मानव इस बात से अपरिचित रह जाने के कारण ऐसे विशेष क्षणों को यों ही गंवा बैठता है। चूंकि सामान्य गृहस्थ के जीवन में समस्याएं व कठिनाइयां अधिक होती हैं, जिस कारणवश वह हर क्षण दुःखी व तनावग्रस्त ही दिखाई देता है, वे व्यक्ति इस क्षण का लाभ उठाकर अपने जीवन से उन समस्याओं और बाधाओं का निराकरण कर सकते हैं और इस दृष्टि से सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण वरदान स्वरूप होता है।

चन्द्रमा मन, भावना, कल्पना शक्ति, ऐश्वर्य, संगीत कला, धन, वैभव, सौन्दर्य, माधुर्य, तीव्र-बुद्धि, चरित्र, यश कीर्ति आदि का ग्रह है, अतः इसके द्वारा जब ग्रहण निर्मित होता है, तो उपरोक्त बातों की प्राप्ति के लिए व्यक्ति चाहे, तो इस दिवस का लाभ उठा कर उचित साधना सम्पन्न कर सकता है और इच्छित सफलता प्राप्त कर सकता है।

वैसे तो इन सब स्थितियों को प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न साधनाएं हैं, परन्तु व्यक्ति एक ही समय में अलग-अलग साधनाएं किस प्रकार से सम्पन्न कर सकता है? यदि किसी को आकर्षक व्यक्तित्व के साथ-साथ अतुलनीय धन की भी कामना है, तो वो अलग-अलग प्रयोग सम्पन्न करने होंगे, जो कि सामान्यतः मुश्किल कार्य है, क्योंकि आजकल का जीवन बड़ा ही अस्त-व्यस्त एवं तीव्र गति युक्त हो गया है। न तो किसी के पास ज्यादा प्रयोग करने का समय ही है और न ही क्षमता... तो फिर उपाय क्या है? क्या व्यक्ति को हर बार नवीन ग्रहण का इंतजार करना होगा?

इसका उत्तर है 'नहीं'। हमारे कृषि बहुत ही विचारवान, दिव्य विज्ञान से युक्त श्रेष्ठ महापुरुष थे। अपने तेज से उन्होंने कई प्रकार की अद्वितीय साधनाएं निर्मित की।

चब्बि ग्रहण की विशिष्टतम् जाधनाएँ

सम्मोहन वशीकरण प्रयोग

दोग मुक्ति प्रयोग

शत्रुहन्ता प्रयोग

बाधा निवारण प्रयोग

1. सम्मोहन वशीकरण प्रयोग

यह सम्मोहन वशीकरण प्रयोग दूसरों के लिए नहीं अपितु स्वयं के लिए सम्पन्न किया जाता है, इस प्रयोग से साधक का शरीर विशेष प्रकार का चुम्बकीय तथा आकर्षण युक्त हो जाता है, चाहे उसका शरीर दुबला पतला हो, कमजोर हो परन्तु चेहरे पर कुछ ऐसा आकर्षण आ जाता है कि जो भी उसे देखता है, स्वतः ही वश में हो जाता है।

इस प्रयोग को करने के बाद उसके शत्रु भी उसके वश में रहते हैं, अधिकारी अनुकूल होते हैं, और यही नहीं, अपितु यह साधना सम्पन्न करने के बाद वह जिससे भी मिलता है सामने वाला तुरन्त प्रभावित हो जाता है और उसके कहने के अनुसार कार्य करता है, घर में लड़ाई-झगड़ा समाप्त हो जाता है, पत्नी तथा पुत्र कहना मानने लग जाते हैं और एक प्रकार से देखा जाय तो वह जहां भी जाता है, उसके प्रभाव से उसके व्यक्तित्व और उसके आकर्षण से खिंचे हुए रहते हैं और जीवन भर उसके साथ रहने की इच्छा रखते हैं। वास्तव में ही यह प्रयोग ग्रहण के समय ही किया जाता है।

साधना सामग्री

इस साधना में सम्मोहन यंत्र, वशीकरण यंत्र तथा सम्मोहन माला का प्रयोग किया जाता है, ये तीनों ही प्रामाणिक और मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

ग्रहण काल के अवसर पर साधक आसन पर पश्चिम दिशा की ओर मुङ्ह, कर बैठ जायं और सामने थाली में दोनों यंत्र स्थापित कर दें। इसके पश्चात् कुंकुम, अक्षत से संक्षिप्त पूजन

सम्पन्न करें, तदुपरान्त यंत्र को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम कर निम्न मंत्र का जप प्रारम्भ करें। फिर सम्मोहन माला से निम्न मंत्र की ज्यारह माला मंत्र जप करें।

सम्मोहन मंत्र

॥ॐ सुदर्शनाय विद्धहे महाज्वालाय धीमहि
तञ्चक्रः प्रचोदयत् ॥

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब उपरोक्त तीनों वस्तुएं रात्रि को ही किसी रास्ते पर रख दें और घर लौट आवें, घर आकर स्नान कर लें। इस प्रकार करने पर यह प्रयोग सम्पन्न होता है और दूसरे दिन से ही वह अपने व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक निखार अनुभव करता है।

साधना सामग्री - 450/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. शत्रुहन्ता प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शत्रु होते ही हैं। यदि शत्रु द्वारा धन का हरण कर लिया गया हो, झूठे मुकदमे में शत्रु द्वारा फंसा दिया गया हो या शत्रु द्वारा इज्जत, मान, सम्मान को हानि पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेने से शत्रुबाधा समाप्त हो जाती है।

इस प्रयोग के लिए शत्रु-बाधा निवारण यंत्र और खड़ग माला की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम पीले वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख हो बैठ जाएं, फिर लकड़ी के बाजोट पर लाल कपड़ा बिछाकर, उस पर ताम्रपात्र में यंत्र को स्थापित कर, पंचामृत से स्नान कराएं

चन्द्रमा जब तत्व प्रधान ग्रह हैं, अतः चन्द्र ग्रहण के पर गृहस्थ मुख्य साधना, अकंग साधना, विवाह सम्बन्धी प्रयोग, सौन्दर्य उपासना, अप्सरा-उर्द्धशी साधना, मानसिक शांति, उद्धर रोग, गुप्तांग रोग अर्दि के विवाहण हेतु इस शक्ति की साधना की जाती है। इसके अतिरिक्त नौकरी में प्रमोशन, मानसिक शांति, पैतृक सम्पत्ति, यात्रा में रफलता जैसे सम्बन्धित साधना भी इस समय करनी चाहिए।

और फिर जल से उसे धोकर कुंकुम, अक्षत, पुष्प से उसका पूजन कर धूप, दीप जला दें।

इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर संकल्प लें, कि मैं अमुक कार्य के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूं और मुझे इसमें सफलता मिले। ऐसा कहकर जल जमीन पर छोड़ दें, फिर खड़ग माला से 11 माला या एक घंटे में जितनी भी माला हों, निम्न माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

॥३५ क्रीं क्रीं क्रीं शत्रुहन्त्रै फट्॥

मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र और माला को लाल वस्त्र में ही लपेट कर किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें। ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

साधना सामग्री - 290/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. रोग मुक्ति प्रयोग

जिसके जीवन में चन्द्रमा की स्थिति कमजोर होती है, वे व्यक्ति निर्बल और पेट दर्द, सिर दर्द तथा अन्य प्रकार की बीमारियों से ग्रसित होते हैं, अतः अन्य बीमारियों के निराकारण हेतु इसे चन्द्रग्रहण के समय सम्पन्न किया जाना चाहिए।

सफेद या पीले वस्त्र धारण कर, ऊपर गुरुनामी चादर ओढ़कर, पूर्व दिशा की ओर आसन बिछाकर बैठ जाएं, फिर

संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न कर, जल लेकर संकल्प लें, इसके पश्चात् आरोग्य वर्द्धिनी माला से निम्न मंत्र का पूरे ग्रहण काल तक जप करें।

॥३६ चन्द्र तमसे नमः ॥

मंत्र जप सम्पन्न होने के पश्चात् उस माला को नदी या कुंए में विसर्जित कर देना चाहिए, इस प्रयोग को रोगी स्वयं या फिर कोई अन्य भी उसके नाम का संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है। ऐसा करने पर रोग का निराकरण स्वतः ही हो जाता है।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

4. बाधा निवारण प्रयोग

इन क्षणों में यदि व्यक्ति इस महत्वपूर्ण प्रयोग को सम्पन्न कर ले तो वह हर प्रकार की ग्रह बाधा तथा अन्य प्रकार की गृहस्थ बाधाओं से मुक्त हो जाता है, क्योंकि ग्रहण के समय किया जाने वाला यह महत्वपूर्ण प्रयोग है।

पीतवस्त्र धारण कर, पूर्वाभिमुख हो आसन पर बैठ जाएं, फिर अपने सामने एक बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा दें, तथा उस पर 11 पीपल के पत्तों को जल से धोकर उनके ऊपर 11 कुलाल चक्रों को स्थापित करें, इसके पश्चात् उन चक्रों का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें और निम्न मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

॥३७ ह्रीं बाधा निवारिण्यै ह्रीं फट् स्वाहा ॥

मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात् पूजन सामग्री को पीले वस्त्र में बांधकर नदी या कुंए में विसर्जित कर दें। चन्द्रग्रहण प्रारम्भ होने से लेकर ग्रहण मोक्ष तक साधक मंत्र जप करता रहे और मंत्र जप को सम्पन्न करने के पश्चात् उसमें प्रयुक्त सभी सामग्री को किसी नदी या कुंए में अवश्य ही विसर्जित कर दें। प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती अवश्य करें।

साधना सामग्री - 121/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

वास्तव में ही इन प्रयोगों को ग्रहणकाल में किए जाने पर साधक को अवश्य ही लाभ प्राप्त होता है, तथा इसे स्त्री या पुरुष कोई भी कर सकता है, या फिर पति-पत्नी दोनों अलग-अलग प्रयोगों को भी सम्पन्न कर सकते हैं। इन दिव्य प्रयोगों को सम्पन्न कर उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति अवश्य ही हो जाती है।

समय हैं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके आव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जून 14, 21, 28) (जुलाई 5)	दिन 06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (जून 8, 15, 22, 29) (जुलाई 6)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (जून 9, 16, 23, 30) (जुलाई 7)	दिन 10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (जून 10, 17, 24) (जुलाई 1)	दिन 06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक रात 07:36 से 09:12 तक 12:00 से 02:48 तक
गुरुवार (जून 11, 18, 25) (जुलाई 2)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक रात 09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (जून 12, 19, 26) (जुलाई 3)	दिन 06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक रात 07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (जून 13, 20, 27) (जुलाई 4)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक

ब्रह्मचारी कृष्ण वाणी

मेष -

यह माह आपके करोबार की दृष्टि से आपके लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। शत्रु पक्ष एवं प्रतिद्वन्द्वी पक्ष की कमज़ोरी का आप लाभ उठा सकते हैं। नये कार्य एवं प्रयोजनाओं के आप व्यस्त हो सकते हैं। आपके किसी यात्रा पर जाने के योग भी बन रहे हैं जो आपके लिये लाभकारी ही सिद्ध होगी। दाम्पत्य सुख की पूर्णता भी आपके लिये उत्साहवर्धक सिद्ध होगी। महिलाओं के लिये यह माह उत्तम ही रहेगा। आप 'यौवनदात्री कामरूपिणी कामाख्या साधना' (मई 2009) करें। तिथियां - 7, 14, 15, 19, 25 हैं।

वृष -

इस माह आपके जीवन में गतिरोध एवं बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। आर्थिक क्षेत्र में आपको थोड़ा बहुत नुकसान भी हो सकता है। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप सोच-समझ कर ही कोई निर्णय करें। इन सब के बावजूद आप निवेश कर सकते हैं जिसमें आपको दीर्घकाल में लाभ प्राप्त होगा। परिवार में किसी के स्वास्थ्य को लेकर आप चिंतित हो सकते हैं। महिलाएं अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। बेरोजगारों को स्वयं के प्रयत्नों से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। आप 'पूर्ण गृहस्थ सुख कामाक्षी साधना' (मार्च 2009) करें। शुभ तिथियां - 7, 10, 16, 21, 25 हैं।

मिथुन -

इस माह आपको कारोबार एवं व्यवसाय में सफलताएं प्राप्त होंगी। नये-नये अनुबंध एवं कार्यक्षेत्र के विस्तार से आप बहुत हर्ष अनुभव करेंगे। इस माह राज्य पक्ष भी आपके अनुकूल रहेगा। पति-पत्नी के बीच चली आ रही अनबन एवं मनमुटाव समाप्त होने से आप संतोष अनुभव करेंगे। आप अपने परिवार के साथ किसी भ्रमणीय स्थल पर भी जा सकते हैं। विद्यार्थी एवं बेरोजगार अपनी मेहनत व कठोर परिश्रम से प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप 'वीर साधना' (फरवरी 2009) करें। शुभ तिथियां - 9, 15, 17, 21, 27 हैं।

कर्क -

इस माह आपके जीवन-यापन के साधनों एवं उपकरणों में वृद्धि होगी। जहां एक ओर बेरोजगार व्यक्ति प्रयास द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर अपने कार्यक्षेत्र से असंतुष्ट व्यक्ति भी अपना कार्यक्षेत्र बदलने में सफलता प्राप्त कर पायेंगे। इस माह आप स्वयं को बहुत ऊर्जावान महसूस हो सकता है, आवश्यकता है कि आप अवसर को पहचानें। आप 'अम्बिका साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 11, 16, 20, 21, 26, 30 हैं।

सिंह -

यह माह आपके लिये सामान्य ही प्रतीत हो रहा है। रूपयों-पैसों के आय-व्यय में सामान्यता ही रहेगी। परिवार में किसी के स्वास्थ्य को लेकर आप चिंतित रह सकते हैं। माह के अंत में आप परिवार सहित किसी यात्रा पर भी ज सकते हैं। आनन्द एवं उत्साह के इस माह में आपको अपने में किसी के स्वास्थ्य को लेकर आप चिंतित हो सकते हैं। संतान पक्ष को लेकर कुछ चिंता भी हो सकती है। विद्यार्थियों महिलाएं अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। बेरोजगारों को एवं बेरोजगारों को इस माह विशेष ध्यान देने की जरूरत है। अन्यथा उन्हें कुछ अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकते हैं। आप 'अपराजिता साधना' (मई 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 17, 24, 28 हैं।

कन्या -

कभी सफलता तो कभी बाधा, ऐसा तो जीवन में चलता ही रहता है। आपको अपने दृढ़ संकल्प में वृद्धि करने की आवश्यकता है। आप वैसे तो बहुत मेहनती व्यक्ति हैं परन्तु इस माह आपको अपने कार्य के प्रति विशेष ध्यान देना होगा। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप आज का काम आज ही सम्पन्न करें। भविष्य की किसी विशेष योजना में आप सफलता प्राप्त करेंगे। महिलाओं के लिये यह माह एक परीक्षा के समान ही सिद्ध होगा, उन्हें संयम एवं धैर्य से काम लेना करें। तिथियां - 2, 7, 19, 25, 30, हैं।

तुला -

माह का प्रारम्भ आर्थिक दृष्टि से आपके लिए ठीक रहेगा। फंसा हुआ मुन्हना धन आपको प्राप्त हो सकता है। व्यापार में लाभ के योग बन रहे हैं। माह के मध्य में आप स्वयं अथवा कोई पारिवारिक लक्ष्य स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से ग्रस्त हो सकता है। जापका स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है। आपके लिये आकर्षक है कि आप धैर्य एवं संयम से कार्य करें। आपके लिये ज़ज्ज्ञा रहेगा कि आप किसी नये कार्य को प्रारम्भ न करें। महिलाओं की स्थिति संतोषजनक ही रहेगी। आप 'धनवर्धिणी लक्ष्मी साधना' (मार्च 2009) करें। शुभ तिथियां - 3, 7, 10, 19, 26 हैं।

वृष्टिंवक -

इस माह आपके ज्ञानस्थिति धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। आप इस माह मनोरंजन एवं ऐश्वर्य के साधनों का भरपूर प्रयोग कर सकते हैं। आप यदि किसी वाहन अथवा अन्य सामग्री के क्रय के बारे में सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिये उपयुक्त ही सिद्ध होगा। इस माह आप इंटरव्यू, साक्षात्कार एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। व्यापारी वर्ग को भी कार्यक्षेत्र में विस्तार के भरपूर अवसर प्राप्त होंगे। आप किसी जरूरतमंद अथवा धार्मिक कार्य में बढ़चढ़ कर जान लेंगे। आप 'कातिकिय साधना' (मई 2009) करें। तिथियां - 2, 8, 12, 28, 30 हैं।

धनु -

राजकीय कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होने से आपके आत्मविश्वास एवं उत्साह में वृद्धि होगी। मित्रों एवं शुभचिंतिकों से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपको आपके पुराने निवेश का लाभ प्राप्त होगा तथा आप नया निवेश करने में भी सफलता प्राप्त करेंगे। किसी से रुपयों के लेन-देन को लेकर कुछ परेशानियां आ सकती हैं। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि रुपयों का लेन-देन करते समय पूर्ण सावधान रहें। महिलाओं को परिवार एवं पति से कलह का सामना करना पड़ सकता है। आप 'भगवती विंध्यवासिनी साधना' (अप्रैल 2009) करें। तिथियां - 3, 5, 10, 15, 23 हैं।

मकर -

माह के प्रारम्भ में आपको कुछ अनावश्यक कार्यों पर खर्च करना पड़ सकता है। आप इस स्थिति को अपने आय स्रोत द्वारा पूर्ण करने में सफलता प्राप्त कर लेंगे। इस माह आपके खर्च की अधिकता बनी रह सकती है। आपके लिये अनुकूल होगा कि आप रुपये-पैसे अपने पास नहीं रखें अन्यथा आप

योग: सिद्ध योग - 6, 16, 18, 19, 24, 30 जून / 2, 3, जुलाई ☆ सर्वार्थ

सिद्ध योग - 3, 7, 10, 16 जून / 9 जुलाई ☆ अमृत सिद्ध योग - 22, 25

जून / 20 जुलाई ☆ द्विपुष्कर - 20 जून ☆ गुरु पुष्य - 25 जून ☆

बिना परेशानी के ही परेशान हो सकते हैं। इस माह आपको कुछ नये मित्र मिल सकते हैं, इन मित्रों के साथ आपकी जीवन-शैली में भी बदलाव आ सकता है। माह के अंत में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आप 'वार्ताली साधना' (मई 2009) करें। तिथियां - 6, 12, 13, 17, 25, हैं।

कुंभ -

इस माह आपके लिये कुछ बाधाएं आ सकती हैं। असफलता एवं निराशा के कारण आप परेशान हो सकते हैं। आपको स्वयं के प्रयासों द्वारा बाधाओं से लड़ने में परेशानी होगी। आप अपने मित्रों एवं शुभचिंतिकों की मदद प्राप्त करें। वे आपके लिये उचित उपाय करने में सफल होंगे। आपको अपने स्वयं पर विश्वास रखना होगा कि आप हर स्थिति में सफलता प्राप्त करके ही रहेंगे। माह के अंत में स्थितियां सामान्य होंगी तथा लोग आपकी समझदारी एवं कार्य क्षमता की प्रशंसा करेंगे। आप 'सौम्य महाकाली साधना' (फरवरी 2009) करें। तिथियां - 8, 9, 15, 18, 29 हैं।

मीन -

मित्रों एवं सहयोगी के सहयोग से आप लाभ प्राप्ति की स्थिति प्राप्त कर सकते हैं। स्वास्थ्य को लेकर आपको कुछ परेशानियां आ सकती हैं। आप साझेदारी एवं पार्टनरशिप में यदि काम प्रारम्भ करने का सोच रहे हैं तो यह माह आपके लिये लाभकारी ही सिद्ध होगा। आप अपने स्वयं के भविष्य एवं संतान की उच्च शिक्षा के बारे में उचित निर्णय लेने में सफलता प्राप्त करेंगे। संतान पक्ष एवं परिवार से आपको शुभ समाचार प्राप्त होंगे। प्रेम-प्रसंगों की दृष्टि से यह माह आपके लिये बहुत अच्छा रहेगा। आप 'उन्मत्त भैरव साधना' (अप्रैल 2009) करें। तिथियां - 6, 11, 12, 16, 21 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

03 जुलाई आषाढ शु. -11 शुक्रवार देवशयनी एकादशी

04 जुलाई आषाढ शु. -12 शनिवार शनि प्रदोष

07 जुलाई आषाढ शु. -15 मंगलवार गुरु पूर्णिमा

18 जुलाई श्रावण कृ. -11 शनिवार कामिका एकादशी

19 जुलाई श्रावण कृ. -12 रविवार प्रदोष व्रत

22 जुलाई श्रावण कृ. -30 बुधवार हरियाली अमावस्या/सूर्य ग्रहण

24 जुलाई श्रावण शु. -03 शुक्रवार सुवर्ण गौरी

01 अंगस्त श्रावण शु. -11 शनिवार पवित्रा एकादशी

गहु हृष्णो नहीं वराहमिहि नै लहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, वाधाएं तो उपरिंथित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहि के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका प्राप्त दिन पूर्ण सफलतादायक बन रहेगा।

जुलाई

1. प्रातःकाल सूर्योदय से पहले 'सिद्ध विनायक गुटिका' (न्यौछावर 60/-) का अभिषेक करें।
2. विशिष्ट गुरु पूजन करके कार्य आरम्भ करें।
3. भगवती लक्ष्मी की पूजा कर, दूध से बने किसी पदार्थ का भोग लगायें।
4. दिन का प्रारम्भ 'ॐ फट्' के उच्चारण से करें।
5. सूर्योदय के समय सूर्य देवता को अर्घ्य अर्पित करें।
6. प्रातःकाल भोजपत्र पर कुंकुम से 'हूं' लिखें तथा उस पर एक सुपारी रखें। इसका सामान्य पूजन करें।
7. आज गुरु पूर्णिमा के दिन 'निखिल हृदय स्थापन साधना' करें। घर में दीपमाला जलाएं और सामूहिक पूजन करें।
8. प्रातः काल अक्षत के ज्यारह दाने 'जं' बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए दक्षिण दिशा में डाल दें।
9. 'विशैषिका' (न्यौछावर 50/-) का पुष्प, अक्षत से पूजन कर जेब में रखकर घर से बाहर जाएं, रक्षा होगी।
10. "श्रीं" बीज का उच्चारण करते हुए घर से निकलें।
11. आज काली उड़द तथा सरसों के तेल का दान किसी निर्धन व्यक्ति को अवश्य करें।
12. केशर का तिलक कर बाहर जायें।
13. दिन का प्रारम्भ 'ॐ हीं हीं ॐ' के 11 बार उच्चारण से करें।
14. 'तांत्रोक्त नारियल' (न्यौछावर 60/-) अपने सिर पर सात बार घुमाकर किसी पीपल के वृक्ष के नीचे रख दें।
15. दिन का प्रारम्भ 'जं गणपतये नमः' के 7 बार जप से करें।
16. प्रातःकाल गुरु पूजन कर गुरु चित्र के समक्ष निम्न श्लोक का पूर्ण श्रब्दों पूर्वक उच्चारण करें -
अरादोवदानं परमं सदेहं प्राणं प्रमेयं परस्पंभूतं।
पुरुषोत्तमा पूर्णं मदैव स्त्रयं निखिलेश्वरायं प्रणमं नमामि॥
17. तेल के दीपक में एक लौंग डाल कर इष्ट आरती सम्पन्न करें, कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
18. प्रातः काल काली मिर्च के पांच दाने 'क्लर्ती' बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए सिर पर घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।
19. प्रातः काल 'ॐ सूर्य आदित्याय स्वाहा' मंत्र का जप करते हुए सूर्य को अर्घ्य दें।
20. प्रातःकाल 15 मिनट तक 'सोहहं' मंत्र का जप करें।
21. गुरु जन्म दिवस के अवसर पर निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. 'हनुमती' (न्यौछावर 31/-) पर सिन्दूर चढ़ा कर उसे बाहर जाते समय किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।
23. गुरु मंत्र का जप यथा सम्भव अधिक से अधिक करें।
24. किसी गाय को रोटी और गुड खिलाएं।
25. 'गोमती चक्र' (न्यौछावर 00/-) को किसी मंदिर में भेंट करें।
26. आज दिन का प्रारम्भ 'सूर्य को अर्घ्य' प्रदान करके ही करें।
27. शिवलिंग पर पांच बिल्व पत्र अर्पित करते हुए जल से अभिषेक करें।
28. पांच काली मिर्च के दाने अपने सिर पर से घुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें तथा पांचवें दाने को पृथ्वी पर फेंक दें।
29. गणेश जी को लड्डू का भोग लगायें।
30. 'श्री श्रेया' (न्यौछावर 50/-) का पूजन कमल या गुलाब के पुष्प से करें। फिर नदी या तालाब में विसर्जित करें। धन लाभ होगा।
31. नवार्ण मंत्र का सात बार जप अवश्य ही करें।

सहायणपति प्रसुख साधना



देवताओं में अग्रपूज्य

गणपति साधना

सर्वप्रथम आवश्यक है - गणपति पूजा और गुरु पूजा

जय देव जय देव, जय मंगलमूर्ति । दर्शन मात्र मनः कामना पूर्ति ॥

विद्यादायक बुद्धिप्रदायक जौरीतन्त्र गजानन । गजवदन शुभानन मंगलचरण गजानन ॥

सर्वसमृद्धि के निराले देवता

श्रीगणेश बहुत प्रभावी देवता के रूप में स्वीकारे गए हैं। वे ज्ञान-विज्ञान की रक्षा के देवता हैं। गणपत्यर्थीष्म में कहा है कि वे वाङ्मय हैं, चिन्मय हैं, आनन्दमय हैं, ब्रह्ममय हैं। वे सच्चिदानन्द, अद्वितीय परमात्मा हैं। प्रत्यक्ष ब्रह्म और ज्ञानमय हैं, - त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि। विशेष कथा जैसे भागवत् वेद आदि के कथन से पूर्व गणेश का स्मरण करने की हमारे यहां परम्परा रही है। ऐसे हजारों, लाखों प्राचीन ग्रंथ हैं जिनमें

मंगलाचरण के रूप में विनायक की वंदना की गई है। देवालयों में गर्भगृह के द्वार के ऊपर गणेश की प्रतिमा का मिलना उनका ध्यान करने और उन्हें प्रथमतः सम्मान देने का सूचक है। मान्यता है कि प्राचीन काल में समुद्र और समुद्रतट पर चलने वाली गज हवाओं को विनायक के रूप में पूजा गया। समुद्र से यात्रा करने वाले सार्थवाह (व्यापारी) इन विनायकी हवाओं से रक्षा की कामना को लेकर जो पूजा करते थे, उन्होंने ही विनायक की दिव्य शक्ति की स्थापना की। यह

मान्यता भी है कि गणेश हरियाली के देवता हैं। शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ से पता चलता है कि आख्य यानी मूषक में अग्नि का निवास है। ऐसे में आख्य को गणेश का वाहन मानकर पूजा करने की मान्यता का विकास हुआ। कालांतर में शैव, शक्ति, वैष्णव और सौर की तरह ही गणपत्य सम्प्रदाय का विकास भी हुआ। गणेश पुराण, मुद्गल पुराण इस सम्प्रदाय के विकास के उदाहरण है जिनमें विनायक की उत्पत्ति से लेकर विभिन्न लीलाओं का वर्णन है।

नारद पुराण में आया है कि विष्णु के मंदिर की चार, शिवालय की आधी, देवी के मंदिर की एक, सूर्य के मंदिर की सात और विनायक के मंदिर की तीन परिक्रमा करनी चाहिए। इन तीन परिक्रमाओं का भी रहस्य है। जो इनको पूरी करता है, उसके कार्य पूरे होते हैं; इसलिए देवताओं ने भी विनायक की कृपा की आकंक्षा की है। मंत्र महोदधि में कहा है कि उनको तर्पण बहुत प्रिय होते हैं। अतः यदि विनायक के नाम से उन्होंने ही विनायक की दिव्य शक्ति की स्थापना की। यह तर्पण किया जाए तो वे शीघ्र प्रसन्न होते हैं। - गणेशस्तर्पण प्रियः।



गणपति साधना-आराधना करने वाले साधकों को चाहिए कि वे शास्त्र की मर्यादा के अनुकूल कार्य और साधना करें जिससे कि उन्हें शीघ्र और पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके। इसके लिए निम्न तथ्यों का ध्यान साधकों और गृहस्थ व्यक्तियों के लिए आवश्यक है।

1. सभी कार्यों की सिद्धि के लिए गणपति के साथ श्री सूर्य, श्री दुर्गा, श्री शिव और श्री विष्णु की पूजा भी करनी चाहिए।
2. गृहस्थ व्यक्तियों को केवल एक ही देवता की पूजा नहीं करनी चाहिए अपितु उनके लिए एक से अधिक देवताओं की पूजा अनुकूल रहती है।
3. पूजा में साधक को चाहिए कि सर्वप्रथम सूर्य, फिर गणपति, फिर दुर्गा, शिव और विष्णु की पूजा करें। यही क्रम उचित है।
4. गणपति पूजा या साधना प्रारम्भ करने के लिए चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ एवं फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष मान्य हैं।

5. सोमवार से गणपति साधना नहीं सम्पन्न करनी चाहिए। इसी प्रकार किसी भी पक्ष की तृतीया, नवमी और चतुर्दशी भी वर्जित है।
6. मत्स्य पुराण के अनुसार घर में गणपति की मूर्ति साधक के बारह अंगुल परिमाण की होनी चाहिए, इससे बड़ी त्याज्य है पर इससे छोटी ग्राह्य है।
7. गणपति आदि देवताओं का मन्दिर घर के ईशान कोण में होना चाहिए तथा देवताओं का मुख पश्चिम की तरफ रहे -
 (i) ऐशान्यं देवमन्दिरम्,
 (ii) देवानां हि मुखं कार्यं पश्चिमायं सदाबुधैः।
- (नारद पुराण)
8. गणपति का अभिषेक ताम्र पात्र पर रखे हुए जल से करना चाहिए।
9. लालवर्ण वाली सुरभित पुष्पों के साथ दूर्वाकुर (दूब) गणेश जी को अर्पित किये जाते हैं।
10. तुलसी का प्रयोग गणपति के लिए सर्वथा निषिद्ध है 'न तुलस्या गणधिपम्'।
11. गणपति के मन्दिर की मात्र एक परिक्रमा करनी चाहिए, इससे ज्यादा परिक्रमा दरिद्रता देने वाली मानी गई है।
12. गणपति को चढ़ाया हुआ नैवेद्य या प्रसाद सबसे पहले गणपति सेवकों को देना चाहिए इसके बाद ही साधक उस प्रसाद को ग्रहण करें। गणपति के पांच सेवकों के नाम 1. गणेश, 2. गालव, 3. गान्धी, 4. मंगल और 5. सुधाकर हैं।
13. गणपति उपनिषद में कहा गया है कि गणपति पूजन से पूर्व गुरु-पूजा आवश्यक है।
14. गणेश गायत्री मन्त्र इस प्रकार है -
 एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तद्वरे दन्ति प्रचोदयात्।

(गणपति उपनिषद्)

15. गणेश नाम का अर्थ इस प्रकार है -
 ज्ञानार्थवाचको गश्च णश्च निर्वाण वाचकः।
 तयोर्खेऽपरं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्॥
- अर्थात् 'ग' ज्ञानार्थ वाचक और 'ण' निर्वाण वाचक है। अतः गणेश नाम भौतिक सुख और मोक्ष-प्राप्ति के समान रूप में सहायक है।

साधनात्मक दृष्टि से विभिन्न कार्यों हेतु गणपति के अलग-

अलग स्वरूपों की साधना की जाती है, और इस सम्बन्ध में तत्त्व सार ग्रन्थ में लिखा है कि-

**यीतं स्मरेत् स्तम्भन कार्यं एवं वश्याय अरुणा मुखं
स्मरेत् तम् कृष्ण स्मरेन्मास्त्रण कर्मणीशमुच्चाटने धूमनिशं
स्मरेत् तम्॥ बहूकृष्णदिनिभं च कृष्टो स्मरेद् क्वार्थं
किल पुष्टिकार्ये। स्मरेद् व्यजार्थी हस्तिवर्णमितं मुक्तो च
शुक्लं मनुवित् स्मरेत् तम् एवं प्रकारेण गण त्रिकालं
ध्यायन्जप्यन् सिद्धिवृन्तो भवेत् सः।**

अर्थात् साधकों को चहिए कि वे स्तम्भन कार्य में गणेश जी के पीत कान्ति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वशीकरण आदि कार्यों में गणेश जी के अरुण कान्तिमय स्वरूप का चिन्तन अनुकूल रहता है। नास्त्रज कार्य में कृष्ण कान्ति का ध्यान फलदायक माना जाता है, इसी प्रकार उच्चाटन कार्य में धूम्र वर्ण वाले गणपति का स्मरण करना चहिए, आकर्षण कार्य में बधूक पुष्प के समान लाल वर्ण वाले गणपति का चिन्तन करना चहिए, बल एवं पुष्टि कार्य के लिए शान्त गणपति का ध्यान अनुकूल माना जाया है, धन-प्राप्ति के इच्छुक साधकों को हरित वर्ण वाले हनुमान गणपति का ध्यान करना चहिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए शुक्ल वर्ण वाले गणपति का ध्यान पूर्ण फलदायक माना जाया है।

शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधक नित्य गणपति के 12 नामों का स्मरण करता है, उन्हें भक्ति पूर्वक नमस्कार करता है, उसकी कामानाएं अवश्य पूर्ण होती हैं। गणपति के 12 नाम निम्न प्रकार से हैं -

1. सुमुखाय नमः, 2. एकदन्ताय नमः, 3. कपिलाय नमः,
4. गजकर्णकाय नमः, 5. लम्बोदराय नमः, 6. विकटाय नमः,
7. विघ्ननाशाय नमः, 8. विनायकाय नमः, 9. धूम्रकेतवे नमः,
10. गणाध्यक्षाय नमः, 11. भालचन्द्राय नमः, 12. गजाननाय नमः।

भगवान गणपति की साधना श्रेष्ठतम साधनाओं में मानी जाती है। महर्षि, विश्वामित्र, भगवत्पाद शंकराचार्य तथा गुरु गोरखनाथ ने इस साधना को जीवन के लिए पूर्ण सौभाग्यदायक प्रयोग माना है। मात्र इस साधना से जीवन में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जिसे हम अपना प्राप्तव्य मानते हैं। जो भी मन में अभीसिस हो, वह इस प्रयोग के द्वारा आसानी से पाया जा सकता है। वास्तव में यह प्रयोग अति महत्वपूर्ण तथा दिव्य है। जब आपसे लक्ष्मी रूठने लगी हो, आप का व्यापार या कारोबार बन्द होने लगे, रोगों से त्रस्त होकर जीवन से आप निराश होने लगे हों, या कर्ज के बोझ से दबते चले जा

रहे हों या जीवन के किसी भी क्षेत्र में असफल होने लगे हों तो आपके लिए यह प्रयोग राम बाण है। भगवान गणेश ऐसे ही विघ्नहरण करने वाले मंगलदायक देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं, उनके उपासक कभी भी निराश या असफल नहीं होते हैं।

गणेश जी का पूरा व्यक्तित्व जितना पारदर्शी है, उतना ही रहस्यमय है, इसीलिए यह प्रतीकमय है। लोकाचारों और व्यवहारों में लोकप्रिय देवता गणेशजी अपने विसर्जन से एक और संदेश दे रहे हैं। बदलाव व नवनिर्माण के लिए अपने ही सृजन का विसर्जन करना पड़ता है। परिवर्तन में प्रगति छिपी रहती है। निर्णय, नीतियों और परम्परा में परिवर्तन करना समझदारी है और गणेशजी सतत् इसके संकेत देते हैं।

महागणपति पूजन मूल-विधान

इस साधना के लिए प्राण प्रतिष्ठित ‘महागणपति यंत्र’, कुंकुम, जलपात्र, मौलि, यज्ञोपवीत, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, अबीर, गुलाल, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, श्री फल, मूंगे की माला एवं गणेश गुटिका आवश्यक है।

पूजन विधि ध्यान -

**ॐ गणनां त्वा गणपति (जू) हवामहे प्रियाणां त्वा
प्रियपति (जू) हवामहे**

**निधिनां त्वा निधिपति (जू) हवामहे वस्तो मम
आहमजानि गर्भथमा त्वम् जास्ति गर्भथम्।**

ॐ जं गणपते नमः ध्यानं। समर्पयामि।

आह्वान -

नागस्य नागहार त्वं गणनाथ चतुर्भुज।

भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशंकुश परश्वधैः।

आवाहयामि पूजार्थं सापल्यं च मम क्रतोः।

इहागत्य गृहाण त्वं पूजां याजं च रक्ष मे॥

ॐ गणपते नमः आवाहनं समर्पयामि।

(आह्वान के लिये पुष्प अर्पण करें)

आसन -

अनेक रत्न खरचितं मुक्तामणि विभूषितम्।

दिव्यसिंहासनं चारू गणेश प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

(आसन के लिए पुष्प समर्पित करें)

पादम् -

जौरी पुत्र नमस्तेऽस्तु दूर्वापिदमादि संयुक्त।

भक्त्या पादं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

अर्धर्थं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतः सह ।
कस्तु अर्थं नमोऽस्तु ॥
उ॒ं जं गणपतये नमः अर्धर्थं समर्पयामि ।

आचमनम् -

सर्वतीर्थं समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण शिवनन्दन ॥
उ॒ं जं गणपतये नमः आचमनीयम् समर्पयामि ।

स्नानम् -

जंगासरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव । तथा शान्तिं
कुरुष्व म ॥
उ॒ं जं गणपतये स्नानं समर्पयामि ।

पंचामृतं स्नानम् -

पयो दधि धृतं चैव मधुं च शक्तरा युतम् ।
पंचामृतं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
उ॒ं जं गणपतये पंचामृतं स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नानम् -

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।
उ॒ं जं गणपतये शुद्धोदकं स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रम् -

सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां परमेश्वर ।
उ॒ं जं गणपतये वस्त्रोपवस्त्रं स्नानं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम् -

राजतं ब्रहस्पत्रं च कांचनं चोत्तरीयकम् ।
गृहाण देव सर्वज्ञं गीर्वणिसुरं पूजितं ।
उ॒ं जं गणपतये यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

चन्दनम् -

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरं ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
उ॒ं जं गणपतये चन्दनं समर्पयामि ।

अक्षत -

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठं कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
उ॒ं जं गणपतये अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि -

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्या दीनि वै प्रभो ।

मयोपनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
उ॒ं जं गणपतये पुष्पाणि समर्पयामि ।

दूर्वा -

दूर्वाकुरान् सुहसितान् अमृतान् मंगलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥
उ॒ं जं गणपतये दूर्वाकुरान् समर्पयामि ।

सौभाग्य द्रव्याणि -

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितं ।
नानारा परिमल द्रव्यं गृहाण गजनारायक ॥
उ॒ं जं गणपतये सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि ।

धूप -

वनस्पति रसोदभूतः गन्धाढयः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।
उ॒ं जं गणपतये धूपम् आघ्रपयामि ।

दीप -

साज्यं च वर्तिसंयुक्त वहिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैतोक्य तिमिरापहा ॥
उ॒ं जं गणपतये दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य -

गणेश गायत्री बोलें -

उ॒ं एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।
तज्ज्वो दन्ति प्रचोदयात् ।
उ॒ं जं गणपतये नमः नैवेद्यं निवेदयामि ।

फल -

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावासि भवेज्जन्मनि जन्मनि ।
उ॒ं जं गणपतये नमः फलानि समर्पयामि ।

फिर ग्रास मुद्रा दिखाकर आचमन करावे -

उ॒ं प्राणाय स्वाहा, उ॒ं अपानाय स्वाहा, उ॒ं
व्यानाय स्वाहा, उ॒ं उदानाय स्वाहा, उ॒ं समानाय
स्वाहा, उ॒ं जं गणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि ।
ताम्बूल -

पूजीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युक्तम् ।
एताचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
उ॒ं जं गणपतये नमः मुखं शुद्धयर्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो ।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शांतिपुरुषव मे ।

नीराजन (आरती)-

ॐ दं (जुं) हविः प्रजननं ये अस्तु दशवीर (जुं)
सर्वर्गण (जुं) स्वस्तरये । आत्मसन्नि प्रजासन्नि पशुसन्नि
लोक सन्द्यभिसन्नि: अग्निः प्रजां बहुतां मे करोत्वद्वं
पर्योरेतो अस्मरासु धृत न तत्र सूर्यो भाति न तारकं
नैवा विद्यते, कुतो यमग्निः समेन भान्तम् अनुभाति
सर्वं तस्य भासा सर्व-मिदं विभाति ।

नीराजनं नीरजकं कपूरेण कृतं मया ।
गृहाण कर्त्तुणाराशे गणेश्वर नमोऽस्तुते ॥
ॐ गं गणपतये नमः नीराजनं समर्पयामि ।

जल आरती -

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (जुं) शान्तिः, पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधायः शान्ति । वनस्पतयः शान्ति:
विश्वदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं (जुं) शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेति ।

प्रदक्षिणा -

यानि कानि च पापनि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणाय पदे पदे ॥
ॐ गं गणपतये नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पाञ्जलि -

नाना सुगन्धि पुष्पाणि वथाकालोद् भवानि च
पुष्पांजलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।
ॐ गं गणपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि ।

इसके बाद साधक मूँगे की माला से निम्न मंत्र का 51
माला मंत्र जप करें । साधना-समाप्ति के बाद यंत्र और नारियल
को अपने पूजा स्थान में रख दें तथा गणेश गुटिका को अपने
पैसे वाले स्थान में रख दें । किसी विशेष कार्य में जाते समय
अपने साथ रखने से आपका कार्य पूर्ण होगा ।

मंत्र

“ ॐ गं गणपतये नमः ”

गणपति-साधना के इस क्रम को नित्य पूजन के क्रम में
सम्मिलित कर देना चाहिए और यह संभव नहीं हो तो महीने
में एक बार उपरोक्त विधिविधान सहित गणपति पूजन अवश्य
सम्पन्न करना चाहिए । इससे घर में सुख शांति का वातावरण
तथा लक्ष्मी का आगमन होता रहता है ।

साधना सामग्री - 300/-

★ संदेशगुरुदेव सदाशिव रवस्तुप

भागीरथ ने तपस्या कर गंगा को विवश
कर दिया कि वह हिमालय से उत्तर कर
भारत में प्रवाहित हो । राजा भागीरथ के
इसी प्रयास के कारण, तपस्या के कारण
गंगा को भागीरथी कहा गया । इस गंगा
के पवित्र और तीव्र बेग को भगवान शिव
ने ही अपनी जटाओं में धारण कर पूरे भारत
बर्ब को आप्लायित किया । जहां एक और
भगवान शिव पवित्र गंगा को धारण करने
वाले हैं, वहीं दूसरी ओर भगवान शिव
नीलकण्ठ महादेव भी कहलाये, जिन्होंने
समुद्र मंथन के पश्चात उत्पन्न विष को
अपने कण्ठ में धारण किया ।

★ गुरु का कार्य भी भगवान शिव के समान★
ही होता है । शिष्य के सामने हजारों-हजारों
दुःख हैं, और गुरु के समक्ष हजारों-हजारों
शिष्य हैं । इन सब के दुःख रूपी बिष को★
अपने भीतर धारण करना गुरु का कर्तव्य
है । अनादिकाल से ज्ञानरूपी सदगुरु यही★
तो कार्य करते आए हैं । ‘सम्भवामि युगे-
युगे’ का तात्पर्य यही है कि जब-जब संसार
में अज्ञान का अंधकार बढ़ेगा और ज्ञान
का सूर्य अख्त होने लगेगा तो सदगुरु किसी★
न किसी रूप में आकर संसार के अज्ञान
को दूर कर नवीन वातावरण, चैतन्यमय
वातावरण का निर्माण अवश्य ही करेंगे ।

इस शताब्दी का यह सौभाग्य है कि हमें
सदगुरुदेव परमहंस रवामी★
निस्तिलेश्वरानन्द जी जैसे महान सदगुरु
प्राप्त हुए, जिन्होंने अपने जीवन में केवल
और केवल ज्ञान का प्रकाश कैलाया, मंत्रों
का उद्धार किया, तंत्र की पुनर्स्थापना की
और जीवन में सिद्धाश्रम किस प्रकार★
स्थापित किया जाए इसका अद्भुत ज्ञान
पूरे संसार को दिया ।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★



अद्भुत गणेश विवेचन

गणपति प्रतीक

विभिन्न मनोकामनाएं और

गणपति साधनाएं

प्रस्तुत लेख में भगवान गणपति के व्यक्तित्व की विवेचन स्पष्ट करने का एक छोटा सा प्रयास है कि किस प्रकार भगवान गणपति के वाहन मूषक, उनकी सूंड, उनका बड़ा पेट, लम्बे कान, दांत का महत्व है। साथ ही उनका प्रिय भोजन मोदक कर्यों है, यह भी विवेचन किया गया है कि हाथ में पाश और परशु रखने वाले सदैव अभय मुद्राधारी रहते हैं।

मनुष्य अपने जीवन में विभिन्न मनोकामनाओं को पूर्ण करना चाहता है वह अपने जीवन में वाद-विवाद से मुक्त, शत्रु बाधा से मुक्त और निर्भय रहना चाहता है। साथ वह अपने घर में धन-धान्य तथा शक्ति प्राप्त करना चाहता है। इसके अतिरिक्त उसकी प्रमुख इच्छा यही रहती है कि उसके पास शत्रुओं को स्तम्भन करने की शक्ति हो, साथ ही दूसरों को आकर्षित एवं वशीभूत करने की क्षमता हो। इन तीनों विशेष कार्यों हेतु तीन गणपति साधनाएं प्रस्तुत हैं। जिन्हें साधक को अपनी कामना के अनुसार अवश्य सम्पन्न करना चाहिये।

गणेश व्यक्तित्व उत्तर प्रतीक

अनुठे सार्थक प्रतीक

भगवान गणेश का व्यक्तित्व बेहद आकर्षक है। उनका मस्तक हाथी का है और वाहन मूषक है। उनकी दो पल्तियां ऋद्धि और सिद्धि हैं। सभी गणों के स्वामी होने के कारण इनका नाम गणेश है। परम्परा में हर कार्य के प्रारंभ में इनका स्मरण विशेषताएं हैं कि उनकी पूजा 33 कोटि देवी-देवताओं में सर्वप्रथम होती है और इतना सम्मान मिलता है?

ऋग्वेद में लिखा है 'न ऋते त्वम क्रियते किं चनारे' अर्थात् हे गणेश जी! तुम्हारे बिना कोई भी कार्य प्रारंभ नहीं किया जाता है। गजानन को वैदिक देवता की उपाधि दी गई है। ॐ के उच्चारण से वेद पाठ प्रारंभ होता है। ॐ में गणेश की मूर्ति सदा स्थित रहती है। गणेशजी आदिदेव हैं। वैदिक ऋचाओं में उनका अस्तित्व हमेशा रहा है। गणेश पुराण में ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के द्वारा उनकी पूजा किए जाने का उल्लेख मिलता है। आइए, जानें कि उनके प्रतीकों का क्या महत्व है?

मूषक - भगवान गणेश की शारीरिक बनावट के मुकाबले उनका वाहन बहुत छोटा चूहा है। चूहे का काम किसी चीज़ को कुतर डालना है। वह चीर-फाड़ कर उसके अंग-प्रत्यंग हाथी का है और वाहन मूषक है। उनकी दो पल्तियां ऋद्धि और सिद्धि हैं। सभी गणों के स्वामी होने के कारण इनका नाम गणेश है। परम्परा में हर कार्य के प्रारंभ में इनका स्मरण मूषक भी तर्क-वितर्क में पीछे नहीं है। काट-छांट में उसके आवश्यक है। उन्हें विघ्नहर्ता कहते हैं। गणेशजी में क्या कोई सानी नहीं है। इसलिए उसके इन्हीं गुणों को देखकर उन्होंने उसे अपना वाहन चुना।

सूंड - गणेशजी की सूंड हमेशा हिलती-डुलती रहती है, जैसे उनके सचेत होने का संकेत है। उसके संचालन से दुःख दारिद्र्य समाप्त हो जाते हैं।

अनिष्टकारी शक्तियां डर कर भाग जाती हैं। यह सूंड बढ़े-बढ़े दिघालों को भयभीत करती है। वहीं देवताओं का मनोरंजन भी करती है। इस सूंड से गणेशजी ब्रह्माजी पर पानी एवं फूल बरसाते हैं। सूंड के दाईं और बाईं ओर होने का भी अपना महत्व है। ऐसी मान्यता है कि सुख-समृद्धि हेतु उनकी दृष्टि और मुँह सूंड वाली प्रतिमा की पूजा करनी चाहिए। वहीं श

को परास्त करने या ऐश्वर्य पाने के लिए बाईं ओर मुँडी सूँड हासिल कर सत्वगुणों का विस्तार करें तो हमारे जीवन में भी की पूजा करनी चाहिए।

लम्बोदर - गणेशजी का पेट बहुत बड़ा है। इसी कारण इनको लम्बोदर भी कहा जाता है। लम्बोदर होने का कारण यह है कि वे हर अच्छी और बुरी बात को पचा जाते हैं और किसी भी बात का निर्णय तुरंत और सूझबूझ के साथ लेते हैं। वे सम्पूर्ण वेदों के ज्ञाता हैं। संगीत और नृत्य आदि विभिन्न कलाओं के भी ज्ञाता हैं। ऐसा माना जाता है कि उनका पेट विभिन्न विद्याओं का कोष है।

लम्बे कान - श्री गणेश लम्बे कान वाले हैं, इसलिए उन्हें गजकर्ण भी कहा जाता है। लम्बे कान वाले भाग्यशाली होते हैं। लम्बे कानों का एक रहस्य यह भी है कि वह सबकी सुनते हैं और अपनी बुद्धि और विवेक से ही किसी कार्य का क्रियान्वयन करते हैं। बड़े कान चौकन्ने रहने का भी संकेत देते हैं।

मोदक - बड़े पेट वालों को मीठा वैसे भी पसंद होता है, इसलिए मोदक उन्हें प्रिय है, क्योंकि वह आनन्द का भी प्रतीक है वह ब्रह्मशक्ति का प्रतीक है क्योंकि मोदक बन जाने के बाद उसके भीतर क्या है, दिखाई नहीं देता। मोदक की गोल आकृति गोल और महाशून्य का प्रतीक है। शून्य से सब उत्पन्न होता है और शून्य में ही अंततः सब विलीन हो जाता है।

दांत - भगवान परशुराम से युद्ध में गणेश जी का एक दांत टूट गया था। टूटे दांत की लेखनी बनाकर उन्होंने महाभारत का ग्रंथ लिखा।

पाश - गणेशजी के हाथ में पाश है। यह राग, मोह और तमोगुण का प्रतीक माना जाता है। इसी पाश से वह पाप समूहों और सम्पूर्ण प्रारब्ध को आकर्षित कर अंकुश से इनका नाश कर देते हैं।

परशु - इसे गणेशजी अपने हाथ में धारण करते हैं। यह तेज धार का होता है, जो तर्कशास्त्र का प्रतीक है।

वरमुद्रा - गणपति प्रायः वरमुद्रा में ही दिखाई देते हैं। यह सत्वगुण का प्रतीक है। इसी से भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं।

इस प्रकार गणेश जी का सारा व्यक्तित्व निराला है। उनके आंतरिक गुण भी उतने ही अनूठे हैं जितना उनका बाहरी व्यक्तित्व। गणेशजी के सभी प्रतीक सिखाते हैं कि हम अपनी बुद्धि को जाग्रत रखें, अच्छी-बुरी बातों को पचाएं, पापों के शमन के लिए सद् तर्कों की धार रखें तथा तमोगुण पर विजय

हासिल कर सत्वगुणों का विस्तार करें तो हमारे जीवन में भी गणेश घटित होंगे।

विविध प्रभाकारी रूपों की साधना

इस अध्याय में आगे पाठकों के लिए कुछ विशेष गणपति साधनाएं दी जा रही हैं। अपनी कामना के अनुसार कार्य के अनुसार साधक को विवेचन कर साधना करनी चाहिए -

1. उच्छिष्ट गणपति प्रयोग

वाद विवाद, मुकदमा, लड़ाई, शत्रु-बाधा, भय-नाश, जुए में जीत इत्यादि कार्यों के लिए उच्छिष्ट गणपति की साधना सम्पन्न की जाती है।

विनियोग

उ३ अस्योच्छिष्ट गणपति मन्त्रस्य कंकोल त्रृष्णः
विराट् छन्दः उच्छिष्ट गणपति देवता सर्वभीष्टसिद्धये
जपे विनियोगः ।

इस प्रकार संकल्प लेकर चार भुजा वाले, रक्त वर्ण, तीन नेत्र, कमल दल पर विराजमान, दाहिने हाथ में पाश एवं दन्त धारण किये हुए, उन्मत्त मुद्रा स्थिर उच्छिष्ट गणपति का ध्यान करना चाहिए। इसके पश्चात् आठ मातृकाएं-ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा एवं लक्ष्मी। इनकी आठ दिशाओं में स्थापना कर पूजन करना चाहिए। पूजन हेतु उच्छिष्ट गणपति चित्र, उच्छिष्ट गणपति यन्त्र, अष्टमातृका प्रतीक की स्थापना कर विधिवत् पूजा होनी चाहिए। प्रसाद स्वरूप में लड्डू का अर्पण करना चाहिए।

तत्पश्चात् निम्न उच्छिष्ट गणपति मन्त्र का जप ग्यारह दिन तक करना चाहिए।

मन्त्र

॥ हर्म गं हस्तेपिशाचिलिङ्गे स्वाहा ॥

मन्त्र अनुष्ठान के पश्चात् साधक को हवन अवश्य करना चाहिए। हवन में धी, शहद, शक्कर तथा खील (लाजा) से वशीकरण क्रिया सम्पन्न होती है, पृष्ठ एवं सरसों के तेल का हवन करने से शत्रुओं का विद्रेषण होता है।

साधना सामग्री - 240/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. शक्ति विनायक गणपति अनुष्ठान

लक्ष्मी, धन, सुन्दर पत्नी प्राप्ति, शक्ति प्राप्ति, एवं कार्य सिद्धि हेतु, शक्ति विनायक गणपति की साधना करनी चाहिए।

विनियोग

उस्य शक्तिगणाधिप मन्त्रस्य भार्गव त्रृष्णः विराट्

छन्दः शक्तिगणयिपो देवता हीं शक्तिः ग्रीं बीजं ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।
सिद्धये विनियोगः।

अंगन्यास

ॐ भां हृदयाय नमः । ॐ ग्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ज्ञूं शिखायै वषट् । ॐ ग्रौं कवचाय हुं । ॐ ग्रौं नेत्र हुं । ॐ स्तम्भय स्तम्भय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ग्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यान

विषणांकुश वक्षसूत्रं च पाशं दधानं करैर्मोदिकं पुष्करेण ।
स्वपत्न्यायुतं हेमभूषाभराद्यं गणेशं समुद्दिनेशाभमीडे ॥

दाहिने हाथ में अंकुश एवं अक्षसूत्र तथा बाएं हाथों में
दन्त पद्मं पाश धारण किये हुए, सूंड में मोदक लिये हुए,
अपनी पत्नी के साथ सुवर्ण के आभूषणों से अलंकृत तथा
उदीयमान सूर्य जैसी आभा वाले भगवान गणेश जी की मैं
वन्दना करता हूं ।

सामग्री - शक्ति विनायक शंख, शक्ति विनायक यन्त्र ।

विधान

बुधवार के दिन प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर
अपने सामने शक्ति विनायक यन्त्र तथा गणपति स्वरूप शक्तित्व
शंख को पीला वस्त्र बिछा कर स्थापना करें। सर्वप्रथम सूर्य
पूजन कर यंत्र एवं शंख का पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् निम्न
मन्त्र का जप सम्पन्न करें। इस मन्त्र का सवा लाख जप करने
से ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है ।

मंत्र

॥ ॐ हीं ग्रीं हीं ॥

सवा लाख मन्त्र जप साधक अपने समय के अनुसार ग्यारह
अथवा इक्कीस दिन में सम्पन्न कर सकता है। इसके पश्चात्
हवन करना चाहिए; धी सहित अन्न को आहुति, तत्पश्चात्
केला तथा नारियल की आहुति सम्पन्न करने से साधक अन्न,
धन, धान्य एवं वशीकरण-शक्ति से सिद्ध होता है ।

साधना सामग्री - 270/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. हृद्रागणपति अनुष्ठान

जीवन में जिसके पास आकर्षण-शक्ति है, अपने शत्रुओं को
स्तम्भन करने की क्षमता है, वही व्यक्ति पूर्ण सफल रहता है,
हृद्रागणपति, गणपति साधना का सर्व श्रेष्ठ स्वरूप है ।

विनियोग

ॐ अस्य श्री हृद्रागणनायक मन्त्रस्य मदन त्रह्यः
अनुष्ठुप् छन्दः हृद्रागणनायको देवता यह सिद्धिविनायक हमें बताते हैं।

ॐ हुं जं ज्ञां हृदयाय नमः । हरिद्रागणपतये स्त्रिये
स्वाहा । वरवरद शिखायै वषट् । सर्वजनहृदयं कवच
ज्ञूं शिखायै वषट् । ॐ ग्रौं कवचाय हुं । ॐ ग्रौं नेत्र हुं । स्तम्भय स्तम्भय नेत्रत्रयाय वौषट् । स्वाहाऽरस्त्र
त्रयाय वौषट् । ॐ ग्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यान

पाशांकुशी मोदकमेकदन्तं करैर्दर्थानं कनकासनस्थम्
हरिद्रखण्डप्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांकुशं रात्रिगणेश मीडे ॥

अर्थात् दाहिने हाथों में अंकुश एवं मोदक तथा बाएं हाथ
पाश एवं दन्त धारण किये हुए, सोने के सिंहासन पर स्थित
हल्दी जैसी आभा वाले, तीन नेत्र वाले, पीत वस्त्र धारण करने
वाले हृद्रागणपति की वन्दना करता हूं ।

मंत्र

॥ ॐ हुं जं ज्ञां हृद्रागणपतये वरवरद
सर्वजनहृदयं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ॥

सामग्री: हृद्रागणपति, पीठ माला ।

जप संख्या: सवा लाख ।

साधना में दिनों की संख्या निश्चित नहीं है, लेकिन एक
बार संकल्प लेने के पश्चात् सवा लाख मंत्र जप अवश्य करने
चाहिए। इस साधना से अद्भुत आकर्षण शक्ति प्राप्त होती है।

साधना सामग्री - 330/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ये सभी साधनाएं उत्तम साधनाएं हैं और जो इन्हें सम्पन्न
करता है, उसके जीवन में कष्ट, संकट आ ही नहीं सकते।
गणपति अपने भक्तों पर निरन्तर कृपा-दृष्टि प्रदान करने वाले
सहज, सरल देव हैं।

गणेश जी का व्यक्तित्व संदेश देता है कि हमारे हर निर्णय
की गतिविधि में एक सभ्यता, नेकनीयत, प्रजातांत्रिक और
न्यायपूर्ण भाव होना चाहिए। आज के जीवन में जिन अप्रत्यक्ष
और सूक्ष्म कलाओं का महत्व है, वे हम गणेशजी से सीख
सकते हैं। हर कदम पर आज जिस सतत सावधानी और
रणनीतिक चिंतन की आवश्यकता है, गणेश जी उसी के प्रतीक
और दाता हैं। आज हम चारों ओर से जिस आक्रमण से घिरे
हैं, उसमें गणेश जी को साथ रखकर हम प्रलोभन, सम्मोहन,
धोखे और दूसरों की कुटिल योजनाओं से स्वयं को बचा
सकते हैं। अपनी नेक छवि बनाकर कार्य सिद्धि कैसे हो जाए,
यह सिद्धिविनायक हमें बताते हैं।

काल छन्दों ज्ञाना

ज्ञान अर्थात् समय

हमारे ऋचियों ने काल ज्ञान साधना के माध्यम से सिद्ध किया है कि मनुष्य अपनी गति से स्वतंत्र रूप से जीवन जी सकता है। जो समय को पहचान लेता है, सही समय, सही व्यक्ति का चुनाव कर, सही क्रिया करता है वही जीवन में सफल होता है। भृतर्हि ने अपने एक प्रसिद्ध श्लोक में कहा है काल अर्थात् समय तो उस व्यक्ति की भाँति है जिसके मालक पर आगे बढ़ते हैं, पीछे से पूरा गंजा है, यदि समय पर इसे लट्टे पकड़ा तो फिर यह ठाथ नहीं आता और मनुष्य के जीवन में पछताबा ही रहता है।

मुहूर्त, चौधिया, शुभ योग, रवि पुष्य, गुरु पुष्य सब काल की मृत्ता अवश्य हैं लेकिन मनुष्य को यह कालज्ञान अपने भीतर होना चाहिये। जिससे वह समय को पहचान कर कार्य कर सके। इसीलिए गुरु अपने शिष्य को 'काल-ज्ञान' दीक्षा प्रदान करते हैं। काल ज्ञान से ही जीवन की उम्मति है, आवश्य भी उनका साथ देता है जो काल ज्ञान को समझकर क्रिया करते हैं।

काल जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ समाया वर्णन की उम्मति है। काल अपनी अनवरत गति से चलता हुआ निस्पृह भाव से समस्त संसार की क्रियाविधि को देखता रहता है। वर्हीं काल ही मानव की गति का, सांसारिक जीवन का अन्त है, जो इसे नहीं पहचानता है या इसे अनदेखा करता है, वह स्वयं अपनी प्रगति में बाधक बनने लगता है।

काल को समझना एक अत्यंत दुरुहता का विषय है, काल को पकड़ना कठिन है, लेकिन असम्भव नहीं। काल तो अपने महत्व को हर क्षण दर्शाता है और जो इसके महत्व को नहीं समझता, वह जीवन की गति को नहीं समझ सकता है।

भगवान शिव का एक स्वरूप 'महाकाल' श्री है, जो काल नियंता है, जिसके द्वारा जीवन की गति...

काल को आबद्ध करना है, तो महाकाल वही सिद्ध करना ही होगा, तभी तो काल पर पूर्णतः नियंत्रण

स्थापित हो सकेगा।

काल के विशेष क्षण को पहचान कर काल को अपने अनुकूल बना कर ही मनुष्य द्वारा काल को अपने नियन्त्रण में करता है।

काल के महत्व को उद्भट विद्वान् 'दशश्रीव' ने भी स्वीकारा है, समझा है। इसके विषय में एक प्रसिद्ध प्रसंग है, कि जब रावण का अंत समय निकट आ गया, तो श्रीराम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी, कि वह रावण से जाकर काल के ज्ञान को प्राप्त करे।

लक्ष्मण ने राम की आज्ञा मानकर शिष्य भाव से जाकर रावण से प्रार्थना कर उस ज्ञान को पाने की इच्छा व्यक्त की, रावण ने लक्ष्मण को 'काल-ज्ञान' समझाया। रावण ने लक्ष्मण को सात पत्ते एक साथ रखने को कहा और बोला, कि जब मैं कहूँ तो एक तीर से इन सातों पत्तों को बींध देना और रावण ने उचित समय देखकर जब पत्तों को बिंधवाया तो पत्ते क्रम से स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि धातु में परिवर्तित होते गये तथा अंतिम पत्ता पूर्ववत् पत्ता ही रह गया।

रावण ने समझाया, कि लक्ष्मण! काल के सौंवें हिस्से में भी फर्क आ जाता है। अतः काल का प्रत्येक हिस्सा अपने आप में विशेष महत्व रखता है।

रावण ने पूर्णता के साथ लक्ष्मण को इसका ज्ञान दिया, किन्तु स्वयं पर उसे दुःख हुआ, कि वह काल का ज्ञाता होकर

‘तंत्र’ संसार का बड़ा ही दहस्यमय विचित्र एवं चमत्कारिक विषय है, जिसके माध्यम से जीवन को किस प्रकार से संचालित किया जाये, जीवन का मूल तत्व क्या है, भौतिक दृष्टि से जीवन के अनुकूल किस प्रकार से बनाया जाय, ज्ञात हो सकता है।

भी काल की गति को नहीं समझ पाया और स्वयं उसे ही काल का ग्रास बनना पड़ा।

इसका तो एक अति उत्तम उदाहरण ‘महाभारत’ में भी है, जब भीष्म पितामह युद्ध में बाणों से पूरी तरह से बिंध गये और रणभूमि में ही गिर गये, तो अर्जुन ने उनसे प्रार्थना की, हे पितामह! आपको तो इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त है, अतः आप अपनी इच्छा मृत्यु का वरण कर लीजिये, इतना अधिक कष्ट सहन मत करिये।

भीष्म पितामह ने उत्तर दिया - मैं उचित समय की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब उचित समय आयेगा तो मैं स्वयं ही प्राण विसर्जित कर दूँगा।

भीष्म ने महीनों तक बाणों की शय्या पर रहना ज्यादा उचित समझा तथा उचित समय आने पर अपने प्राण त्यागे। इससे यह सिद्ध होता है, कि उस काल में भी काल के अद्वितीय विद्वान थे, और वे काल के महत्व को जानते थे।

काल के महत्व को तो कोई भी अस्वीकार नहीं कर पाया, चाहे वह कितना ही बड़े से बड़ा ऋषि हो, योगी हो। सबने एकमत से इसे स्वीकारा है। फिर जब इतने उच्चकोटि के ऋषि-मुनि तक इसकी गति को नहीं समझ सके, तो साधारण मनुष्यों को तो इसे समझने में, इसकी गति को पहचानने में सहस्र वर्ष लग सकते हैं।

काल के प्रभाव को समझना और उसे अपने अनुकूल कर लेना अब भी सम्भव है, इस ‘काल बंधन प्रयोग’ से। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से व्यक्ति काल की गति को समझने लगता है तथा काल को पूर्णता के साथ बांधने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। जिसने काल की गति को थोड़ा-सा भी समझ लिया, वह अपने जीवन में सफल व्यक्तित्व बनता ही है।

काल का चक्र तो निरन्तर गतिशील रहता है, जिसमें आबद्ध होता है, प्रत्येक प्राणी। मानव जीवन की श्रेष्ठता यह है, कि वह काल को अपने अनुरूप बनाये, न कि काल जिस प्रकार से चलाये उसके अनुसार चले। काल के क्षण को पहचान कर ही व्यक्ति सफलता के उच्चतम सोपान पर पहुँच सकता है।

प्रत्येक कार्य को करने का एक समय निश्चित है और उसी प्रकार प्रत्येक साधना को करने का एक निश्चित काल होता है, जिस क्षण में सम्बन्धित वह दैवी कृपा प्राप्त होती ही है, जिससे साधक साधना में पूर्णता प्राप्त कर ही लेता है। जब काल स्वयं में अनेक विशेषताओं को समेटे हुए है, तो काल को आबद्ध करने से व्यक्ति स्वयं विविध विशेषताओं से युक्त हो जाता है।

काल ज्ञान, काल बंधन, काल निर्णय आने वाली भविष्य की घटनाओं को जानने की क्रिया के लिये, साधना के लिये किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है क्योंकि कालचक्र निरन्तर गतिशील है तो साधक काल की गति को समझने के लिए कभी भी साधना कर सकता है लेकिन शास्त्रों के अनुसार कृष्ण पक्ष की अष्टमी इस साधना के लिए उपयुक्त है।

साधना विधान

- ★ साधना में आवश्यक सामग्री है ‘महाकाल यंत्र’, ‘महाकाल गुटिका’ तथा ‘हकीक माला’।
- ★ यह एक दिवसीय रात्रिकालीन साधना है।
- ★ लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछायें तथा उस पर महाकाल यंत्र स्थापित करें।
- ★ यंत्र की दाईं ओर गुटिका स्थापित करें तथा यंत्र और गुटिका का संक्षिप्त पूजन करें।
- ★ धी का दीपक निरंतर जलते रहना चाहिए।
- ★ हाथ जोड़कर शिव के महाकाल स्वरूप का ध्यान करें।
- ★ हकीक माला से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ ॐ ह्रौं ह्रौं कालतत्त्वाद फट् ॥

- ★ प्रयोग समाप्त होने पर भी 21 दिनों तक नित्य एक माला रात्रि के समय धी का दीपक लगा कर मंत्र जप करें तथा गुटिका को धारण करके रखें।
- ★ 22 वे दिन माला, यंत्र और गुटिका को किसी नदी या नहर में प्रवाहित कर दें या किसी कुंए में डाल दें।

तंत्र का तात्पर्य है क्रिया

क्रिया ही जीवन का व्याप है

दम्पत्ति वक्त्र

स्वयं शिव ने कौशिक, कश्यप, भारद्वाज, अत्रि तथा गौतम इन पांच ऋषियों को आगम मंत्र से दीक्षित किया था और ये ही पांच ऋषि 'आदि शैव' नाम से प्रसिद्ध हुए। वैदिक भारत में ये पांच ऋषिगण ही तांत्रिक साधना के प्रथम प्रवर्तक व प्रचारक हुए

शास्त्रों में 'तंत्र' शब्द बहुअर्थों में प्रयुक्त हुआ है। साधारणतः भारतवर्ष के वैदिक व तांत्रिक सम्प्रदाय के आचार्यगण इसे तंत्र कहने से आगम, निगम, यामल आदि शास्त्र समझा जाता निर्विवाद रूप में ग्रहण कर कठोर साधना में लिस नहीं होते। था। बाद में रचित आगम शास्त्रों के संग्रह को तंत्र नाम से अभिहित किया गया।

शिव मुख से निःसृत 28 तंत्रों को 'मूल आगम' कहते हैं। शिव शक्ति पार्वती के मुख से निःसृत तंत्रों को 'निगम' कहते हैं।

शिव मुख निःसृत 28 तंत्र इस प्रकार हैं - 1. कामिक, 2. योगज, 3. चिन्तय, 4. कारण, 5. अजित, 6. दीप, 7. सूक्ष्म, 8. सहस्र, 9. अश्मत, 10. सुप्रभेद, 11. विजय, 12. निःश्वास, 13. स्वयम्भू, 14. अनल, 15. रौख, 16. वीर, 17. मुकुट, 18. जय, 19. चन्द्रसंहित, 20. मुख विम्ब, 21. प्रोद्गीत, 22. ललित, 23. सिद्ध, 24. संतान, 25. शाव्वेक्ति, 26. वातुल, 27. किरण, 28. पारमेश्वर।

इसी तरह 'निगम' में भी बहु मंत्रों का प्रयोग होता रहा है और इसी लिए आगम व निगम तंत्र रूपी मंत्रों को 'तांत्रिक मंत्र' कहते हैं।

'वैदिक मंत्र' में मंत्र शब्द का बहु प्रयोग होने पर भी 'तांत्रिक मंत्र' के अर्थ में उनका प्रयोग होता रहा। मंत्र शास्त्र का अर्थ तंत्र से ही लिया जाता है। तंत्र में प्रयुक्त बहुत से देव-देवियां वेद के ही देव-देवियों के अनुरूप हैं। नृसिंहतापनी, रामतापनी, नारायणोपनिषद, मैत्रायणी संहिता आदि देव-देवियों की उपासना के लिए आवश्यक हैं। यह उपासना वेदों की अन्याय उपासना से स्वतंत्र होने पर भी तांत्रिक उपासना के अनुरूप है। इस पर भी तांत्रिक उपासना के मूल सूत्र, वेद मूलक स्मृति नहीं हैं।

बहुत से प्राचीन विद्वानों ने तंत्र को श्रुति माना है और यदि किसी 'शिव' या 'महादेव' नामक मनुष्य ने रचा होता, तो

स्वयं शिव ने कौशिक, कश्यप, भारद्वाज, अत्रि तथा गौतम इसे दीक्षित किया था और ये ही पांच ऋषि 'आदि शैव' नाम से प्रसिद्ध हुए। वैदिक भारत में ये पांच ऋषिगण ही तांत्रिक साधना के प्रथम प्रवर्तक व प्रचारक हुए तथा बाद में जनसाधारण में वैदिक कर्म के प्रति आलस्य देखा गया, तब उन्होंने ही तांत्रिक साधना के विभिन्न पथों को दिखला कर उच्छृंखल मनुष्यों को सुश्रृंखल करने की चेष्टा की। उन्हीं की चेष्टा के फलस्वरूप तांत्रिक सम्प्रदाय का अभ्युदय हुआ। बाद में यही सम्प्रदाय शैव, शाक्त, सौर, गणपत्यादि सम्प्रदायों में विभक्त हुआ।

आयुर्वेद की औषधियों के सेवन से दुःसाध्य व्याधियां दूर होती हैं और उसी आयुर्वेद शास्त्र में अनेक प्रकार के मंत्रों व तंत्रों की प्रयोग-विधि देखी गई है, अतः मंत्र और आयुर्वेद की अलौकिक शक्ति का प्रभाव प्रत्यक्ष सिद्धि के रूप में प्रमाण स्वरूप स्वीकृत है। मंत्र की इस अलौकिक शक्ति की बहु कथा वेद, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि ग्रंथों में विभिन्न

आयुर्वेद की औषधियों के सेवन से दुःसाध्य व्याधियां दूर होती हैं और उसी आयुर्वेद शास्त्र में अनेक प्रकार के मंत्रों की प्रयोग-विधियां देखी गई हैं, अतः मंत्र और आयुर्वेद की अलौकिक शक्ति का प्रभाव प्रत्यक्ष सिद्धि के रूप में, प्रमाण प्रत्यक्ष सिद्धि के रूप में, प्रमाण स्वरूप स्वीकृत है। मंत्र की इस अलौकिक शक्ति की बहु कथा वेद, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि ग्रंथों में विभिन्न रूपों में वर्णित है।

कौनसा जूस कब पिएं

प्राकृतिक चिकित्सा में फल, शाक एवं सब्जियों का रस विभिन्न बीमारियों में औषधि के यप में प्रयोग किया जाता है। फल एवं सब्जियों के जूस में खनिज लवणों और विटामिनों की भरपूर मात्रा होती है, जो शरीर के रोग-रोधी तंत्र को मजबूत करते हैं। इसके अलावा इनमें एन्टी ऑक्सीडेंट्स भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

पीलिया: पीलिया के रोगी को पाइनेपल, गन्ना या बिजौरा का जूस फायदा पहुंचाता है यह मूव के जरिए पित्त को बाहर निकालता है, भूख वृद्धि करता है और शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है।

एनीमिया: रक्त अल्पता में सेव, पपीता, मौसमी तथा मिक्स जूस (धनिया + पालक + गाजर + टमाटर) उपयुक्त रहता है।

एसिडिटी: इसके निवारणार्थ संतरा, पपीता या टमाटर का जूस पीना चाहिए।

मलावरोध: इसमें पपीता, नीबू, और मिक्सड वेजीटेबल जूस (टमाटर + पालक + चुकंदर + गाजर) फायदेमंद रहता है।

नेत्रदोषः: रत्नैधी या दृष्टि अल्पता में गाजर, आम, पपीता और टमाटर का जूस पीना लाभकारी होता है।

आम बात और पेचिशः: बेल, केला और अमरुद का रस लेना चाहिए।

डायबिटीजः: करेला और जामुन का जूस लाभ पहुंचाता है।

ब्लड प्रेशरः: लौकी और टमाटर का जूस रक्त चाप नियमन करता है।

अजीर्ण व पेट दर्दः: इसमें पुदीना, अंगूर या बेल का जूस पीना लाभ करता है।

सर्वी-जुकाम श्वास-कासः: अदरक और अदूसा (वासा) का रस लेना लाभकारी होता है।

उर्ध्ववातः: नीबू, मौसमी, किन्नू, संतरा (सिद्रस फ्रट्स) का जूस उदर वात का निष्क्रमण करता है।

सिरदर्दः: विटामिन 'बी' की कमी से होने वाले सिरदर्द में केला और पपीता के जूस से आराम मिलता है।

थकान व कमजोरीः: मौसमी, अंगूर, सेव और संतरा के जूस से शरीर को तुरन्त ऊर्जा मिलती है।

रूपों में वर्णित हैं।

वेद विद्वेषी दार्शनिक बौद्धों की असाधारण प्रतिभा जब धीरे-धीरे कम होने लगी, तो जनसाधारण की उनमें अनास्था बढ़ने लगी, तब उसके ही एक सम्प्रदाय ने काष्ठ तथा पाषाण आदि से निर्मित प्रतिमाओं के माध्यम से जनसाधारण को आकर्षित करने की चेष्टा की। तंत्र कार्यों का प्रत्यक्ष फल देखकर बौद्धगण आत्म रक्षा के लिए मंत्र साधना में ब्रती हुए और इस तरह उन्होंने जो समस्त तंत्र रचनाएं की वे 'बौद्ध तंत्र' के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

मनुष्य की बुद्धि, मेधा और प्रतिभा की जब धीरे-धीरे दास होने लगी, तब श्रुति के भरोसे न रह 'संग्रह ग्रंथों' सृष्टि हुई। इन सभी संग्रह ग्रंथों में तांत्रिक सम्प्रदायों ने अपने-अपने सम्प्रदाय के दार्शनिक मत की भी व्याख्या कर डाली।

क्या मंत्र द्वारा सिद्धि प्राप्ति संभव है?

केवल मंत्र द्वारा सिद्धि-लाभ पतंजलि के योगदर्शन में भी वर्णित है -

'जन्मौषधि मंत्र तपः समाधिजा सिद्ध्यः'

(कैवल्यपाद, प्रथम सूत्र)

'स्वाध्यायादिष्टे देवता संप्रयोगः'

(साधनापद ४४ सूत्र)

इस सूत्र के भाष्य और मंत्र द्वारा इष्ट देवता के साक्षात्कार भी समर्थित हैं।

आज भी मंत्रसिद्ध योगी-संन्यासियों की अलौकिक शक्ति देख मनुष्य विस्मित व स्तंभित रह जाता है। प्राचीन ग्रंथों में प्राप्ति कारक मंत्र द्वारा सिद्धि-लाभ की घटनाएं वर्णित हैं।

आज तांत्रिक सम्प्रदाय लुप्तप्राय है और इसे अप्रामणिक भी कहा जाने लगा है, परन्तु तांत्रिक सम्प्रदाय लुप्त होने पर भी अभी ग्रंथ लुप्त नहीं हुए हैं।

सम्प्रदाय लुप्त होने पर ग्रंथ ही उस लुप्त सम्प्रदाय का पुनरुद्धार कर सकते हैं।

इस विवेचन यह स्पष्ट होता है कि तांत्रिक मंत्रों की रचना मूलरूप से शिव द्वारा उदृत हुई है, शैव शिष्यों भक्तों की धारणा यह थी कि तंत्र के द्वारा मनुष्य आत्म साक्षात्कार कर सकता है। साथ ही तंत्र द्वारा जीवन को उत्तम बनाया जा सकता है। तांत्रिक मंत्र आज भी उतने ही प्रभावकारी हैं यदि उचित रूप से उनकी साधना की जाय।

सार रूप में यह कह सकते हैं कि तंत्र जीवन का ही भाग है, विशुद्ध जीवन जीने की क्रिया है...

अस्मौष्ठ शिव कवच



वास्तविक पूजा तो भाव पूजा होती है, जब साधक प्रार्थना एवं द्यान करते हुए अपने इष्ट के साथ मानस रूप से एकाकार हो जाता है। साधक जब भी भावयुक्त प्रार्थना करता है तो उसका तत्काल प्रभाव उसे प्राप्त होता है क्योंकि मुँह से निकले शब्द बाह्य वायु मण्डल के साथ आन्तरिक मण्डल में भी गुंजरित होते हैं, जिससे नाड़ियों में, रक्त में एक विशेष प्रकार का स्पन्दन उत्पन्न होता है। यह स्पन्दन सुषुम्ना नाड़ी में प्रवाहित होता हुआ मूलाधार से सहस्रार तक पहुंचता है।

इस शिव कवच प्रारम्भ करने से पूर्व शिवलिंग का पूजन अवश्य कर लेना चाहिए। भगवान् शिव ने स्वयं भगवती को कहा है कि उनके सभी नाम वेदों में श्रेष्ठ, समस्त पापदोषों को दूर करने वाले हैं और यह कवच रक्षा कवच है, जिसका निरन्तर पाठ करने से आठ सिद्धियां प्राप्त होती हैं तथा मनुष्य भयमुक्त होकर इस संसार में शिव के समान विचरण करता है।

अस्मौष्ठ शिवकवचम्

उँनमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वाम्मकाय
सकलतत्वविहाराय सकलतोकै ककर्त्ते
सकलतोकै क भर्त्ते सकलतोकै कहर्त्ते

सदाशिव भगवान शंकर को मैं बारम्बार नमन करता हूं, जो समस्त ब्रह्माण्ड स्वरूप हैं, समस्त लोकों में विचरण करने वाले हैं, सभी लोकों के कर्ता, भर्ता तथा संहारकर्ता हैं।

सकलतोकै कगुरवे सकलतोकै कसादिणे

सकलनिगमगुह्याय

सकलवरप्रदाय सकलदुरितातिभंजनाय

सकलजगदभयंकराय सकलतोकै क शंकराय

शशांकशेखराय

जो सभी प्राणियों को चेतना देने वाले हैं, समस्त जीवों में जो दृष्टा रूप में विद्यमान हैं, जो सभी शास्त्रों में गुह्यीय तत्व के रूप में वर्णित हैं, सभी प्रकार के वरदान देने में समर्थ हैं, जो समस्त पीड़ाओं को दूर करने वाले हैं, समस्त संसार को अभ्यु प्रदान करने ताने हैं, जो

सर्वकल्याणकारी हैं, जिनका मस्तक प्रदेश चन्द्रमा से विभूषित है, ऐसे भगवान शंकर को मैं श्रद्धा पूर्वक नमन अर्पित करता हूं।

शाश्वतनिजाभासाय निर्जुणाय निरूपमाय
निराभासाय निरामयाय
निष्प्रपंचाय निष्कलंकाय निर्द्वन्द्वाय निस्संगाय
निर्मलाय निर्जमाय नित्यरूपविभवास

जो अपने शाश्वत स्वरूप में निमन रहते हैं, निर्जुण तथा समस्त उपमाओं से रहित, निरन्तर प्रकाशमय, रोग शोक से रहित, समस्त प्रपंचों से शून्य, कलंक रहित, सभी ढंढों से दूर, आसक्ति के बन्धन से रहित, परम शुद्ध रति, सभी दुःखों को दूर करने वाले तथा परम सौन्दर्य से विभूषित परम शिव भगवान शंकर को मैं नमन करता हूं।

निरूपमविभवाय निराधाराय
नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय
परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय

जो परम ऐश्वर्यवान हैं, जो समस्त आधार से शून्य हैं, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्द स्वरूप, अद्वितीय, परम शांत तथा प्रकाश स्वरूप हैं उन्हें मैं पूर्ण पूर्ण प्रणाम करता हूँ।

**जय जय महास्कृद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण
महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव**

हे महाखड़! आप तेजोमय स्वरूप हैं, कल्याण के अवतार हैं, दुःख रूपी दावग्नि को दूर करने वाले हैं, आप महाभैरव कालभैरव तथा कल्पान्त भैरव रूप हैं, आपकी सदैव जय हो।

**कपाल मात्ताधर खट् वांगखड् चर्मपाशं कु
शड मस्त शूलचापशाणगदाशक्ति भिन्दिपालतोमर
मूसलमुदग्यष्टि शपरशुपरिष्ठभुशुण्डी
शतधनीचक्र व्यावृथभषणकर**

हे प्रभु! अपने अनेक हाथों में कपाल माला धारण करने वाले खट्वांग तलवार, चर्म, पाश, अंकुश, डमरु, शिशूल, बाण, गदा, शक्ति, छुरी, तोमर, मूसल मुदगल पटिशा, फरसा, चक्र तथा अनेक अस्त्र शस्त्र धारण किये हुए हैं, ऐसे परम शिव भगवान शंकर को पूर्ण पूर्ण नमन करता हूँ।

**सहस्रमुख दण्डकरात
विकटाङ्गहासविस्फारितब्रह्माण्ड मण्डल
नार्जेन्द्रकुण्डल**

**नार्जेन्द्रहार नार्जेन्द्रवलय
नार्जेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक
विस्तपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन
विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल**

हे भगवन! आपके हजारों मुखों में, सहस्र मुखों में स्थित तीक्ष्ण ढंत से, भयावह स्वरूप वाले हैं, तीव्र अद्वास से जिनके मुख मण्डल में अनेक ब्रह्माण्ड दिखाई दें रहे हैं, सर्पों के कुण्डल पहने हुए, सर्पों के हार तथा आभूषण से विभूषित, हस्ती चर्म के वस्त्र पहने हुए, साधकों को मृत्यु से विजय प्रदान करने वाले, तीन नेत्र वाले, त्रिपुर नामक असुर का नाश करने वाले, विषम नेत्र के नाम से सुशोभित समस्त ब्रह्माण्ड के अधिपति ब्रह्माण्ड स्वरूप, बैल की सवारी करने वाले, विष पान से नीलकंठ बने हुए, सहस्र मुखों से शोभायमान भगवान महादेव मेरी रक्षा करें तथा तेजस्वी बनावें।

**महामृत्युभयपमृत्युभयं नाशय नाशय
रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय
चोरभयं मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय
शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि
खड़गेन छिन्धि छिन्धि खटवाङ्गेन विषोदय
विषोदय मूसलेन लिष्पेषय लिष्पेषय बाणैः
संताडय संताडय**

हे भगवान! महादेव आप महामृत्यु एवं अकाल मृत्यु भय का नाश कर दें, रोग भय को दूर करें, विष भय तथा सर्प दंश के भय को दूर करें, चोर भय से हमारी रक्षा करें, मेरे शत्रुओं का उच्चाटन करें, त्रिशूल से शत्रुओं को छेद डालें, कुल्हाड़ी से काट दें, तलवार से खंडित कर खट्वाग से घायल कर दें, मूसल से वूर्ण बना दें, बाणों से उनको भयभीत करके मार डालिये।

**रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विदावय विदावय
कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मरक्षसान संत्रासय
संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं
मामाश्वासयाश्वासय नरकभयानमामुद्ग्रादय
संजीवय संजीवय
क्षत्रृभ्यां मामाप्यायव्याप्यायव्य दुःखातुरं
मामानन्दयानन्दय शिवकचेन
मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते
नमस्ते नमस्ते।**

हे प्रभु! राक्षसों को डराइये, भूत पिशाचों को दूर भगाइये, कुशमाण्ड वेताल, मारीगण तथा ब्रह्म राक्षसों को सञ्जस्त्र कर दीजिये, मुझे अभय प्रदान कर दीजिये, भयभीत मुझाको, इनसे स्वस्थ कीजिये, नरक के भय से मेरा उद्धार कीजिये तथा संजीवन दान दीजिये, भूर्य तथा प्यास के कष्ट से मेरी रक्षा कीजिये कष्ट से मुझाको आनंद प्रदान कीजिये

इस शिव कवच से मुझे आच्छादित कीजिये। हे त्र्यम्बक! सदाशिव! सर्वशक्तिमान! आपको बारम्बार नमस्कार हो... नमस्कार हो... नमस्कार हो।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इस शिव कवच का नित्य प्रति पाठ करने से साधक के जीवन में निर्भयता आती है और शत्रुओं का निश्चित रूप से नाश होता है। यह शास्त्र वचन है जो कश्ची मिथ्या नहीं हो सकता।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्रियतमा अप्सरा माला

प्रियतमा अप्सरा एक ऐसी श्रेष्ठ अप्सरा है, जो कठोर हृदय को भी कोमल भावगाओं से ओत-प्रोत बमा देती है और वह व्यक्ति भी उस पर रीझ कर जीवन में आमदन से लाभोर हो जाता है और फिर वह अप्सरा प्रटाग करती है सुगन्धित द्रव्य, विविध आभ्यण तथा अपग्रे साधक की समस्याओं का समाधान।

इस अप्सरा को आप सिद्ध कर सकते हैं और सिद्ध होने पर वह अप्सरा केवल आपको ही टिखाई देगी, आपके आस-पास अन्य लोगों को कुछ भी अगुभव नहीं होगा। अप्सरा साधना से सम्पन्न साधक के मन में एक भवीग उत्साह व्याप्त हो जाता है, उसके व्यक्तित्व में सम्मोहन व्याप्त हो जाता है, जिससे लोग उससे मित्रता करने का प्रयास करने लगते हैं।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान—‘ज्ञानदान’

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि ‘मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूँ एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘प्रियतमा अप्सरा माला’ 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें’, आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘प्रियतमा अप्सरा माला’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क :- अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुर्धामं जोधपुरं

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य ढीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्धि चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के
लिए यह योजना प्रारंभ हुई है।
इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों
पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में
पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये
साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के
साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती हैं।
यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो
उसी दिन से साधनाओं में
सिद्धि का अनुभव भी होने
लगता है।

शनिवार, 11-07-09

शत्रु का तात्पर्य है वह प्रत्येक व्यक्ति, जो आपको बाधा पहुंचाने का प्रयास करे, वह प्रत्येक स्थिति जिसके कारण उन्नति रुकती हो, और इस स्थिति को मिटाने के लिए शत्रु हन्ता प्रयोग के समकक्ष कोई भी प्रयोग नहीं है। इस प्रभावशाली प्रयोग के एक महीने के भीतर-भीतर कुछ ऐसी घटनाएं घटित होती हैं जिसकी साधक कल्पना भी नहीं कर सकता, उसके शत्रु अपने-आप ही समाप्त हो जाते हैं। उन्नति और प्रगति मानव जीवन का आधारभूत तत्व है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में और अधिक उन्नत और आर्थिक रूप से अधिक सक्षम होना चाहता है परन्तु कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो उसकी उन्नति में बाधा पहुंचाने का काम करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को अपने मार्ग से हटाना अति आवश्यक होता है क्योंकि शत्रु द्वारा बार-बार बाधा पहुंचाने से व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जाता है और हमें तो अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। इसलिए शत्रु हन्ता प्रयोग प्रत्येक साधक को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

रविवार, 12-07-09

ब्रह्म बाधा
निवारण प्रयोग

यह ईश्वर का विधान है कि समस्त लाभ और हानि ग्रहों की प्रतिकूलता एवं अनुकूलता पर निर्भर है। कुछ भी हो परंतु दुष्प्रभावी ग्रहों के दुष्परिणाम भोगने ही पड़ते हैं। नक्षत्र पथ पर ग्रहों की वर्तमान गति भीषण विपत्तियों का संकेत देती है। इस दिन स्वयं परम पूज्य गुरुदेव ग्रह दोष निवारण प्रयोग सम्पन्न कराने जा रहे हैं। इस अवसर का लाभ उठाना निश्चय ही भाग्योदय कारक है। प्रत्येक साधक साधिका को यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

सोमवार, 13-07-09

द्रव्य ग्रासि गजलक्ष्मी प्रयोग

द्रव्य का तात्पर्य धन, लाभ, वृद्धि से है। धन की देवी है लक्ष्मी तथा इसके विभिन्न स्वरूपों में गजलक्ष्मी स्वरूप विशेष प्रभावदायक, फलदायक माना गया है, 'सौभाग्य कल्प लतिका' ग्रंथ के अनुसार यदि कार्यों में निरन्तर हानि हो रही हो, किसी को उधार दिया हुआ धन वापिस नहीं आ रहा हो, आर्थिक हानि ब्रस्त कर रही हो तो साधक को लक्ष्मी की पूर्ण कृपा के लिए "गजलक्ष्मी प्रयोग" अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

यह प्रयोग बहुत ही प्रभाव पूर्ण है। अगर इसे गुरु के सान्निध्य में सम्पन्न किया जाये तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि साधक को इसमें सफलता नहीं मिले। धन, सफलता, उन्नति, लाभ आदि व्यक्ति के भौतिक जीवन में नितांत आवश्यक हैं।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को क्रषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम पर हूंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी इर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रूखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 11-12-13 जुलाई 2009

किन्हीं पांच शक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $300 \times 5 = \text{Rs. } 1500/-$ जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखावाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही ग्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभावों, अधरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधन में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।

* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य के द्वारा दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निषुग्ता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है ...।

* दीक्षा में शाश्वत लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाता है। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांचे 9 बजे प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

मातंगी महाविद्या दीक्षा

आज के इस भशीनी युवा में डीवन यंत्रवत्, दूंठ और नीरस बनकर रह गया है। डीवन में सरसता, आगङ्क,

श्रीम-विलास, प्रैम, सुयोग्य पति-पत्नी प्राप्ति के लिए मातंगी दीक्षा अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। इसके अलावा साधक में वाक् सिद्धि के गुण भी आ जाते हैं। उसमें आशीर्वाद व श्राप दैनी की शक्ति आ जाती है। उसकी वाणी में भाद्युर्य और सम्मीहन व्याप्त हो जाता है और जब वह लोगों के बीच बौलता है, तो सुनानी वाटे उसकी बातों से भुव्य हो जाते हैं। इससे शारीरिक सौन्दर्य एवं कानित में वृद्धि होती है, रूप योग्यता में निखार आता है। इस दीक्षा के माध्यम से हृदय में आगङ्क रस का संचार होता है, उमंग, प्रैम और हास्य का संचार होता है, फलतः हजार कठिनाई और तगाव रहते हुए भी व्यक्ति प्रसङ्ग एवं आगङ्क से ओत-प्रीत बना रहता है।

सम्पर्क - मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, फोन-0291-2432209, 2433623 टेलीफ़ेक्स-0291-2432010

Any full moon night

Dakshinavarti Shankh Sadhana

Amazing conch shell

In the kingdom of the famous ruler Bhoja, there lived a very talented and great poet named Bharavi. Although there was no other contemporary litterateur who could challenge him and defeat him, Bharavi always felt defeated in life. And the reason was poverty. His talents and skills had brought him fame but not enough money to even feed his family.

One day he became so desperate and disheartened that he decided to finally put an end to his life. Mounting debt had turned his life into a virtual nightmare and he thought it was better to die once than to die each day, for the insults hurled at him by the moneylenders were worse than death. Having made up his mind he reached the bank of river Shipra that was in spate. He was just about to dive in when Yogi Shatanand happened to pass that way. Through his Yogic powers the Sadhu instantly knew the disturbed state of mind of the poet and he accosted him.

"What are you about to do my son?" he asked.

"O great one!" said Bharavi, "Poverty is the worst curse. I can no longer bear the abuses hurled at me by the money lenders and to see the sad, hungry faces of my children. It is better to die than to live thus."

"My son!" said the Yogi. "It is because of bad Karmas of past lives that you suffer thus. Till these Karmas are worked off you won't have any solace even though you die."

"O kind one! Is there no way out?"

The pain reflected in the voice of the poet seemed to move the heart of the Yogi and he said, "Fine! Come with me."

The ascetic led Bharavi to an old deserted temple and there he made him perform a very special Sadhana which not just wiped off his past bad Karmas but also made Bharavi rich and prosperous. And without doubt in just four months Bharavi's luck changed and he became as rich as he was famous. In a year he was more

prosperous than the king of Avanti, so much so that once even king Bhoja had to seek a loan from him in his time of need.

This very amazing Sadhana is being presented here for the good of the Sadhaks. For this powerful ritual one needs a special conch-shell. If one holds a conch shell with the pointed end towards oneself then one sees a slit along its length on the left side. But there are rare shells that have slits on the right side. These are called *Dakshinavarti Shankhs* and if Sadhanas are performed on such shells that have also been energised with special Mantras then one could ward off poverty from one's life forever.

Start the Sadhana on **any full moon night**. After 10 pm have a bath. Wear white clothes. Sit facing the South on a white mat. Cover a wooden seat with white cloth. In a copper plate place the *Dakshinavarti Shankh* and bathe it with milk and then pure water. In a separate plate then place the Shankh over rose flowers. With paste of vermillion write **Shreem** on the Shankh. Then offer vermillion, rice grains and a sweet made from milk on the Shankh chanting thus.

Om Hreem Shreem Kleem Shreedhar Karasthaay-payonidhi Jaataay Shree Dakshinaavart Shankhaay Hreem Shreem Kleem Shreekaraay Poojyaay Namah

Light a Ghee lamp. Offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra. Then with **white Hakeek rosary** chant eleven rounds of this Mantra.

Om Hreem Shreem Kleem Bloom Dakshin Mukhaay Shankhaanidhaye Saroodra-prabhaavay Shankhaay Namah

Do this daily for five days. After Sadhana drop the rosary in a river or pond. Tie the Shankh in a white cloth and place it in the place you keep your cash or valuables at home. This is a very rare Sadhana that if tried with full faith can do wonders for you.

Sadhana Articles - 480/-

Any Friday

Kaamdev Rati Sadhana

Be live, be beautiful!

Beauty and love form the essence of life and every one in the world wishes to experience these two treasures. These are two elements that make life worth it and keep a person feeling youthful and energetic even though one might have crossed one's prime of life.

Most people mistake beauty for physical looks and love for passion. One cannot do much about transforming the way Nature has presented an individual to the world. Even cosmetics do little to make one look much attractive. But there sure are Mantras that could instil a strange hypnotic magnetism in one's personality that everyone could be drawn towards one like a piece of iron pulled by a magnet. These are Mantras that make beauty spring from within and the transformation could be too subtle too be noticed by the naked eye but without doubt the effect is simply amazing.

I have known revered Sadgurudev to have gifted this ritual and Mantra to many desperate individuals, and each of them benefitted tremendously from it. One particular girl I remember was so disillusioned by her looks and by the way others ignored her that she even tried to commit suicide!

Luckily a disciple of Sadgurudev saved her and directed her to the holy feet of the Master who kindly gave her **Kamdev Rati Diksha** and initiated her into this divine Sadhana. The girl had passed through virtual hell and she put in all she had into the Sadhana. And when she returned three months after to meet Sadgurudev and thank him even I could not recognise her.

Fine, she had the same face and same complexion. But an out of the world divine radiance played on her features and her eyes seemed to pull one towards her and strike a conversation. And the way she smiled! Sadgurudev was very pleased by the devoted way in which she had performed the Sadhana. And then she broke the big news. Although she was not from a very rich family, recently a very wealthy businessman had

proposed to her on his own accord.

This very Sadhana is being revealed here with blessings of revered Sadgurudev. It works wonders for not just women but also men. And even those who feel old and listless due to the onslaught of worries and tensions can greatly benefit from it. This Sadhana infuses one with the divine energy of *Kaamdev* (the god of love and beauty) and *Rati* (his divine consort) and thus makes one feel youthful, beautiful, confident and energetic. And when there is beauty in one's thoughts, a sparkle in one's eyes, a song on one's lips and the spirit of youth in one's heart can love be far behind?

This Sadhana must be tried on a **Friday** – the day signifying planet Venus the star of love and beauty.

At night after 10 pm have a bath and wear yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North or East. Wear some natural fragrance on your clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it draw a Swastik with vermillion. On it place a picture of Sadgurudev. Worship Sadgurudev by offering vermillion, flowers and rice grains. Light a ghee lamp and incense. In a copper plate over a mound of rice grains place **Ratikaam Yantra (amulet)**.

Take water in the right palm and speak thus – *I (speak your name) am performing this Sadhana for a infusion of divinity and beauty in my life.* Let the water flow to the floor. Make two marks with vermillion on the Yantra. Offer rice grains and vermillion on the Yantra. Then chant one round of Guru Mantra.

Thereafter chant fifty one rounds of this Mantra with **Anang rosary**.

Om Kaam Ratyei Phat

After the Sadhana chant one round of Guru Mantra. Wear the Yantra-amulet around your neck for twenty one days. Daily chant the Mantra just eleven times in the morning after having a bath. After twenty one days drop the rosary and Yantra in a river or pond.

Sadhana Articles – 330/-

28 जून 2009

नवग्रह शांति साधना शिविर, मुम्बई

शिविर : रेलवे ट्रैलफेरयर हॉल, मध्य रेलवे वर्कशॉप,
अम्बेडकर रोड, ती.आई.पी. शोखम के सामने,
परेल (ईस्ट), मुम्बई

आयोजक: दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○ तुलसी महतो - 099671-63865 ○ जयश्री सोलंकी ○ पियुष एवं मानवेन्द्र - 093217-88314 ○ सक्सेना परिवार - 098600-84969 ○ देवेन्द्र एवं अल्का पंचाल ○ योगेश मिश्रा - 093217-91696 ○ राकेश तिवारी - 098203-44819 ○ बुद्धीराम पाण्डेय - 098190-00414 ○ अमरजीत - 099676-73807 ○ लोबो - 098207-28386 ○ राहुल पाण्डेय - 098925-56363 ○ नागसेन - 099306-82545 ○ संतलाल पाल - 096995-89647 ○ भासकरन परिवार - 099600-58894 ○ श्रीराम - 093226-01979 ○ अनिल कुमारे - 098199-27898 ○ अशोक सोनी ○ द्विवेदी जी - 098211-81782 ○ मनीर - 092246-28895 ○ अजय - 099204-05717 ○ सूर्यकांत गुप्ता - 098693-00041 ○ राहुल पाण्डेय - 099875-29516 ○ राजकुमार शर्मा - 098194-65823 ○ प्रीतम भारद्वाज - 099670-66996 ○ अनिता एवं हंसराज भारद्वाज - 093230-60793 ○ श्रेयस आर्ट - 099201-16856 ○ कवटे परिवार - 092241-47433 ○ जगदीश पारेख - 098228-52451 ○ मूलचंद भाई - 094222-79452 ○ नंदुभाई - 093200-90040 ○ अनिल भंगेरा - 098202-77411 ○ गंगा बेन एवं धनराज - 097631-94469 ○ दयालकर परिवार - 098694-78653 ○ सुशीला बेन - 098198-53393 ○ नीलम बेन - 099306-64579 ○ दीपक तिवारी - 098699-94455 ○ धनाजी - 092235-15135 ○ विश्वकर्मा - 098201-69998 ○ सुजीत - 092261-13660 ○ वृद्धावन - 098190-53360 ○ गुरमीत - 098196-97877 ○ हरेकृष्णा पांडा - 093220-47593 ○ हर्ष - 098203-69427 ○ वसंत पुरबिया - 098697-03251 ○ जितेन्द्र - 098600-63498 ○ विलास - 090229-87068 ○ आनन्द ○ यशवंत - 098698-02170 ○ पाठक परिवार - 094233-69984 ○ राजकुमार मिश्रा - 093205-84850 ○ आर.एस.उपाध्याय - 099696-75905 ○ शैलेश - 25100873 ○ अशोक - 098692-34397 ○ दिनेश - 93231-39860 ○ करिसा बेन ○ कलपेश तिवारी - 093224-37701 ○ हंसल सामिया - 098332-97691 ○ जैसवाल जी - 098927-72846 ○ जांगले जी - 093230-40675 ○ मंगला एवं रस.एम. चित्ते - 093724-39807 ○ घुरा परमार - 092240-11502 ○ अनिल चौधरी - 098927-75998 ○ धुब्र ○ सुधीर ○ भावेश लाल ○ चन्द्रकांत डॉडे ○ गुडा भाई ○ योगेन्द्र शर्मा ○ शैलेश पटेल ○ शिव पजन चौहान डॉ. शिंदे ○

6-7 जूलाई 2009

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

एवं साधना शिविर, बोकारो

शिविर : मजदूर मैदान, सेक्टर - 8,
बोकारो स्टील सिटी (झारखण्ड)

आयोजक: बोकारो: पी.एन.पांडेय - 094311-27345 ○ शुभेश्वर झा - 094307-59349 ○ डॉ. एस.के.बरियार - 090067-65118 ○ विजय कुमार झा - 094313-79234 ○ सिद्धेश्वर प्रसाद - 092045-27505 ○ एन.के. दुबे - 094317-40796 ○ ए.के. सिन्हा ○ बी.एन.के. श्यामला - 098351-85477 ○ एल.एन. मिश्र - 098353-55388 ○ डॉ.ए.के. सिंह - 094703-56313 ○ गोपाल ठाकुर - 094311-45601 ○ डॉ.आर.एन. प्रसाद ○ अनिल कुमार शर्मा ○ गेन्दू कपरदार ○ चिन्ता देवी ○ समरेन्द्र सिंह ○ इन्द्र कुमार झा ○ प्रो.श्रीकान्त सिन्हा ○ आर.पी.एस. देवगम ○ मुंशी मांझी ○ अरुण वर्मा ○ दिलीप कुमार ○ सूर्यकान्त झा ○ चन्द्रावती ○ आर.आर.आर सिन्हा ○ घनश्याम प्रसाद ○ डॉ.पी.एन. सिंह ○ डॉ. आर.पी. सिंह ○ डॉ. अमरेन्द्र सिंह ○ नागेन्द्र तिवारी ○ मनोज कुमार ○ आर.सी. प्रसाद ○ के.के. मिश्रा ○ रमेश पाठक ○ श्रीमती पुष्पलता देवी ○ श्रीमती संयुक्ता झा ○ जीतेन्द्र प्रसाद ○ उमा देवी ○ मनीष कुमार ○ आर. सोरेन ○ कपिलदेव प्रसाद ○ रामभूषण सिंह ○ मनोज मिश्रा ○ प्रभाष चंद्र चौबे ○ अरुण कुमार शर्मा ○ के.के. सिंह ○ चंदनकियारी: अमर बाऊरी - 099315-40657 ○ फुसरो: भगवान दास - 099341-17533 ○ अमृत दिगार - 099348-95768 ○ तुलसी सिंह - 099315-38161 ○ जय प्रकाश चौहान ○ सोहराई लोहार - 092043-86859 ○ तारा शंकर मांझी ○ अमरेन्द्र मिश्रा ○ सुरेश नोनिया ○ प्रह्लाद राम ○ धनेश्वर सिंह ○ चांद रत्न बाउरी ○ परदेशी लाल सिंह ○ शिव कुमार ○ राजन करमाली ○ महावीर ○ सौरभ कुमार सिन्हा ○ अनिल कुमार ○ पोबिर बाउरी ○ रंजन कुमार सिन्हा ○ सुन्दर लाल ○ नारायण बाउरी ○ बोकारो थर्मल: रमाकांत चौधरी - 094315-10289 ○ धनबाद: आर.के.राय - 094319-54268 ○ जे.पी.सिंह - 092347-94944 ○ अनुज सिन्हा - 098353-69456 ○ सुधीर सुमन - 098355-71588 ○ लेखो चौहान - 090067-60458 ○ आर.पी. चौरसिया - 094313-15463 ○ राजू साव - 098357-67850 ○ सुरेश प्रसाद साव - 094313-18453 ○ पी.आर.ताह - 094317-30663 ○ रामलग्न निषाद - 099312-33407 ○ सच्चिदानंद सिंह - 098355-27995 ○ मन्नू चौधरी - 093044-01567 ○ कैलाश शर्मा - 099340-72209 ○ राजेन्द्र सिंह - 094314-यंत्र चित्रान '84

53725 ○ यू.पी.सिंह - 094313-14337 ○ रांची: बालमुकुंद शाहदेव
- 093347-02197 ○ मोहन शर्मा - 094311-75892 ○ सत्य प्रकाश
सिंह - 093088-88888 ○ एम.के. गुप्ता - 093347-26278 ○ रणधीर
सिन्हा - 093347-26743 ○ विनोद कुमार सिन्हा - 094315-
79976 ○ राजेश वर्मा - 093080-97479 ○ संतोष साहु - 093347-
19698 ○ इन्द्रजीत - 097981-42521 ○ बुण्डू: अनुप चेल -
094313-60296 ○ भुवनेश्वर प्रमाणिक - 099341-77614 ○ दीपक
प्रजापति - 098355-43258 ○ तमाङः रमेश सिंह मुंडा - 097987-
00701 ○ जमशेदपुर: वाई.एन.मूर्ति - 093047-90006 ○ हरदीप
सिंह - 098351-32336 ○ अभय कुमार वर्मा - 098355-63288
○ रामबाबू सोनकर - 092345-02991 ○ चाईबासा: मोनाचन्द्र
सिंह समाया ○ डॉ. डुलमू बिरुली - 094313-80993 ○ जादूगोड़ा:
महावीर काउंटिया - 094313-74978 ○ गांधी कर्मकार ○ दीपक
कुमार सिन्हा ○ घाटशिला: नंदलाल भूसाल - 098359-12234
○ विजय नारायण पाठक - 098357-25703 ○ पाकुड़: हरिकिशोर
मंडल - 094312-75415 ○ विष्णुगढ़: डॉ. एस. एन. लाल -
094311-40675 ○ गोपाल सिंह मौर्य - 098355-42120 ○ धनेश्वर
निखिल ○ रामगढ़-तोपा: शोलोमणि कच्छप - 094313-95121
○ सकलदेव सिंह ○ अभय सिंह ○ झुमरी तिलैया: अशोक
सलूजा - 094385-25120 ○ केदला: डिले करमाली - 092046-
69288 ○ कलेश्वर मिस्री - 091994-33989 ○ डाल्टनगंजः श्रीमती
कांति पांडेय ○ श्रीमती गायत्री देवी ○ लोहरदगा: शिव प्रसाद
साहु - 094317-49301 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, चतरा/
कोडरमा/गुमला ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार बिहार, पटना
○ डॉ. बी.के.आर्य - 092348-88896 ○ रामचंद्र मिश्र - 094308-
90517 ○ मधु श्रीवास्तव - 093341-64335 ○ सिद्धाश्रम साधक
परिवार, दरभंगा/लौकहा/बेगूसराय/खण्डिया/नवादा/गया
○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, मुजफ्फरपुर/समस्तीपुर
○ आनन्द - 097988-47401 ○ अशोक कुमार - 099056-80589
○ रंजन - 092046-50211 ○ नवादा: बाढ़न विश्वकर्मा - 094300-
25917 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, पश्चिम बंगाल, हावड़ा
○ विजय शंकर दीक्षित - 033-26584003 ○ सत्यदेव पांडेय -
098311-46998 ○ आनन्द मिश्रा - 098311-94605 ○ न्यू बैरकपुरः
सपन दास - 090072-80758 ○ कांचरापाड़ा: कामेश्वर सिंह -
098311-90352 ○ जगदीश सिंह - 094320-11841 ○ संजीव कुमार
सिंह - 092346-79888 ○ संजय कुमार सिंह - 099346-82536
○ के.डी.मिश्र - 099335-32668 ○ खिरोद आचार्य - 099334-
60179 ○ सेम चन्द्र प्रधान - 097330-37813 ○ सिद्धाश्रम साधक
परिवार मिदनापुर (पूर्व) ○

A decorative horizontal border consisting of a repeating pattern of five-pointed stars and diamonds.

‘जन’ 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘85’

12 जूलाई 2009

शिव गौरी साधना शिविर, मल्हा

शिविर : जे.पी.आर्ट एण्ड साइंस कॉलेज, श्रीतला - 110049
के पीछे, ऐक्सीस बैंक के पास, रेलवे स्टेशन, मरुब
आयोजक: आर.सी.सिंह - 093762-15564 ○ हरेश जोशी -
098255-23924 ○ सेठवान साहनी - 098241-25625 ○ हमंत भट्ट
- 098795-19497 ○ ठाकुर काका - 02648-248049 ○ विजयनाथ
साहनी - 098980-32172 ○ प्रशांत भट्ट - 098241-01656
○ योगेन्द्र वालिया - 093289-82635 ○ हितेश शुक्ला - 02642-
227556 ○ कौशिक त्रिवेदी - 02642-231664 ○ राजेन्द्र चौहान -
098252-45277 ○ मुकेश चौहान - 098243-31692 ○ आर.के.दास
- 02642-225317 ○ देवेन व्यास - 02642-220127 ○ रमई मिस्त्री -
093774-12347 ○ पी.पी.सिन्हा - 094271-44283 ○ सतीश
चौहान - 098983-36659 ○ परेश पी. जोशी - 094274-14201
○ प्रकाश राजपुत - 098980-39582 ○ जितमेन साहनी - 093774-
13544 ○ गुरुचरण विश्वकर्मा ○ नरेन्द्र सिंह रेल्वे - 097277-
74125 ○ किशोर गौड - 098243-75499 ○ अनुप सिंह - 094268-
64866 ○ चेतान पटेल - 098254-29041 ○ राजेश धिंगरा -
02642-243531 ○

भाग्योदय साधना शिविर: यत्नमाला

शिविर : शिवाजी स्टेडियम, दारबहार, यवतमाल (विदर्भ), महाराष्ट्र
अकोला जंक्शन, वर्धा एवं नागपुर से दारबहार के लिये बस उपलब्ध है।
आयोजक: रविन्द्र जाधव - 094228-92996 ○ गजानन मांगुळकर
- 094234-33889 ○ लोखड़े साहब ○ संजय काळे - 098815-
98968 ○ कैलाश शेबे - 099601-55034 ○ विजय वानखडे
○ मुलचंद जी गुप्ता - 093714-52490 ○ बन्टी पिंगाने ○ पंकज
वानखडे ○ आर.के जाधव - 093726-21627 ○ किशोर पंजगाडे
- 093712-44689 ○ प्रभाकर माकडे ○ राजूभाऊ माटोळे
○ एस.एन.काळे - 094234-32748 ○ रविन्द्र ठाकरे ○ उमेश
बागल ○ दादाराव तिवलकर ○ किशोर ढाकुलकर - 093261-
44618 ○ उमेश गुल्हाने ○ सोमेश्वर पचबुद्धे ○ खानझोडे
○ चिरडे ○ मदावी ○ गणेश भोयर ○ सचिन गोरले ○ संदीप
खिवसरा ○ राजेश जाधव ○ विजय कुमार शिंदे ○ बबनराव
राऊत ○ डॉ. मदन पोटफोडे ○ डॉ. गुगलीया ○ खिलेश घेरवरा
○ अतुल वानखडे ○ शंकरराव राठोड ○ शाम फुसांडे ○ किशोर
लिखार ○ लिंगी: मोतीलाल जी शेरे ○ नेर: सचिन इंगळे -
094217-72781 ○ संजय भोयर - 094229-24005 ○ सुनील
सलामपुरे ○ स्वप्नील पाटणे ○ नितीन अतकरी ○ श्री राऊत

काका ○ विनोद कापसे - 094218-52897 ○ विजय राऊत - 094200-46733 ○ गणनन गोलहर - 098813-43821 ○ बालासाहेब जोलहे ○ डॉ. विजय लोखंडे ○ डॉ. धांदे (आसोला) ○ कालीदास मोने ○ दिनकर काटगळे ○ अनिल परोपटे ○ उघडे ○ विनोद चांदोरे ○ संजय चांदोरे ○ यवतमाळ: श्रीकांत चौधरी - 098227-28916 ○ विनायक निवल - 094229-62521 ○ शिवनारायण राऊत - 094229-21521 ○ राजेश मैदमवार - 097631-75061 ○ दिलीप माळकर - 093250-05733 ○ सुशिल नरोले - 099220-86262 ○ सतिश राऊत - 094209-16336 ○ नितीन गिरी ○ बाबुभाई अटारा ○ दिपक येंडे - 098500-15587 ○ गंजूभाऊ सोनकुसरे ○ डॉ. गिरीश जतकर ○ महेन्द्र महाजन ○ सुरेश लोंदे ○ सेनापती मोने - 098508-73099 ○ नंदकिशोर भागवत - 097633-42621 ○ नरेन्द्र उके - 098234-82366 ○ गोविंद उजवणे ○ शशिकांत चौधरी ○ बाला साहेब रोहणकर ○ राजाभाऊ राऊत ○ आनंद तोंडरे ○ हेमंत पाठक ○ बाबुसेठ चुवाणी ○ अर्जुनसिंग ○ श्याम भावीक - 098909-74586 ○ अरूण भावीक ○ मनोहर बारापात्रे ○ निशांत गौरकार ○ शेळकेभाऊ ○ राजू मडावी ○ विजूभाऊ गडेचा ○ प्रवीण गायकवाड ○ गणनन जाधव ○ अविनाश बोकडे ○ सलामे भाऊ ○ वसंता फुंदे ○ हरीश भाई विठ्लाणी ○ शिरभाते सर ○ राजेन्द्र कोंबे ○ अजमिरे गुरुजी ○ रमेशजी टाटमियॉ ○ अजय गावंडे ○ सुभाष कंचलवार ○ प्रभाकर मालोकार ○ रमाकांत सुलभेवार ○ गाडेकर ○ सुदाम भोयर ○ पुरुषोत्तम नारोतकर ○ रामभाऊ मिझापुरे ○ गणनन चनेकर ○ हरीभाऊ पत्रे ○ जनार्दन कोलहे ○ सौ. मनिषा पाटील ○ सौ. ज्योती चौधरी ○ सौ. प्रांजली मैदमवार ○ सौ. मंदा कट्यारमल ○ श्रीकांत सोनकुसरे ○ सुनिल टाले ○ मोहन सोनकुसरे - 098224-74585 ○ अरूण हांडे ○ हरीश राठोड ○ प्रकाश तिवारी ○ श्रीकांत फुके ○ दुर्गा यादव - 098509-10414 ○ ओम मिश्रा ○ राजकुमार राठी सर ○ हरीओम शर्मा ○ विनोद कोथळे ○ जयप्रकाश जयसिंगपुरे ○ शंकरराव मडवे ○ किशोर पाठक ○ एल.बी. यादव ○ संजय खडसन ○ कोळंबी: भगवान तडसे - 094236-64230 ○ राळेगांव: अतुल बोभाटे - 097668-92745 ○ अशोक भागवत ○ वाघ पटवारी ○ आर्णी: यंपत जाधव ○ ठाकरे भाऊ ○ नागपुर: किशोर सिंह बैस - 094233-59000 ○ राजेन्द्र सेंगर - 098230-19750 ○ मधुकर उरकुडे - 094228-08433 ○ राहुल वाघमारे ○ चंदनसिंह रोटेले ○ छत्रपालसिंह गौर ○ तुषार मरसकोल्हे ○ पदमाकर चुटे ○ गुणवंत गिरटकर ○ भंडारा: प्रशांत परसोडकर - 093727-62958 ○ कमलाकर साठवणे ○ देवेन्द्र काटखाये ○ अनंत पालनगुरकर ○ मनोज वालोकर ○ वरठी: सुशिल लाडपे - 097657-75595 ○ गोबरवाई: बंदु खोबागडे - 099222-78882 ○ तुमसर: श्रीनिवास नेरकुलवार - 094228-03697 ○ कन्हान: दिलीप बेलसरे - 093727-97518 ○ सुरेश गुरव ○ श्यामबाबु खंते ○ धावडे गुरुजी ○ भाऊराव ठाकरे ○ गोंदिया: चंदनलाल ठाकुर - 093255-65715 ○ रविन्द्र भोंगडे - 098229-49458 ○ के.एन.मोहाडीकर - 094228-34716 ○ आर.टी.पटले ○ बी.के.भगत ○ कमलाकर चौरागडे ○ हेमराज चिकलोंदे ○ प्रशांत डोये ○ संतोष गौर ○ तिरोडा: शुक्राचार्य ठाकरे - 094260-68930 ○ रिनाइल गुरुजी ○ श्रीकृष्ण मारबते ○ झेड. जी. पटले ○ रहांगडाले ○ ब्रह्मपुरी: अशोक मिसाळ ○ चन्द्रपुर: वेतन कोकास - 094221-14621 ○ पोहनकर ○ नागरकर ○ शैलेश जुरमुरे ○ कांचन राठोड - 098223-18821 ○ बल्लारशा: पुरण शुक्ला ○ महादेव सोनवणे - 099708-45672 ○ वरोरा: वर्भे - 093701-84636 ○ चिमुर: विजय सोनवणे - 099210-64220 ○ राजुरा: डॉ. महेन्द्र अवचार - 098235-59389 ○ भद्रावती: गणेश पेंदरे - 092261-73509 ○ वणी: महेश व्हांडे - 092261-76509 ○ योगेश झिलपे ○ गडचिरोली: प्रदीप चौधरी - 094234-23849 ○ अशोक लडके - 094221-50848 ○ नरेश सोरपे ○ अरविंद कोडापे ○ हर्षवर्धन ○ रामने सर ○ सेलू: जितेश देवतारे - 093700-76528 ○ प्रदीप पाठक - 099236-58999 ○ वर्धा: गणनन ठाकरे - 098602-69231 ○ अविनाश बुरांडे - 094226-37059 ○ अमरावती: सातीश भिवगडे - 093701-56631 ○ अरूण भातकुलवार ○ विलास दातीर ○ साहेबराव बान्ते ○ विश्वेश्वर ठाकरे ○ अँड मेहरे ○ सुधीर दातीर ○ देविदास उमप ○ परतवाढा: गणेश मवासे - 098225-74290 ○ राजेन्द्र राठोड ○ श्री चांडक ○ अकोला: ज्ञानेश्वर टापरे - 093269-10838 ○ भास्कर कापडे - 098234-30108 ○ दिनेश कोरे ○ रविन्द्र अवचार - 099211-38349 ○ घुग्घुस: वासुदेव ठाकरे - 094209-62749 ○ नरेश गिरी ○ सागर गौतम दुलसिंग राठोड ○ नरसिंह अकमवार ○ किनाके साहब ○ धामण गांव: गणनन देवढगले - 094216-12742 ○ मोहनप्रसाद गौतम - 096652-47169 ○ शेखर पाटील ○ नारायण कोहरे ○ मोहन मिश्रा ○ रितेश सिरसोबिया ○ संजय तिवारी ○ मुम्बई: शिवचरण शेरे ○ औरंगाबाद: व्ही.एस.जंगले - 098900-14101 ○ नांदेड: कुडमेथे ○ हिंगोली: रामेश्वर चव्हाण ○

19-20 सितम्बर 2009

आश्विन नवरात्रि साधना शिविर, चितरंजन

पड़ा, कृष्ण को मथुरा छोड़ कर द्वारिका भागना पड़ा और वे 'रण छोड़' कहलाये ... कौन बच सका है नवग्रहों के अनिष्ट प्रभाव से ...?

इन ग्रहों के प्रभाव से बाधाएं, मानसिक परेशानियां, कार्य में विलम्ब, असफलता, मानहानि, आर्थिक क्षति, बीमारी और कई प्रकार की समस्याएं नित्य पैदा होती रहती हैं। जब इस प्रकार की स्थिति देखें, तो यह जान लें, कि किसी न किसी ग्रह का प्रभाव आपको विपरीत फल दे रहा है।

मेरे अनुसार तो प्रत्येक ग्रह की चेतना और उसका प्रभाव आपके शरीर में व्याप्त होना चाहिए और उसके लिये आवश्यक है कि हम उन ग्रहों के बीच में एक सामंजस्य बिठा सकें, जिससे जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके।

आपके लिये नवग्रह-मुद्रिका आवश्यक:-

आपको जीवन में नवरस चाहिए, आपको अपने जीवन में प्रत्येक ग्रह के गुण चाहिए। आपको अपने जीवन में घर, परिवार, व्यापार, नौकरी तथा शरीर की अनुकूलता भी चाहिए। सबके लिये रत्न खरीदना संभव नहीं। इसके लिये सबसे श्रेष्ठ उपाय है कि आप 'मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त नवरत्न मुद्रिका' धारण करें, जिसमें सारे रत्न माणिक्य, मोती, मूँगा, पत्ता, गोमेद, लहसुनिया, पुखराज, हीरा और नीलम सब जड़े हुए हों। जब सब ग्रहों के रत्न से युक्त मुद्रिका होगी तो आकाशमण्डल स्थित ग्रह और आपके शरीर स्थित ग्रह अपने आप एक सामंजस्य स्थापित कर लेंगे।

आप अपने परिवार के मुखिया हैं, कमाने वाले हैं, घर के इञ्चार्ज हैं, आपसे आपके घर-परिवार को जाना जाता है न कि आपकी पत्नी या आपके बच्चों से आपको जाना जाता है। इसलिए यह नवरत्न मुद्रिका आपको धारण करनी आवश्यक है।

गुरुदेव अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि "एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाये" और "जो तू सींचे मूल को तो फल कहे न होय" अर्थात् एक को साधने से ही सब साधन सिद्ध हो जाते हैं और मूल अर्थात् जड़ को यदि हम पानी खाद देते हैं तो वृक्ष के फल लगते ही हैं। पत्तों को जल देने से वृक्ष पर फल नहीं लग सकते। हजार जगह भटकने से मन को शांति नहीं मिल सकती। हजार गुरु बनाने से शिष्यता नहीं आ सकती। हजार व्यक्तियों का कहना मानकर आप अपना कोई निर्णय नहीं ले सकते हैं, इससे तो आपका स्वयं का व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार बार-बार रत्न बदलने, से दस-दस अंगूठियाँ पहनने से ग्रह दोष शांत नहीं हो सकता, ग्रहों के गुण, तेजस्विता नहीं आ सकते। इसके लिये केवल एक ही उपाय है कि आप 'मंत्र-सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न मुद्रिका' धारण करें।

आवश्यकता इस बात की है कि यह नवरत्न मुद्रिका प्रत्येक ग्रह के मंत्रों से अभिमंत्रित हो, शिव-अभिषेक युक्त हो तथा शुद्ध मुहूर्त में निर्माण कर, शुद्ध मुहूर्त में ही धारण की जाए।

नवरत्न मुद्रिका एक मुद्रिका नहीं है, यह तो आपकी जन्म कुण्डली है, आपका जीवन चक्र है, जिसको धारण करते ही ग्रहों की गति और उनका प्रभाव आपके अनुकूल हो जाता है, और मेरा निश्चित विश्वास है कि आपको पहले दिन से ही अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन अनुभव होने लगेगा। आप नवरत्न मुद्रिका धारण करें और उसका प्रभाव नहीं हो, ऐसा हो ही नहीं सकता।

मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त
नवरत्न मुद्रिका - 600/-

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

सम्पर्क :-

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2009-11
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2009-11



माह : जुलाई में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान

गुरुधाम (जोधपुर)
11-12-13 जुलाई

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान

गुरुधाम (जोधपुर)
24-25-26 जुलाई

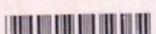
प्रेषक -

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342031 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 2433623,
टेलीफैक्स - 0291-2432010

वर्ष - 29

अंक - 06



Mem. No. 64525

June - 2009

Upto 01/2010

2011-2012
2011-2012

Post : KOLKATA
Distt : KOLKATA (W.B.)

Pin : 700054